Follow us on: @TheDailyPioneer facebook.com/dailypioneer instagram.com/dailypioneer/

RNI No. DLHIN/2012/483
वर्ष 13 । अंक 34
नई दिल्ली, शनिवार, 7 दिसम्बर 2024
पृष्ठ 12 ₹ मूल्य 3
नगर संस्करण

Established 1865

पायनियर

नई दिल्ली, लखनऊ और रायपुर से प्रकाशित

www.dailypioneer.com

आभ्यन्तर

राष्ट्रीय 9

महाराष्ट्र में हिंदुत्व मुद्दे की रही अहम भूमिका

नोटों की गड्डी पर रास में घमासान

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ संसद के शीतकालीन सत्र के दौरान सदन की कार्यवाही का संचालन करते हुए। पीटीआई

कांग्रेस नेता और जाने-माने वकील अभिषेक सिंघवी को राज्यसभा में आवंटित सीट के पास नोटों की गड्डी मिलने से शुक्रवार को उच्च सदन में हलचल मच गई। विपक्ष और सत्तारूढ़ गठबंधन के सांसदों ने आरोप-प्रत्यारोप लगाए और कांग्रेस सांसद ने 'सुरक्षा चूक' की जांच की मांग की। सभापति जगदीप धनखड़ ने परंपरा के अनुसार जांच के आदेश दिए हैं। धनखड़ ने कहा, 'यह मेरा कर्तव्य था और मैं सदन को सूचित करने के लिए बाध्य हूं। यह एक नियमित तोड़फोड़ विरोधी जांच है, जो होती है।' धनखड़ ने कहा कि उन्हें उम्मीद थी कि कोई नोटों का दावा करेगा, लेकिन अभी तक किसी ने ऐसा नहीं किया है। उन्होंने कहा, 'क्या यह अर्थव्यवस्था की स्थिति को दर्शाता है कि लोग इसे भूल सकते हैं।' सुबह आधिकारिक दस्तावेज टेबल पर रखे जाने के तुरंत बाद धनखड़ ने कहा कि सुरक्षा कर्मचारियों ने कांग्रेस सांसद अभिषेक मनु सिंघवी को आवंटित सीट से 500 रुपये के नोटों की गड्डी बरामद की है, जिसके बाद सदन में हंगामा हुआ।

विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि जांच पूरी होने से पहले सभापति को सदस्य का नाम नहीं लेना चाहिए था, जबकि सदन के नेता जेपी नड्डा ने विपक्ष पर आरोप लगाया कि वह 'कुछ मुद्दों' पर उत्सुकता दिखा रहा है जबकि अन्य मुद्दों को छुपाना चाहता है। सिंघवी ने शुक्रवार को राज्यसभा में अपनी सीट से नकदी की 'बरामदगी' को 'विचित्र' करार दिया और इसे 'सुरक्षा चूक' बताते हुए इसकी जांच की मांग की। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि सांसदों की अनुपस्थिति में सीटों पर 'गांजा' रखने से रोकने के लिए कांच के घेरे बनाए जाने चाहिए। धनखड़ ने बताया कि गुरुवार को तोड़फोड़ रोधी जांच के दौरान सिंघवी को आवंटित सीट संख्या 222 से नोट बरामद किए गए। राज्यसभा के पीठासीन अधिकारी ने बताया, 'कल सदन की कार्यवाही स्थगित होने के बाद, तेलंगाना राज्य से निर्वाचित अभिषेक मनु सिंघवी को आवंटित सीट संख्या 222 से सुरक्षा अधिकारियों ने नोटों की गड्डी बरामद की।' हंगामा शुरू होने पर संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने पूछा, 'नाम लिए जाने पर आपत्ति क्यों होनी चाहिए? सभापति ने सीट संख्या और उस पर बैठे सदस्य का नाम बताया है। इसमें क्या समस्या है?' उन्होंने कहा कि सदन में नोटों के बंडल ले जाना उचित नहीं है और उन्होंने इस बात पर सहमति जताई कि मामले की गंभीरता से जांच होनी चाहिए। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के अध्यक्ष और केंद्रीय मंत्री जेपी नड्डा के अनुसार, मामला गंभीर है और विपक्ष और सत्ता पक्ष को विभाजित नहीं होना चाहिए क्योंकि यह सदन की गरिमा पर हमला है। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि राज्यसभा को एक प्रस्ताव पारित करना चाहिए जिसमें कहा जाए कि सदन की कार्यवाही कभी भी बाधित नहीं होनी चाहिए। विपक्षी सदस्यों पर कटाक्ष करते हुए नड्डा ने कहा, 'कुछ मुद्दों पर आप उत्सुकता दिखाते हैं, जबकि आप अन्य मुद्दों को छिपाना चाहते हैं' जिस पर खड़गे ने आपत्ति जताते हुए कहा, 'श्री नड्डा यह क्यों कह रहे हैं कि हम मामले को दबाने की कोशिश कर रहे हैं... आप ऐसा करते हैं, हम ऐसा नहीं करते।'

विवाद बढ़ने पर सिंघवी ने इस घटना को विचित्र बताया और कहा कि इस तरह के मुद्दों पर राजनीति व्यवस्था को खराब तरीके से दिखाती है और 'हमारे स्तर को नीचा दिखाती है।' कांग्रेस सांसद ने स्पष्ट किया कि जब वह राज्यसभा जाते हैं तो उनके पास केवल एक 500 रुपये का नोट होता है। उन्होंने एक सोशल मीडिया पोस्ट में कहा, 'मैं कल दोपहर 12.57 बजे सदन के अंदर पहुंचा और सदन दोपहर 1 बजे उठा; फिर मैं अयोध्या रामी रेड्डी के साथ दोपहर 1.30 बजे तक कैंटीन में बैठा रहा, फिर मैं संसद से चला गया! मुझे लगता है कि संसद में हर सीट के लिए एक ग्लास केबिन होना चाहिए। इससे सांसद घर जाने से पहले अपनी सीट लॉक कर सकेंगे और कोई भी व्यक्ति 'गांजा' जैसी कोई चीज अपने (शेष पृष्ठ 9)

नौ को ढाका जाएंगे विदेश सचिव

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

विदेश सचिव विक्रम मिस्री। फाइल चित्र

भारत ने शुक्रवार को घोषणा की कि विदेश सचिव विक्रम मिस्री 9 दिसंबर को ढाका की यात्रा करेंगे। यह यात्रा पड़ोसी देश में हिंदुओं सहित अल्पसंख्यकों पर हमलों को लेकर बांग्लादेश के साथ संबंधों में तनाव के बीच हो रही है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा कि मिस्री विदेश कार्यालय परामर्श के ढांचे के तहत एक बैठक में भाग लेने के लिए बांग्लादेश की यात्रा कर रहे हैं। उन्होंने कहा, 'विदेश सचिव 9 दिसंबर को विदेश कार्यालय परामर्श के लिए बांग्लादेश की यात्रा पर जाने वाले हैं। यह बांग्लादेश पक्ष के साथ हमारी संरचित बातचीत का हिस्सा है।' जायसवाल अपने साप्ताहिक मीडिया ब्रीफिंग में एक सवाल का जवाब दे रहे थे। हिंदू भिक्षु चिन्मय कृष्ण दास की गिरफ्तारी पर प्रवक्ता ने कहा कि भारत मामले में निष्पक्ष, न्यायसंगत और पारदर्शी कानूनी प्रक्रिया की उम्मीद करता है। उन्होंने कहा, 'हमने इस मुद्दे पर पहले भी बात की है। हम अपनी उम्मीद दोहराना चाहेंगे कि बांग्लादेश में चल रही प्रासंगिक कानूनी प्रक्रियाओं को निष्पक्ष, न्यायसंगत और पारदर्शी तरीके से निष्पादित किया जाए, जिससे संबंधित व्यक्तियों के कानूनी अधिकारों का पूरा सम्मान सुनिश्चित हो सके।' मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार के सत्ता में आने के बाद भारत और बांग्लादेश के बीच संबंधों में तनाव आ गया। भारत उस देश में अल्पसंख्यकों, खासकर हिंदुओं पर हमलों को लेकर चिंता व्यक्त करता रहा है। पिछले कुछ महीनों में बांग्लादेश में हिंदू समुदाय सहित अल्पसंख्यकों पर हमलों की बाढ़ आ गई है। भारत ने पिछले सप्ताह कहा था कि बांग्लादेश की अंतरिम सरकार को सभी अल्पसंख्यकों की सुरक्षा की अपनी जिम्मेदारी निभानी चाहिए, क्योंकि उसने चरमपंथी बयानबाजी और हिंदुओं के खिलाफ हिंसा की बढ़ती घटनाओं पर गंभीर चिंता व्यक्त की थी। भारत ने यह भी उम्मीद जताई थी कि देशद्रोह के आरोप में गिरफ्तार दास से संबंधित मामले को न्यायोचित और निष्पक्ष तरीके से निपटाया जाएगा। दास को पिछले महीने देशद्रोह के एक मामले में ढाका के हजरत शाहजलाल अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर गिरफ्तार किया गया था।

भारत ने पाक से मसूद अजहर पर कार्रवाई की मांग की

नई दिल्ली। भारत ने यह खबर सामने आने के बाद शुक्रवार को पाकिस्तान से जैश-ए-मोहम्मद (जेईएम) के प्रमुख मसूद अजहर के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की कि उसने हाल ही में बहावलपुर में एक जनसभा में भाषण दिया था। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा कि यदि खबर सही है, तो इससे आतंकवादी गतिविधियों को रोकने में पाकिस्तान का दोहरा रवैया उजागर हो गया है। जायसवाल ने कहा, हम मांग करते हैं कि उसके (अजहर के) खिलाफ कड़ी कार्रवाई करके उसे न्याय के कटघरे में लाया जाए। उसके पाकिस्तान में होने की बात से इनकार किया जा रहा है। उन्होंने कहा, यदि खबरें सही हैं, तो इससे पाकिस्तान का दोहरा रवैया उजागर होता है। मसूद अजहर भारत पर सीमा पार से हुए आतंकी हमलों में शामिल रहा है और हम चाहते हैं कि उसके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाए। जायसवाल ने साप्ताहिक संवाददाता सम्मेलन में एक सवाल के जवाब में यह टिप्पणी की।

मप्र में 12वीं के छात्र ने प्रिंसिपल को मारी गोली

पीएनएस। भोपाल

एक चौंकाने वाली घटना में छतरपुर जिले के धमोरा शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के 55 वर्षीय प्रिंसिपल सुरेंद्र कुमार सक्सेना की बृहस्पतिवार को स्कूल परिसर में गोली मारकर हत्या कर दी गई। यह दुखद घटना स्कूल के बाथरूम में हुई, जहां 12वीं के एक छात्र ने सक्सेना के सिर में गोली मार दी। पुलिस के अनुसार, आरोपी ने अपराध करने से पहले सक्सेना का पीछा बाथरूम में किया। गोली की आवाज से पूरे स्कूल में अफरातफरी मच गई। जांच करने के लिए पहुंचे स्टाफ के सदस्यों ने सक्सेना को खून से लथपथ पाया। उन्हें घटनास्थल पर ही मृत घोषित कर दिया गया। छात्र कथित तौर पर सक्सेना के दोपहिया वाहन पर एक अन्य छात्र के साथ स्कूल से भाग गया। पुलिस अधीक्षक अगम जैन के अनुसार, दोनों छात्र ढिलापुर गांव के निवासी हैं और उनका अनुशासनहीनता का इतिहास रहा है। स्कूल के सीसीटीवी फुटेज में घटना के बाद दोनों छात्र भागते हुए दिखाई दे रहे हैं। हालांकि सटीक मकसद स्पष्ट नहीं है, लेकिन सक्सेना के परिवार को साजिश का संदेह है। उनके भाई राजेंद्र सक्सेना ने दावा किया, 'स्कूल में कुछ लोग उन पर अनावश्यक रूप से दबाव डाल रहे थे और गलत काम करने के लिए उन्हें परेशान कर रहे थे। यह हत्या एक सुनियोजित साजिश का हिस्सा लगती है।' पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है और आरोपी की सक्रिय रूप से तलाश कर रही है। घटना में इस्तेमाल की गई बंदूक की भी जांच की जा रही है, क्योंकि अधिकारी यह पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं कि छात्र ने इसे कैसे हासिल किया। इस हत्या ने स्थानीय समुदाय में सनसनी फैला दी है, जिससे स्कूलों में सुरक्षा और अनुशासन को लेकर गंभीर चिंताएं पैदा हो गई हैं। अभिभावकों और निवासियों ने ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए सख्त कदम उठाने की मांग की है, साथ ही शैक्षणिक परिसर में सुरक्षा बढ़ाने की जरूरत पर जोर दिया है। सक्सेना, जो करीब पांच साल तक स्कूल के प्रिंसिपल रहे थे, (शेष पृष्ठ 9)

दिल्ली मेट्रो फेज चार के रिठाला कुंडली कॉरिडोर को कैबिनेट की मंजूरी

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने शुक्रवार को दिल्ली मेट्रो के चौथे चरण की परियोजना के 26.463 किलोमीटर लंबे रिठाला-कुंडली कॉरिडोर को मंजूरी दे दी, जिससे राष्ट्रीय राजधानी और पड़ोसी हरियाणा के बीच संपर्क और बेहतर होगा। इस पूरे खंड में 21 स्टेशन होंगे, जो सभी एलिवेटेड होंगे। एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए, केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि परियोजना को मंजूरी मिलने की तारीख से चार साल में पूरा किया जाना है। यह लाइन चालू शहीद स्थल (नया बस अड्डा)-रिठाला (रेड लाइन) कॉरिडोर का विस्तार होगी और इससे दिल्ली के उत्तर-पश्चिमी इलाकों जैसे नरेला, बवाना और रोहिणी के कुछ हिस्सों में संपर्क बढ़ेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट बैठक में परियोजना को पूरा करने के लिए 6230 करोड़ रुपये आवंटित किए गए। दिल्ली मेट्रो की नई परियोजना का विवरण देते हुए बयान में कहा गया है, 'परियोजना की पूर्ण लागत 6,230 करोड़ रुपये है और इसे दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (डीएमआरसी) द्वारा भारत सरकार (जीओआई) और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ल सरकार (जीएनसीटीडी) के मौजूदा 50.50 विशेष प्रयोजन वाहन (एसपीवी) के तहत चार वर्षों में क्रियान्वित किया जाना है।' यह लाइन वर्तमान में परिचालित शहीद स्थल (नया बस अड्डा) - रिठाला (रेड लाइन) कॉरिडोर का विस्तार होगी और इससे राष्ट्रीय राजधानी के उत्तर पश्चिमी हिस्सों जैसे नरेला, बवाना, रोहिणी के कुछ हिस्सों आदि में कनेक्टिविटी को बढ़ावा मिलेगा। इस पूरे खंड में 21 स्टेशन शामिल होंगे। इस कॉरिडोर के सभी स्टेशन एलिवेटेड होंगे। पूरा होने के बाद, रिठाला - नरेला - नाथूपुर कॉरिडोर उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद में शहीद स्थल नया बस अड्डा स्टेशन को दिल्ली के माध्यम से (शेष पृष्ठ 9)

उत्तर प्रदेश के कन्नौज जिले में आगरा-लखनऊ एक्सप्रेसवे पर एक डबल डेकर बस और टैंकर के बीच टक्कर के बाद बचाव कार्य करते राहतकर्मी।

यूपी में विभिन्न सड़क हादसों में 25 लोगों ने गंवाई जान

बिस्वजीत बनर्जी। लखनऊ

उत्तर प्रदेश में बृहस्पतिवार रात और शुक्रवार को हुए सड़क हादसों में 25 लोगों की मौत हो गई और कई अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। शादी समारोह, तीर्थयात्रियों और ओवरलोड वाहनों से जुड़ी दुर्घटनाओं के लिए ओवरस्पीडिंग, चालक की थकान और शराब पीने को जिम्मेदार ठहराया गया, जिससे सड़क सुरक्षा में गंभीर खामियां उजागर हुईं। सबसे गंभीर घटना कन्नौज में आगरा-लखनऊ एक्सप्रेसवे पर हुई, जहां लखनऊ से दिल्ली जा रही एक स्लीपर बस कथित तौर पर चालक के सो जाने के बाद पलट गई। बस 140 किलोमीटर के पास पलटने से पहले बीच में एक पानी के टैंकर से टकरा गई।

आठ यात्रियों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि 40 से अधिक अन्य घायल हो गए। स्थानीय लोगों और बचाव दल ने अंदर फंसे लोगों को निकालने के लिए खिड़कियां तोड़ दीं। घायलों को सैफई, तिर्वा और सौरिख के अस्पतालों में ले जाया गया। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि घटना के बाद यात्रियों द्वारा मदद के लिए चिल्लाने के कारण अफरा-तफरी मच गई। पीलीभीत में एक तेज रफ्तार अर्टिगा कार की टक्कर में छह लोगों की मौत हो गई। शादी से उत्तराखंड के खटीमा लौट रहे 11 यात्रियों को लेकर जा रही यह कार पीलीभीत-टनकपुर हाईवे पर न्यूरिया के पास नियंत्रण खो बैठी और पेड़ से टकराकर खाई में पलट गई। कार के क्षतिग्रस्त होने के कारण बचावकर्मियों को पीड़ितों को निकालने में काफी (शेष पृष्ठ 9)

रोहिंग्याओं पर जम्मू-कश्मीर प्रशासन सख्त

मोहित कंधारी। जम्मू

म्यांमार से आए अवैध अप्रवासियों (रोहिंग्या शरणार्थियों) को बड़ी संख्या में अपने खाली प्लॉट किराए पर देने और उन्हें रहने के लिए जगह देने वाले मकान मालिकों के खिलाफ़ एक नया अभियान शुरू करते हुए जम्मू-कश्मीर प्रशासन ने अब अवैध रूप से रह रहे लोगों को जल्द से जल्द बेदखल करने के लिए बिजली और पानी की आपूर्ति लाइनों को काटने का फैसला किया है। इन प्लॉट पर बने अस्थायी ढांचों में रहने वाले रोहिंग्याओं के कम से कम 400 परिवार हाल ही में आए इस आदेश से प्रभावित हुए हैं। इसकी पुष्टि करते हुए एक रोहिंग्या अप्रवासी ने पायनियर को बताया कि 'पिछले दो दिनों से हम जम्मू के नरवाल बाला और सुंजवान इलाके में बिजली और पानी की आपूर्ति बाधित होने के कारण बहुत कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं। मकान मालिक ने हमें जल्द से जल्द प्लॉट खाली करने की अंतिम चेतावनी दी है।'

आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि जिला प्रशासन ने उन सभी मकान मालिकों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने का फैसला किया है, जिन्होंने इन अवैध प्रवासियों को अपने भूखंडों पर पनाह दी है। गृह विभाग के नवीनतम आकलन के अनुसार, 6000 से अधिक रोहिंग्या जम्मू जिले में विभिन्न स्थानों पर डेरा डाले हुए हैं और कई अन्य अवैध प्रवासी सांबा, कठुआ, डोडा, किश्तवाड़, राजौरी, पुंछ के अन्य जिला मुख्यालयों में भी चले गए हैं। गृह विभाग के निर्देश पर, जम्मू-कश्मीर पुलिस खुफिया एजेंसियों के साथ मिलकर जम्मू क्षेत्र में रोहिंग्याओं की अवैध बस्तियों का नए सिरे से ऑडिट कर रही है। पिछले हफ्ते, जम्मू-कश्मीर पुलिस ने उन मकान मालिकों के खिलाफ मामले दर्ज किए, जिन्होंने अपने संबंधित रिकॉर्ड जमा किए बिना और उचित सत्यापन पूरा किए बिना अपनी संपत्ति किराए पर दी है। सख्त कदम का उद्देश्य रोहिंग्या शरणार्थियों की अवैध आमद को रोकना और सार्वजनिक सुरक्षा सुनिश्चित करना था। चल रही प्रक्रिया में, जम्मू पुलिस ने कई मामलों की पहचान की है और इसी तरह उन मकान मालिकों के खिलाफ मामले दर्ज किए हैं जिन्होंने जानबूझकर या अनजाने में अपनी संपत्ति रोहिंग्या शरणार्थियों को किराए पर दे दी है, जो बिना किसी दस्तावेज के हैं और संभावित सुरक्षा खतरा पैदा करते हैं। पुलिस ने यह कार्रवाई जम्मू के जिला आयुक्त के कार्यालय द्वारा जिले के सभी संपत्ति मालिकों के लिए किरायेदारों का पुलिस सत्यापन अनिवार्य करने के आदेश के बाद की है।

पुलिस प्रवक्ता के अनुसार, जम्मू-कश्मीर पुलिस ने अब तक फरमान अली पुत्र गुलाम मोहम्मद, निवासी भवानी नगर, तालाब तिल्लो जम्मू; और आजम मलिक पुत्र मसूद मलिक, निवासी अष्टी मोहल्ला, बटमालो, श्रीनगर के खिलाफ पुलिस स्टेशन नोवाबाद में बीएनएस की धारा 223 के तहत एफआईआर 182/2024 और एफआईआर 184/2024 दर्ज की है। इसके अलावा, तीन मामले, एफआईआर 296/2024, एफआईआर 297/2024 और एफआईआर 298/2024, सभी बीएनएस की धारा (शेष पृष्ठ 9)

उड़ानों को फर्जी धमकी: एनआईए को सौंपे जाएंगे 16 मामले

पीटीआई। नई दिल्ली

दिल्ली से संचालित होने वाली विभिन्न एयरलाइनों की उड़ानों को धमकी देने के संबंध में दर्ज कम से कम 16 मामले राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) को सौंपे जाने की संभावना है, आधिकारिक सूत्रों ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि पता चला है कि दिल्ली पुलिस ने शहर सरकार के गृह विभाग को पत्र लिखकर इन मामलों को एनआईए को सौंपने के लिए कहा है, उन्होंने कहा कि इसे अंतिम मंजूरी के लिए केंद्रीय गृह मंत्रालय को भेजा जाएगा। एक आधिकारिक सूत्र ने कहा, 'यह मामला राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ा था और इसका अंतरराष्ट्रीय प्रभाव है। ये सभी 16 मामले नागरिक उड्डयन की सुरक्षा के खिलाफ गैरकानूनी कृत्यों के दमन (एसयूए एससीए) अधिनियम के तहत बीएनएस धाराओं के साथ दर्ज किए गए थे और इनकी गहन जांच की जरूरत थी।'

अक्टूबर के आखिरी दो हफ्तों में, 510 से अधिक घरेलू और अंतरराष्ट्रीय उड़ानों को बम की धमकियां मिलीं, जो बाद में फर्जी निकलीं, जिससे देश भर में एयरलाइनों के लिए बड़ा परिचालन और वित्तीय संकट पैदा हो गया। ज्यादातर धमकियाँ सोशल मीडिया के ज़रिए दी गईं। पुलिस सूत्रों ने बताया कि दिल्ली से चलने वाली 150 से ज़्यादा घरेलू या अंतरराष्ट्रीय उड़ानों को मिली धमकियों के जवाब में 16 मामले दर्ज किए गए। पहला मामला 16 अक्टूबर को दर्ज किया गया था, जब बेंगलुरु जाने वाली अकासा एयर की फ्लाइट को निशाना बनाकर एक्स के ज़रिए बम की धमकी मिली थी। उन्होंने बताया कि 180 से ज़्यादा यात्रियों को ले जा रहे इस विमान को राष्ट्रीय राजधानी वापस लौटने पर मज़बूर होना पड़ा।

इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा पुलिस ने साइबर सेल, आईएफएसओ के साथ मिलकर मामले की जांच की, लेकिन अभी तक उन्हें किसी भी मामले में कोई सुराग नहीं मिला है। एक अन्य आधिकारिक सूत्र ने बताया, 'धमकी भरे संदेश वीपीएन (वर्चुअल प्राइवेट नेटवर्क) के जरिए भेजे गए थे, जिसके कारण एजेंसियां इसका सटीक डोमेन या सर्वर नहीं पा सकी हैं। कुछ मामलों में, (शेष पृष्ठ 9)

आईएनएस तुशील का नौ दिसंबर को होगा कमीशन

टीएन रघुनाथ। मुंबई

समुद्र का नया प्रहरी। फोटो सौजन्यः भारतीय नौसेना

भारतीय नौसेना अपने नवीनतम मल्टी-रोल स्टील्थ गाइडेड मिसाइल फ्रिगेट आईएनएस तुशील को 9 दिसंबर को रूस के कलिनिनग्राद में कमीशन करेगी, जो एक अपग्रेडेड क्रिवाक श्री क्लास फ्रिगेट है। आईएनएस तुशील - 125 मीटर, 3900 टन का जहाज जो रूसी और भारतीय अत्याधुनिक तकनीकों और युद्धपोत निर्माण में सर्वोत्तम प्रथाओं का मिश्रण है - का कमीशनिंग एक कार्यक्रम में होगा जिसकी अध्यक्षता रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह करेंगे और जिसमें कई उच्च रैंकिंग वाले रूसी और भारतीय सरकारी और रक्षा अधिकारी शामिल होंगे।

आईएनएस तुशील प्रोजेक्ट 1135.6 से एक अपग्रेडेड क्रिवाक श्री क्लास फ्रिगेट है, जिनमें से छह पहले से ही सेवा में हैं। इस श्रेणी के छह फ्रिगेट जो पहले से ही सेवा में हैं, उनमें तीन तलवार श्रेणी के जहाज हैं, जो सेंट पीटर्सबर्ग के बाल्टिस्की शिपयार्ड में बनाए गए हैं, और तीन अनुवर्ती टेग श्रेणी के जहाज हैं, जो कैलिनिनग्राद के यंतर शिपयार्ड में बनाए गए हैं। श्रृंखला में सातवां आईएनएस तुशील, दो उन्नत अतिरिक्त अनुवर्ती जहाजों में से पहला है, जिसके लिए अनुबंध पर अक्टूबर 2016 में जेएससी रोसोबोरोन एक्सपोर्ट, भारतीय नौसेना और भारत सरकार के बीच हस्ताक्षर किए गए थे। कमीशन होने पर, आईएनएस तुशील पश्चिमी नौसेना कमान के तहत भारतीय नौसेना के 'स्वॉर्ड आर्म', पश्चिमी बेड़े में शामिल हो जाएगा और दुनिया में सबसे अधिक तकनीकी रूप से उन्नत फ्रिगेट में शुमार होगा। यह न केवल भारतीय नौसेना की बढ़ती क्षमताओं का प्रतीक होगा, बल्कि भारत-रूस साझेदारी की लचीली सहयोगी ताकत का भी प्रतीक होगा। युद्धपोत के निर्माण की निगरानी मॉस्को स्थित भारतीय दूतावास के तत्वावधान में कैलिनिनग्राद में तैनात युद्धपोत निगरानी दल के विशेषज्ञों की एक भारतीय टीम द्वारा की गई थी। रक्षा मंत्रालय के अनुसार, (शेष पृष्ठ 9)

पधारो म्हारे देश

जयपुर में ऐतिहासिक आमेर किले के केसर क्यारी उद्यान में राइजिंग राजस्थान वैश्विक निवेश शिखर सम्मेलन से पहले सौंदर्यीकरण कार्य प्रगति पर।

वीजीएफ मॉडल पर ई-बसों का संचालन

● नोएडा-ग्रेटर नोएडा और यमुना विकास के 25 रुट होंगे, फंड में तीनों प्राधिकरण की होगी हिस्सेदारी

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

नोएडा में वायबिलिटी गैप फंड (वीजीएफ) मॉडल पर ई बसों का संचालन किया जाएगा। इससे न तो प्राधिकरण को घटा होगा और न ही बस संचालन करने वाली कंपनी को। प्राधिकरण के सीईओ लोकेश एम ने बताया कि वीजीएफ का मतलब गैप को भरने से है।

उदाहरण के लिए यदि एक बस दिन में 200 किमी चलती है। जिसका खर्चा 1000 रुपए आता है। कंपनी टिकट के जरिए 700 रुपए रोजाना कमाती है। ऐसे में उसे 300 रुपए का घाटा न हो इसलिए प्राधिकरण उसे 300 रुपए ही देगा। इसकी हिस्सेदारी तीनों प्राधिकरण की होगी। इसके लिए एसपीवी गठित की जा चुकी है। जल्द ही तीनों प्राधिकरण की हिस्सेदारी तय हो जाएगी।

इस मॉडल को बोर्ड में रखकर शासन भेजा जाएगा। उन्होंने बताया कि तैयारी पूरी हो चुकी है। जनवरी अंत तक कंपनी के चयन के लिए टेंडर प्रक्रिया की जाएगी। इसमें उसकी कंपनी का चयन किया जाएगा जो हमसे कम से कम वीजीएफ की मांग करेगा। बता दे नोएडा प्राधिकरण करीब 120 करोड़ रुपए सालाना वीजीएफ के तौर पर एनएमआरसी को भी देती है। सीईओ ने बताया कि सबसे ज्यादा 13 रूट नोएडा में है। इसके बाद 5 रूट ग्रेटरनोएडा और दो यमुना विकास प्राधिकरण के क्षेत्र में आते है। इसमें सबसे लंबा एक रुट नोएडा से जेवर तक का हो सकता है। इन रुट पर वायबिलिटी की स्टडी हो चुकी है। इन सभी रूटों को नोएडा के मेट्रो से जोड़ा जोड़ा जाएगा।

ताकि दोनों को मुसाफिर मिल सके और लोगों को आने जाने में दिक्कत न हो। इन रूटो पर 500 ई बस चलेंगी। नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर 17 अप्रैल को पहली कॉमर्शियल फ्लाइट उड़ान भरेगी। उससे पहले यानी फरवरी में ही शहर में बसों का संचालन शुरू कर दिया जाएगा।

सीईओ ने कहा कि इसके लिए किसी का इंतजार नहीं करना है। एक बार फुल एंड फाइनल होते ही कंपनी के चयन के लिए टेंडर प्रकिया की जाएगी। ताकि लोगों को लोकल ट्रांसपोर्ट मिल सके।

प्राधिकरण का चाहता है कि इन बसों की योजना को पीएम ई बस योजना से जोड़ा जाए। ताकि प्राधिकरण को रिबेट मिल सके। इससे प्राधिकरण पर वीजीएफ के भार में और कमी आ जाएगी। क्योंकि पीएम ई बस सर्विस योजना में वीजीएफ का काफी पैसा सेंटर गवर्नमेंट देती है। इसको लेकर अधिकारियों में मंत्रणा की जा रही है।

ये है वीजीएफ मॉडल

अगर ई-बस चलाने में कंपनी को घाटा होता है तो इस हानि का वहन तीनों प्राधिकरण करेंगे।

केंद्र सरकार को भेजी नोएडा मेट्रो की डीपीआर

● सेक्टर-51 से नॉलेज पार्क-5 तक का है रूट, 2771.60 करोड़ रुपए का बजट

पायनियर समचार सेवा। नोएडा

नोएडा से ग्रेनो वेस्ट रूट पर चलने वाली मेट्रो लाइन की संशोधित डिटेल्ड प्रोजेक्ट रिपोर्ट (डीपीआर) को अप्रूवल के सेंट्रल गवर्नमेंट को भेजा गया है। इससे पहले संशोधित डीपीआर को नवंबर में स्टेट गवर्नमेंट ने अप्रूव किया था।

ये रूट सेक्टर-51 से ग्रेटरनोएडा के नॉलेज पार्क-5 तक है। इस रूट पर 11 स्टेशन बनाए जाएंगे। इसके बनने से एयरपोर्ट तक पहुंचना आसान होगा। मसलन नॉलेज पार्क-5 से रैपिड रेल के जरिए एयरपोर्ट जा सकेगा। इस रूट पर मेट्रो चलने से 130 मीटर रोड पर लग रहे जाम में कमी आएगी। इस रूट पर कुल 11 स्टेशन बनाए जाएंगे। पूरे प्रोजेक्ट के निर्माण में करीब 2991.60 करोड़ रुपए तय की गई है। पहले 2197 करोड़ रुपए तय किए गए थे। अधिकारियों ने बताया कि मेट्रो चलने की शुरुआत में करीब सवा लाख राइडरशिप इस रूट पर रहेगी। संशोधित डीपीआर में मेट्रो का जो रूट पास किया गया है। वह पहले के मुकाबले करीब ढाई किलोमीटर लंबा है। पहले 14. 958 किलोमीटर लंबा रूट बनाया गया था जो अब 17. 435 किलोमीटर लंबा हो गया है। इस रूट पर अब सेक्टर-61 स्टेशन पर दिल्ली से आ रही ब्लू और ग्रेनो वेस्ट जाने एक्वा मेट्रो लाइन जुड़ जाएगी। लोगों को मेट्रो बदलने के लिए नीचे नहीं उतरना पड़ेगा। ऐसे में यह इंटर चेंज स्टेशन बनेगा।

एनसीआर में बढ़ी ठिठुरन, रात का पारा 7 डिग्री तक पहुंचा

गाजियाबाद। दिल्ली-एनसीआर में अब सर्दी तेजी से बढ़ने लगी है। रात का न्यूनतम तापमान 2 डिग्री सेल्सियस घटकर 7 डिग्री सेल्सियस पर दर्ज किया गया। वहीं आज दिन में अधिकतम तापमान 24 डिग्री रहने का अनुमान है। दिन में धूप खिलने के साथ मौसम साफ रहने का अनुमान है। पिछले 2 दिनों में 13 किमी प्रति घंटा से चली तेज व सर्द हवाओं ने पूरे एनसीआर में ठंड बढ़ाई है। आज भी 9 किमी की स्पीड से हवा चलने का अनुमान है। रात में भी हवा की गति सामान्य से दो गुना अधिक रही। गाजियाबाद में इंदिरापुरम समेत दूसरे क्षेत्रों की हवा साफ हुई है। जहां हवा की गुणवत्ता में सुधार से लोगों ने राहत ली है। आज शुक्रवार को दिन में धूप खिलने के साथ मौसम साफ रहने का अनुमान है। इससे पहले बुधवार को दिन में मौसम साफ रहा और धूप खिली रही। आज गाजियाबाद व एनसीआर में, त्त्छ्ठ में बढ़ोत्तरी हुई है। जहां दिन में दृश्यता बड़ी है। दिन में धूप खिली रहेगी। गाजियाबाद में आज दिन में मौसम साफ रहने का अनुमान है। रात का तापमान 7 डिग्री आ पहुंचा है। दिन का तापमान 24 डिग्री रहने का अनुमान है। अगले वीक में तापमान में और भी डिग्री की गिरावट आनी बताई जा रही है, जिससे सर्दी और भी तेजी से बढ़ेगी। कोहरे की दस्तक के साथ दिन में मौमस बदल जाएगा। अभी दिन में धूप खिलने से राहत है। रात में 12 बजे के बाद तेजी से तापमान में गिरावट आ रही है, जहां सुबह 7 बजे के बाद तापमान बढ़ रहा है।

130 करोड़ नहीं देने पर प्राधिकरण ने प्लाट किया सील

नोएडा। प्राधिकरण ने बड़ा एक्शन लेते हुए डोसाइल बिल्डटेक प्राइवेट लिमिटेड को आवंटित भूखंड निरस्त करते हुए भूखंड को सील कर दिया है। डेवलपर पर 130 करोड़ का बकाया है। जिसे जमा करने के लिए प्राधिकरण ने डेवलपर को कई बार नोटिस जारी किया। अंतिम नोटिस 20 अक्टूबर 2024 को 15 दिन का दिया गया। इसके बाद बाद भी डेवलपर ने प्राधिकरण से संपर्क नहीं किया।

ऐसे में प्राधिकरण ने गुरुवार शाम को सेक्टर-143 में डोसाइल को आंवटित 13961 वर्गमीटर जमीन का आवंटन निरस्त कर दिया है। प्राधिकरण अधिकारियों ने बताया कि 2008 में लॉजिक्स सिटी लिमिटेड को प्राधिकरण ने 1 लाख वर्गमीटर जमीन का आवंटन किया था। ये जमीन ग्रुप हाउसिंग प्लाट है। इस जमीन का आवंटन 23 हजार 550 रुपए प्रति वर्गमीटर की दर से किया गया।

जेवर एयरपोर्ट के पास अमेरिकी शहरों जैसा विकसित होगा क्षेत्र

● कंपनी का प्रतिनिधिमंडल शुक्रवार को हवाई अड्डे के पास पहुंचा

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

नोएडा के जेवर में बन रहे नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट के पास अमेरिकन सिटी विकसित की जाएगी। इसको लेकर गुरुवार को अमेरिकन कंपनी का प्रतिनिधिमंडल शुक्रवार को एयरपोर्ट के पास पहुंचा। जहां पर औद्योगिक इकाई लगाने के लिए जमीन देखी गई।

मौके पर यमुना प्राधिकरण के अधिकारी भी मौजूद रहे। यह ग्रेटर नोएडा शहर के साथ पूरे उत्तर प्रदेश के लिए गर्व का विषय है। आज के समय में नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट के आसपास अपनी औद्योगिक इकाई लगाने के लिए कई नामी विदेशी कंपनी लाइन में खड़ी हुई है।

यह परियोजना उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के वन ट्रिलियन यूएस डॉलर इकॉनमी' के सपने को साकार करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। यमुना प्राधिकरण के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) डॉ.अरुणवीर सिंह ने बताया कि इस परियोजना को सैद्धांतिक सहमति दी गई है। इस महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट में इंडस्ट्री, हाउसिंग, स्कूल और हॉस्पिटल के साथ-साथ एक 'अमेरिकन लीडरशिप स्कूल' भी बनाया जाएगा।

करीब एक हजार एकड़ जमीन पर 'अमेरिकन सिटी' बसाई जाएगी। डॉ.अरुणवीर सिंह ने बताया कि यह प्रोजेक्ट मिक्स्ड लैंड यूज पर आधारित होगा। जिसमें उद्योग, आवासीय क्षेत्र, शैक्षणिक संस्थान और चिकित्सा सुविधाएं शामिल होंगी। अगले 5 वर्षों में जॉन मैक्कैन का वेंचर चार बिलियन अमेरिकी डॉलर का निवेश करेगा। जो न केवल प्रदेश में आर्थिक वृद्धि को गति देगा, बल्कि रोजगार के नए अवसर भी उत्पन्न करेगा।

AXIS BANK LTD.

स्वर्ण आभूषणों सहित गिरवी रखी आस्तियों की ई-नीलामी हेतु सार्वजनिक सूचना

विशेष रूप से उधारकर्ताओं और सामान्य रूप से जनता को सूचित किया जाता है कि नीचे दिए गए खातों में गिरवी रखे गए सोने के आभूषणों की सार्वजनिक नीलामी एक्सिस बैंक द्वारा नीचे उल्लिखित शाखा में आयोजित करने का प्रस्ताव है। नीचे उल्लिखित उधारकर्ताओं ने सुरक्षा हेतु बैंक के पक्ष में सोने के आभूषणों ("स्वर्ण ऋण सुविधा") को गिरवी रखकर एक्सिस बैंक लिमिटेड से क्रेडिट सुविधा का लाभ उठाया है। उधारकर्ताओं/गारंटरों को मांग नोटिस जारी किए गए थे, जिसमें उधारकर्ताओ/ग्गारंटरों को प्राप्त स्वर्ण ऋण सुविधा के लिए उनकी बकाया राशि का भुगतान करने के लिए कहा गया था। चूंकि उधारकर्ता/गारंटर बकाया ऋण राशि चुकाने में विफल रहे हैं, बैंक गिरवी रखे गए सोने के आभूषणों की ई-नीलामी बिक्री करने के लिए विवश है और विशेष रूप से दिनांक **17-12-2024** को दोपहर 12:30 बजे से 03:30 बजे तक "जैसा है जहां है", "जैसा है जो है, "जो कुछ भी है" और " बिना कोई सहारे के आधार पर अनुसूची में वर्णित गिरवी रखे गए सोने के आभूषणों की ई-नीलामी बिक्री करने के लिए विवश है।

उधारकर्ताओं और बकाया राशि का विवरण

ग्राहक का नाम	ऋण खाता नं.	बकाया राशि (रु. में)	पुनःस्मरण सूचना की तिथि	सकल वजन	निवल वजन
शाखा अशोक विहार, नई दिल्ली (दिल्ली)					
जीतेन्द्र कुमार शर्मा	XXXXXXXXXXX0838	₹ 35,322.00	04-11-2024	9.700	9.000
साहिब आलम	XXXXXXXXXXX1080	₹ 308,953.00	27-09-2024	79.400	77.000
सरोज देवी	XXXXXXXXXXX6731	₹ 127,980.00	07-10-2024	37.100	35.200
पंकज	XXXXXXXXXXX0824	₹ 270,017.79	04-11-2024	69.800	66.370
निशि क्वात्रा	XXXXXXXXXXX8531	₹ 238,305.00	04-11-2024	55.100	53.300
अभिषेक शर्मा	XXXXXXXXXXX0217	₹ 65,446.24	27-09-2024	18.600	17.900
विशाल खंडेलवाल	XXXXXXXXXXX8200	₹ 1,549,783.00	04-11-2024	408.200	355.100
शाखाः डीएलएफ, गुड़गांव (हरि.)					
अजीत सिंह	XXXXXXXXXXX0406	₹ 70,024.00	27-09-2024	15.890	15.590
रंजना राठौड़	XXXXXXXXXXX9998	₹ 620,654.60	27-09-2024	135.700	132.100
शाखाः द्वारका, दिल्ली (दिल्ली)					
विकास यादव	XXXXXXXXXXX6474	₹ 21,027.45	04-11-2024	19.500	18.500
रूपक कुमार	XXXXXXXXXXX9144	₹ 225,761.00	27-09-2024	52.400	50.000
घनश्याम शर्मा	XXXXXXXXXXX8208	₹ 179,020.44	04-11-2024	46.100	43.800
रूपक कुमार	XXXXXXXXXXX8029	₹ 175,082.00	07-09-2024	43.500	42.300
शाखाः फरीदाबाद (हरि.)					
रूबीना	XXXXXXXXXXX3076	₹ 118,000.00	26-07-2024	49.200	31.700
रानी ज्योत्सना	XXXXXXXXXXX5764	₹ 189,902.00	04-11-2024	47.900	44.700
ऋचा पांडे	XXXXXXXXXXX0040	₹ 54,802.00	06-09-2024	15.900	14.700
मेधा पांडे	XXXXXXXXXXX4562	₹ 230,213.00	27-09-2024	55.400	51.500
शाखाः गीता कॉलोनी, नई दिल्ली (दिल्ली)					
मोहम्मद इलियास मलिक	XXXXXXXXXXX6732	₹ 124,714.91	27-09-2024	28.900	27.900
शाखाः गाजियाबाद (यू.पी.)					
अन्नू पांचाल	XXXXXXXXXXX1526	₹ 147,180.00	04-11-2024	34.400	33.100
अभिषेक	XXXXXXXXXXX7509	₹ 45,661.73	04-11-2024	13.400	12.800
बलराज सिंह	XXXXXXXXXXX3130	₹ 211,555.00	27-09-2024	53.700	49.600
अनिता देवी	XXXXXXXXXXX5472	₹ 229,496.00	04-11-2024	57.150	53.150
अनिता देवी	XXXXXXXXXXX6776	₹ 27,376.90	04-11-2024	6.450	6.150
शाखाः ग्रेटर नोएडा (यू.पी.)					
कृष्णा कुमार	XXXXXXXXXXX2945	₹ 164,426.00	04-08-2024	43.800	41.800
मंजू	XXXXXXXXXXX0088	₹ 51,792.00	07-09-2024	14.600	13.900
धनंजय भड़ाना	XXXXXXXXXXX2627	₹ 134,880.00	27-09-2024	28.400	27.400
जितेंद्र	XXXXXXXXXXX8628	₹ 89,814.11	27-09-2024	20.700	19.400
शाखाः ज्योति नगर दिल्ली (दिल्ली)					
मन्नू कुरैशी	XXXXXXXXXXX4714	₹ 777,863.00	04-11-2024	217.000	186.820
अनुज जैन	XXXXXXXXXXX8405	₹ 265,592.71	22-03-2024	71.500	69.470
शाखाः कालकाजी, नई दिल्ली (दिल्ली)					
निखिल सिंघल	XXXXXXXXXXX6098	₹ 224,161.42	04-11-2024	57.000	53.600
निखिल सिंघल	XXXXXXXXXXX3014	₹ 200,500.00	07-10-2024	53.300	51.500
शाखाः किशनगंज ओडी (दिल्ली)					
बिनोद कुमार यादव	XXXXXXXXXXX5001	₹ 43,431.00	07-09-2024	11.400	10.700
पूजा परमार	XXXXXXXXXXX9053	₹ 115,982.00	04-11-2024	29.400	26.700
शाखाः लाजपत नगर, नई दिल्ली (दिल्ली)					
शालू कोहली	XXXXXXXXXXX9228	₹ 118,742.49	27-09-2024	46.000	43.700
शाखाः लाजवंती गार्डन, जनकपुरी, नया					
पंकज कुमार	XXXXXXXXXXX3580	₹ 35,565.00	04-11-2024	10.100	9.600
शाखाः मालवीय नगर, नई दिल्ली (दिल्ली)					
संतोष कुमार सिंह	XXXXXXXXXXX9703	₹ 83,831.00	07-09-2024	20.000	19.250
शाखाः मयूर विहार, नई दिल्ली (दिल्ली)					
विनय कुमार	XXXXXXXXXXX7908	₹ 230,833.00	07-10-2024	64.400	62.540
बेबी सिंह	XXXXXXXXXXX4502	₹ 69,975.00	27-09-2024	18.700	18.160
रितेश अग्रवाल	XXXXXXXXXXX7916	₹ 255,324.00	27-09-2024	53.800	52.300
शाखाः मीरा बाग, नई दिल्ली (दिल्ली)					
सुमित कुमार मिश्रा	XXXXXXXXXXX7028	₹ 676,492.00	04-11-2024	188.300	177.350
शाखाः नजफगढ़, नई दिल्ली (दिल्ली)					
योगिता	XXXXXXXXXXX6344	₹ 144,006.00	28-08-2024	39.200	34.700
योगिता	XXXXXXXXXXX0797	₹ 58,795.00	07-09-2024	15.500	15.000
शाखाः न्यू फ्रेंड्स कॉलोनी, नई दिल्ली)					
राज	XXXXXXXXXXX5885	₹ 60,954.00	02-04-2024	18.800	17.800
शाखाः न्यू रेलवे रोड, गुड़गांव (हरि.)					
राधा रानी	XXXXXXXXXXX3187	₹ 173,375.00	27-09-2024	41.600	39.000
अशोक कुमार मंडल	XXXXXXXXXXX2390	₹ 34,205.00	20-07-2024	9.200	8.700
हरिगोविन्द सिंह	XXXXXXXXXXX4303	₹ 53,300.00	04-08-2024	12.400	12.000
प्रवीण भवानिया	XXXXXXXXXXX8435	₹ 45,033.89	27-09-2024	10.200	9.900
सुनील कुमार	XXXXXXXXXXX3841	₹ 102,734.00	04-11-2024	33.500	24.000
सुनील कुमार	XXXXXXXXXXX5263	₹ 84,514.00	18-06-2024	20.200	20.100
रोहित राणा	XXXXXXXXXXX8076	₹ 117,521.00	04-11-2024	24.200	23.900
शाखाः नोएडा (यूपी)					
कुलबीर रावत	XXXXXXXXXXX1143	₹ 155,953.00	20-07-2024	42.400	41.000
अभिषेक कुमार पांडे	XXXXXXXXXXX2671	₹ 61,477.86	04-11-2024	16.600	16.200
अभिषेक कुमार पांडे	XXXXXXXXXXX0842	₹ 40,708.00	28-08-2024	9.500	9.300
शाखाः नोएडा एक्सटेंशन जीएनओ (यूपी)					
अमित कुमार	XXXXXXXXXXX7299	₹ 37,527.00	08-05-2024	11.200	10.700
उपेन्द्र कुमार	XXXXXXXXXXX3394	₹ 300,094.00	26-08-2024	75.100	72.600
संगीता कुमारी	XXXXXXXXXXX7784	₹ 169,679.00	07-09-2024	46.500	44.500
हार्दिक जौहरी	XXXXXXXXXXX5662	₹ 163,537.00	07-09-2024	44.800	38.500
निर्मला देवी	XXXXXXXXXXX4824	₹ 56,124.00	04-08-2024	15.200	14.000
राजकुमारी	XXXXXXXXXXX1262	₹ 67,332.00	27-09-2024	16.000	15.300
शाखाः पालम विहार, गुड़गांव (हरि.)					
अजय शर्मा	XXXXXXXXXXX9271	₹ 499,507.49	27-09-2024	130.700	114.000
अक्षय कुमार	XXXXXXXXXXX6931	₹ 348,050.61	27-09-2024	89.800	71.300
शाखाः पैराडाइज मॉल एस गुरु (हरि.)					
राम कुमार	XXXXXXXXXXX8788	₹ 252,991.00	04-11-2024	63.300	61.600
कुणाल सिरोही	XXXXXXXXXXX8508	₹ 42,897.41	04-11-2024	10.100	9.900
शाखाः पंजाबी बाग, नई दिल्ली (दिल्ली)					
नदीम	XXXXXXXXXXX2550	₹ 171,293.15	07-09-2024	41.700	39.800
शाखाः आरके मिशन, नई दिल्ली (दिल्ली)					
आशू अंजुम	XXXXXXXXXXX6221	₹ 182,699.00	07-09-2024	53.200	46.100
आसमा खातून	XXXXXXXXXXX2787	₹ 70,135.10	20-07-2024	18.690	17.800
शाखाः राज नगर, गाजियाबाद (यूपी)					
फरमान	XXXXXXXXXXX2678	₹ 104,556.00	04-11-2024	26.700	25.100
शाखाः रोहिणी, दिल्ली (दिल्ली)					
बबीता	XXXXXXXXXXX3451	₹ 217,017.00	04-08-2024	48.000	46.800
शाखाः सेक्टर 10ए, गुड़गांव (हरि.)					
अनिल कटारिया	XXXXXXXXXXX6633	₹ 417,108.65	04-11-2024	104.400	102.400
सत्यजीत सिंह	XXXXXXXXXXX8465	₹ 737,872.00	04-11-2024	173.100	172.300
शाखाः सेक्टर 12 नोएडा					
सूरज कनौजिया	XXXXXXXXXXX6498	₹ 48,011.58	07-10-2024	12.400	11.800
शाखाः सेक्टर 14, गुड़गांव (हरि.)					
कंचन माला	XXXXXXXXXXX9687	₹ 306,661.00	07-09-2024	82.900	79.100
विकास चौहान	XXXXXXXXXXX1702	₹ 596,075.81	04-11-2024	139.100	135.400
सौरभ सिंह	XXXXXXXXXXX2545	₹ 286,092.00	04-11-2024	66.700	64.100
शिरोमन केरकेट्टा	XXXXXXXXXXX4798	₹ 37,530.00	27-09-2024	10.400	10.200
शाखाः सेक्टर 16, फरीदाबाद (हरि.)					
अजय	XXXXXXXXXXX3574	₹ 28,956.03	07-10-2024	20.700	19.900
अशोक कुमार	XXXXXXXXXXX1358	₹ 135,422.00	27-09-2024	37.800	35.800
खुशबू गांधी	XXXXXXXXXXX0943	₹ 153,666.00	04-11-2024	35.700	33.210
राजकुमार	XXXXXXXXXXX3522	₹ 92,282.00	27-09-2024	24.800	23.600
शाखाः सेक्टर 20 द्वारका (दिल्ली)					
मणिमाला रे	XXXXXXXXXXX3500	₹ 241,904.34	08-05-2024	73.900	67.900
शाखाः सेक्टर 31-32ए, गुड़गांव (हरि.)					
मनीषा	XXXXXXXXXXX2015	₹ 177,594.00	07-09-2024	50.300	49.000
शाखाः सेक्टर-17, गुड़गाँव(हरि.)					
दीपक शर्मा	XXXXXXXXXXX6206	₹ 26,929.00	04-11-2024	6.660	6.160
शाखाः सेक्टर-22, गुड़गाँव(हरि.)					
सचिन त्यागी	XXXXXXXXXXX9236	₹ 390,455.00	28-08-2024	106.480	96.680
रितेश कुमार नायक	XXXXXXXXXXX3540	₹ 337,839.33	04-08-2024	84.100	82.500
शाखाः शाहदरा, दिल्ली (दिल्ली)					
मोहम्मद वजहद खान	XXXXXXXXXXX4437	₹ 77,161.74	27-09-2024	27.100	26.000
सुमित कात्याल	XXXXXXXXXXX3906	₹ 4,025,294.00	04-11-2024	892.400	856.400
शाखाः शालीमार बाग, दिल्ली (दिल्ली)					
भगवती प्रसाद	XXXXXXXXXXX4887	₹ 41,744.00	07-09-2024	10.800	10.200
पवन कुमार	XXXXXXXXXXX5111	₹ 175,951.29	04-11-2024	43.400	39.400
शाखाः शीशगंज सीएचए ओडी (दिल्ली)					
दीपिका	XXXXXXXXXXX6389	₹ 30,757.00	04-11-2024	7.900	7.500
शाखाः स्वास्थ्य विहार, नई दिल्ली (दिल्ली)					
राजेश कुमार	XXXXXXXXXXX4665	₹ 181,749.78	27-09-2024	54.400	51.600
शाखाः तिलक नगर, दिल्ली (दिल्ली)					
पंकज कुमार	XXXXXXXXXXX8830	₹ 73,090.00	04-11-2024	22.100	20.200
शाखाः वैशाली, गाजियाबाद (यूपी)					
राहुल कुमार सिंह	XXXXXXXXXXX7524	₹ 63,178.27	07-09-2024	18.700	17.800
साहबे आलम	XXXXXXXXXXX0964	₹ 97,156.00	04-11-2024	28.600	26.700
शाखाः विकासपुरी, नई दिल्ली (दिल्ली)					
राकेश चतुर्वेदी	XXXXXXXXXXX6222	₹ 106,169.00	04-11-2024	34.200	30.100
शाखाः जेवर जीबीएनएजी (यूपी)					
YOGESH KUMAR	XXXXXXXXXXX8281	₹ 132,034.00	20-07-2024	35.000	33.600
शाखाः इंदिरापुरम, गाजियाबाद (यूपी)					
नितेश सिंह	xxxxxxxxxxx0830	₹ 1,02,914.19	07-10-2024	52.900	49.600

एक्सिस बैंक लिमिटेड बिना किसी पूर्व सूचना के खाते को हटाने/नीलामी की तारीख बदलने का अधिकार रखता है। नीलामी ऑनलाइन **https://gold.samil.in** दोपहर 12.30 बजे से 03.30 बजे के बीच आयोजित की जाएगी।

विस्तृत नियम और शर्तों के लिए, कृपया दी गई वेबसाइट https://gold.samil.in पर लॉग इन करें।

स्थान : दिल्ली और एनसीआर
तिथि : 07.12.2024

हस्ता/- प्राधिकृत अधिकारी,
एक्सिस बैंक लिमिटेड

तेज रफ्तार कार ने छात्र को मारी टक्कर, घायल

नोएडा। नोएडा के दनकौर-सिकन्द्राबाद रोड पर तेज रफ्तार कार ने 12वीं के छात्र को टक्कर जोरदार टक्कर मार दी। घटना में छात्र बुरी तरह घायल हो गया। जिसका ग्रेटर नोएडा के एक अस्पताल में इलाज चल रहा है। जहां उसकी हालत गंभीर बनी हुई है। घायल के परिजनों ने आरोपी कार चालक के विरुद्ध खिलाफ देकर कानूनी कार्रवाई की मांग की है।

नवादा गांव की रहने वाली सरिता रानी ने बताया कि उनका बेटा लक्की गौतम 12वीं कक्षा का छात्र है। जो गुरुवार शाम ट्यूशन पढ़ने के लिए दनकौर कस्बा जा रहा था। जब उसकी बाइक दनकौर सिकन्द्राबाद रोड पर मुंहफाड गांव के नजदीक पहुंची तो सामने से आ रही तेज रफ्तार कार में जोरदार टक्कर मार दी। घटना में छात्र बुरी तरह घायल हो गया। जिसको इलाज के लिए ग्रेटर नोएडा के शारदा अस्पताल में भर्ती कराया है।

गाजियाबाद बार ने 4 भाजपा विधायकों की सदस्यता रद्द की

● 30 दिन से वकील हड़ताल कर रहे, बार ने कहा- राजनीति के साथ ये लोग वकील, मगर एक्टिव नहीं

पायनियर समाचार सेवा। गाजियाबाद

गाजियाबाद में वकील पिछले एक महीने से हड़ताल कर रहे हैं। वकीलों के समर्थन में मौजूदा विधायक और मंत्री नहीं पहुंचे। ये राजनीति में सक्रिय होने के साथ वकील भी हैं।

बार एसोसिएशन ने इसे अनदेखी मानते हुए चार जनप्रतिनिधियों की बार की सदस्यता रद्द कर दी है। इसमें साहिबाबाद से भाजपा विधायक और यूपी सरकार के मंत्री सुनील शर्मा का नाम शामिल है। इसके अतिरिक्त, यूपी सरकार के राज्यमंत्री नरेंद्र कश्यप, मुरादनगर से विधायक अजीत पाल त्यागी और लोनी विधायक नंद किशोर गुर्जर की सदस्यता निरस्त हुई है। साथ ही, बार ने आदेश भी जारी किया। जिसमें लिखा है कि बार के हर साल होने वाले चुनाव में ये लोग वोट नहीं डाल सकेंगे। 29 अक्टूबर को गाजियाबाद जिला जज अनिल कुमार की कोर्ट में वकीलों के साथ हुई तीखी नोकझोंक के बाद पुलिस ने लाठीचार्ज कर दिया गया था।

गाजियाबाद के वकील उसी दिन से धरने पर हैं। पहले सप्ताह अधिवक्ता कचहरी परिसर में ही धरने पर रहे, लेकिन 11 नवंबर से अधिवक्ता आंदोलन को व्यापक बनाते हुए रोजाना दो घंटे तक सड़क जाम कर प्रदर्शन भी कर रहे हैं।

पुलिस से मुठभेड़ के बाद बदमाश गिरफ्तार, लूट के फोन बरामद

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

अर्जुन अवॉर्ड विजेता रेसलर दिव्या काकरान के पति से सोने की चेन लूटने वाले बदमाशों को पुलिस ने मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार किया।

दोनों बदमाश नरेश उर्फ देवा और ऋषभ को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। इन दोनों के पास से सात मोबाइल फोन और 35 हजार रुपए बरामद किए गए है। एडीसीपी मनीष मिश्र ने बताया कि गुरुवार देर रात थाना सेक्टर 113 नोएडा पुलिस टीम एफएनजी रोड पर चेकिंग कर रही थी। इस दौरान दो बदमाश आते दिखे। पुलिस ने रुकने का इशारा किया। बदमाशों ने घिरता देखकर पुलिस पर फायर कर दिया। जवाबी फायरिंग में दोनों बदमाशों के पैर में गोली लगी। नरेश के खिलाफ अलग-अलग थानों में 12 और ऋषभ के खिलाफ 26 मुकदमे दर्ज है। इनका और भी आपराधिक रिकार्ड खंगाला जा रहा है। दोनों बदमाश हाई स्पीड बाइक से छिनैती की घटना को अंजाम देते थे। ऋषभ ने अपने एक अन्य साथी आकाश के साथ मिलकर सेक्टर-27 में 26 नवंबर को दिव्या काकरान के पति से सोने की चेन छीनी थी। आकाश की तलाश की जा रही है। इसके अलावा 03 दिसंबर को ओआईडीबी बिल्डिंग के पास सेक्टर 73 नोएडा से आई फोन 14 प्रो मैक्स एक व्यक्ति से छीना था।

रालोद ने भीमराव अंबेडकर को किया याद

गाजियाबाद। सविंधान निर्माता बाबा भीम राव अंबेडकर के परिनिर्वाण दिवस पर राष्ट्रीय लोकदल महानगर द्वारा बाबा साहब की मूर्ति पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। महानगर अध्यक्ष रेखा चौधरी ने बाबा भीमराव अंबेडकर द्वारा किए गए महान कार्यों के बारे में बताया। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष इंद्रजीत सिंह टीटू ने बाबा साहब के चरित्र पर प्रकाश डाला। इस मौके पर रविन्द्र चौहान, भूपेंद्र बॉबी, राजेंद्र चंदेला, किशन राघव, राजू गौतम, तरु चौधरी, शेर सिंह मौर्य, अमित चौधरी नवाब बाल्मीकि, दीपा सिरोही, सुमन अग्रवाल, श्वेता सिंह, सरजीत, मोमिन मलिक, कय्यूम, दीपक पर्चा, सुशील पांचाल, रितिक पांडे, आदित्य सिंह आदि उपस्थित रहे।

गिरफ्तारी के विरोध में सड़क पर उतरे किसान नेता

● परिचौक के पास जीरो पाइंट पहुंचने का प्रयास कर रहे किसानों को पुलिस ने रोक लिया

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

मांगों को लेकर संयुक्त किसान मोर्चा के किसानों ने एक बार फिर जीरो पाइंट पर आने का कोशिश की। यहां पंचायत की कॉल भारतीय किसान परिषद की ओर से की गई थी। किसानों ने कहा कि हमारे साथियों को छोड़ा जाए अन्यथा हमे भी जेल में डाल दिया जाए। इसको लेकर बीटा-2 क्षेत्र में परिचौक के पास जीरो पाइंट पहुंचने का प्रयास कर रहे किसानों को पुलिस ने रोक लिया। पुलिस ने जबरन किसानों को बसों में बैठाया और पुलिस लाइन ले गई। इसको देखते हुए महामाया और राष्ट्रीय दलित प्रेरणा स्थल पर पुलिस बल तैनात किया गया।

वहीं भारतीय किसान यूनियन (टिकैत) के जिलाध्यक्ष अशोक भाटी को आज भी पुलिस ने उनके घर पर हाउस गिरफ्तार कर लिया। अशोक भाटी ने बताया कि गौतमबुद्धनगर के प्रमुख नेताओं पर पुलिस का शिकंजा अभी भी कसा हुआ है। उन्होंने कहा कि भाकियू के राष्ट्रीय अध्यक्ष चौधरी नरेश टिकैत के आहवान पर बीते 4 दिसंबर को जीरो पॉइंट पर आयोजित महापंचायत के दौरान कुछ नेताओं द्वारा माहौल खराब करने की कोशिश की गई, जबकि महापंचायत की बदौलत सभी 122 किसान नेता जेल से रिहा हुए। अशोक भाटी ने कहा कि भाकियू शासन-प्रशासन से वार्ता के माध्यम से गौतमबुद्ध नगर के किसानों के मुद्दों को सुलझाना चाहती है। आज पुलिस द्वारा सलारपुर स्थित श्री कृष्णा भवन अशोक भाटी के साथ झलकेश बाबू, सुभाष नेता, सिंहराज गुर्जर, जोगिंदर भड़ाना, चरण सिंह भाटी, पार्थ गुर्जर, रविंद्र भाटी, सुनील भाटी, दीपक सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण पर विगत कुछ माह से धरना पर बैठे किसानों ने गुरुवार को धरना समाप्त कर दिया है। जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा और ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के एसीईओ सौम्य श्रीवास्तव व सुनील कुमार सिंह के साथ गुरुवार देर शाम को बोर्ड रूम में भारतीय किसान यूनियन (अराजनैतिक) के जिलाध्यक्ष महेंद्र मुखिया के नेतृत्व में किसानों की बैठक में सहमति बन गई है।

केजरीवाल का दावा

भाजपा कटवा रही आप समर्थकों के वोट

- बोले, शाहदरा विस में 11,018 वोट कटवाने के लिए आवेदन दिया है, इनमें 75 फीसद जीवित हैं
- 18 अक्टूबर के बाद से विस चुनाव तक एक भी वोट काटने की अनुमति न दी जाए

मतदाता सूची को लेकर भाजपा पर निशाना साधते आप प्रमुख अरविंद केजरीवाल, साथ में मनीष सिसोदिया।

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

फरवरी में होने वाले विधानसभा चुनाव को लेकर राष्ट्रीय राजधानी में राजनीतिक सरगर्मी बढ़ गई है। आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने भाजपा के खिलाफ हमलावर रुख अपना रखा है। शुक्रवार को केजरीवाल ने एक बार फिर भाजपा पर बड़ा आरोप लगाते हुए दावा किया कि मतदाता सूची से मतदाताओं के नाम हटाए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा चुनाव आयोग में आवेदन दायर कर शाहदरा, जनकपुरी, लक्ष्मी नगर समेत अन्य क्षेत्रों में हजारों मतदाताओं के नाम हटाने की कोशिश की है। केजरीवाल ने खासतौर पर बताया कि भाजपा ने शाहदरा क्षेत्र से 11,018 मतदाताओं के नाम हटाने का आवेदन दिया है। इन नामों में से 500 नामों की छानबीन की गई, तो पता चला कि 75 प्रतिशत लोग अभी भी वहां रह रहे हैं, लेकिन उनके नाम मतदाता सूची से हटाए दिए गए हैं। उन्होंने चुनाव आयोग की भूमिका को भी संदिग्ध बताया और आरोप लगाया कि भाजपा की तरफ से वोट काटने के आ रहे आवेदन वेबसाइट पर नहीं डाले जा रहे हैं।

अरविंद केजरीवाल ने संवाददाता सम्मेलन में कहा कि चुनाव आयोग से हम इस वोट डिलीशन घोटाले की जांच की मांग करते हैं। उन्होंने कहा कि 18 अक्टूबर के बाद से विधानसभा चुनाव तक एक भी वोट काटने की अनुमति न दी जाए। केजरीवाल ने दावा किया कि उन्होंने 11018 आवेदनों में से 500 की जांच की तो 372 लोग ऐसे मिले जो जीवित हैं और उसी पते पर रह रहे हैं। आप संयोजक ने कहा कि शाहदरा में 1,86,362 वोटर हैं, भाजपा 11 हजार (6 फीसद) वोट कटवाना चाहती है, जबकि पिछली बार आप यहां से मात्र 5,294 वोट से जीती थी, फिर चुनाव का क्या मतलब। केजरीवाल ने कहा कि इसमें चुनाव आयोग की भूमिका बहुत संदिग्ध है। चुनाव आयोग का एक नियम है। रोजाना जितने लोगों के वोट कटने का आवेदन आते हैं। चुनाव आयोग को उसकी जानकारी अपनी वेबसाइट पर फॉर्म नंबर 10 में डालनी होती है और बताना होता है कि वह उसपर कार्रवाई कर रहा है। लेकिन हैरानी की बात है कि गुरुवार तक चुनाव आयोग की वेबसाइट पर शहादरा विधानसभा से मात्र 487 आवेदन हटाने के लिए दिखाया जा रहा है।

> **आप संयोजक अरविंद केजरीवाल के वोट कटवाने का दावा गलत है। शहादरा विधानसभा क्षेत्र में 29 अक्टूबर से सिर्फ 494 फार्म 7 प्राप्त हुए हैं। पोस्ट को सोशल मीडिया मंच पर सीईओ दिल्ली ऑफिस और ईसीआईएसवीप को भी टैग किया है।**
> -जिला मजिस्ट्रेट (शाहदरा)

आप ने डीएम के बयान को बताया भ्रामक

आम आदमी पार्टी ने कहा कि वह पूरी जिम्मेदारी से कहते हैं कि अक्टूबर-नवंबर 2024 में भाजपा के बीएलए 1 ने शाहदरा एसी-62 के ईएआरओ को मतदाता सूची से नाम हटाए जाने के लिए 11,0018 मतदाताओं की सूची सौंपी थी। भाजपा के पदाधिकारी द्वारा दायर इस विलोपन आवेदन को ईएआरओ द्वारा विधिवत स्वीकार किया गया था।

इसके अलावा, जो अधिक चौंकाने वाला है वह यह है कि इस तरह के दुर्भावनापूर्ण अनुरोध प्राप्त करने के बाद, ईआरओ ने अपने एईआरओ और बीएलओ को 22 नवबर 2024 को एक पत्र जारी करके विलोपन की प्रक्रिया शुरू की।

इस पत्र में एईआरओ और बीएलओ को सत्यापन और उसके बाद विलोपन की प्रक्रिया शुरू करने के लिए कहा गया था।

भाजपा कटवा रही वोट : देवेन्द्र

नई दिल्ली। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष देवेन्द्र यादव ने कहा कि लोकतांत्रिक व्यवस्था में संविधान के अंतर्गत मतदान करने का अधिकार सबको बराबर दिया गया है, जबकि मौजूदा नागरिकों का वोट कटवाने की साजिश जो भाजपा कर रही है वह साबित करता है कि भाजपा भविष्य में अस्तित्व को लेकर असुरक्षित है। पूरा देश समझ रहा है कि विरोध और विपरित परिस्थितियों के बावजूद भाजपा कैसे देश और प्रदेशों में चुनाव एक तय मार्जिन से जीत रही है, यह संजोग नहीं पूरी तरह प्रयोग की पाठशाला में तय नीतिगत साजिश है। सहानुभूति लेने के लिए केजरीवाल वोटर के नाम कटवाए जा रहे है, क्या केजरीवाल ने उन वोटरों को खरीदा हुआ है, जो संवाददाता सम्मेलन करके बयान दे रहे है कि उनके वोटरों के नाम काटे जा रहे है। यह सही है कि भाजपा साजिश से वोट कटवा रही है।

फर्जी वोट पकड़े जाने से आप प्रमुख डर गए हैं : सचदेवा

नई दिल्ली। केजरीवाल और आम आदमी पार्टी के आरोपों पर भाजपा ने पलटवार करते हुए कहा कि केजरीवाल की चोरी पकड़ी जा रही है, जिससे उन्हें बौखलाहट हो रही है। भगवा पार्टी ने दो वीडियो जारी करके आम आदमी पार्टी द्वारा वोटर लिस्ट में की जा रही धांधली का पर्दाफाश किया। साथ ही चेतावनी भी दी कि 2025 के विधानसभा चुनाव में जो फर्जी वोट डालेगा। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा और सांसद बांसुरी स्वराज ने शुक्रवार को संवाददाता में मीडिया के सामने दो वीडियो के माध्यम से दिखाया कि कैसे केजरीवाल की सरकार ने पिछले 10 वर्षों से दिल्ली में रोहिंग्या और बांग्लादेशी के फर्जी वोट बनाने का काम किया है। मोती नगर के एक मामले में वोटर्स लिस्ट में जो नाम और एड्रेस लिखे गए हैं उन स्थानों पर ना कोई मकान है और ना ही कोई रहता है। सड़क के किनारे सिर्फ एक दीवार पर नया बिजली के मीटर लगाया गया है और 24 मतदाता पंजीकृत हैं। इस तरह त्रिलोकपुरी विधानसभा का भी दिखाया जिसमें एक कमरे के फ्लैट में 38 वोट पंजीकृत हैं जबकि पड़ोसियों के अनुसार एक कमरे का फ्लैट वर्षों से बंद है। मतदाता सूची की इस धाँधली और अरविंद केजरीवाल द्वारा मतदाताओं को लेकर भाजपा पर लगाये गए आरोपों पर सचदेवा ने कहा कि अरविंद डर गए हैं क्योंकि फर्जी रोहिंग्या और बांग्लादेशियों के वोट पकड़े जा रहे हैं। ये वो वोट बैंक है जो फोर्ड फाउंडेशन आदि से मिले पैसे से आप द्वारा खरीदे जाते हैं। आज जब उनकी चोरी पकड़ी गई है तो उन्हें अभी से हार का डर सता रहा है। सचदेवा ने कहा कि विधानसभा के चुनाव में जो फर्जी वोट डालना चाह रहे हों वह याद रखें कि चुनाव नियम 172 बी.एन.एस. के अंतर्गत फर्जी वोट डालने पर एक साल के कठोर कारावास का प्रवाधान है। इस चुनाव में भाजपा एक भी रोहिंगया, बंगलादेशी या अन्य फर्जी वोटर का वोट नहीं डलने देंगी। हर फर्जी वोट पकड़वाने का उन्हें संवैधानिक अधिकार है। उन्होंने सवाल किया कि सिर्फ मोती नगर विधानसभा में जिन लोगों की मृत्यु हो गई या जो लोग शिफ्ट हो गए उनकी संख्या 6584 है। कल्पना कीजिए यह आंकड़ा पूरी दिल्ली में कितना बड़ा होगा। दिल्ली में अवैध बांग्लादेशी और अवैध रोहिंग्या बसाना और उन्हे मतदान का अधिकार देना आम आदमी पार्टी का काम है। उन्होंने मुख्यमंत्री आतिशी को चेतावनी दी की वह एसडीएम एवं डीएम को वोट काटने से रोकने के लिए धमकी देना बंद करें। इतना ही नहीं शाहदरा विधानसभा के अंदर मतदाताओं की संख्या 186000 वोट होने का दावा करने वाले केजरीवाल को सही आंकड़े जानने चाहिए। शाहदरा में 197281 वोटर्स हैं। कुछ यही हाल ओखला विधानसभा का है जहाँ एक फर्जी वोट की लंबी लिस्ट है जिनसे विधायक अमानतुल्लाह खान की दुकान चलती है।

संक्षिप्त समाचार

इंटरनेशनल हार्डवेयर फेयर इंडिया का आगाज

नई दिल्ली। प्रगति मैदान के हॉल नंबर 11 में तीन दिवसीय इंटरनेशनल हार्डवेयर फेयर इंडिया का आगाज शुक्रवार को हुआ। यह इसका दूसरा संस्करण है। इस आयोजन में हार्डवेयर के क्षेत्र में इनोवेशन्स और विश्वस्तरीय मानकों का प्रदर्शन देखने को मिल रहा है। कोलनमैस्से द्वारा आयोजित इस प्रदर्शनी में जर्मनी, चीन, कोरिया, इटली, ताइवान के पैविलियन हैं। उद्घाटन समारोह अश्विनी कुमार, प्रेजीडेन्ट, एफआईईओ; डॉ अजय सहाय, डायरेक्टर जनरल एवं सीईओ, एफआईईओ, ओलिवर, चीफ ऑपरेटिंग ऑफिसर, कोलनमैस्से जीएमबीएच, सेबस्टियन रोसिटो, वाईस प्रेजीडेन्ट, ट्रेड फेयर मैनेजमेन्ट, कोलनमैस्से जीएमबीएच और मिलिंद दीक्षित, मैनेजिंग डायरेक्टर, कोलनमैस्से जीएमबीएच मौजूद रहे। प्रदर्शनी में प्रीमियम हैण्ड टूल्स, पावर टूल्स, स्पेशलाइड टूल्स एवं ओद्यौगिक हार्डवेयर समाधानों में इनोवेशन्स की व्यापक रेंज को प्रदर्शन किया जा रहा है।

बल्लीमारान में आंबेडकर की पुण्यतिथि मनाई

नई दिल्ली। बल्लीमारान विधानसभा में स्थित रामनगर मंडल में भारत रत्न बाबा साहब डा. भीमराव आंबेडकर की 67वीं पुण्यतिथि मनाई गई। रामनगर मण्डल में स्थित वाल्मीकि मंदिर के पास भाजपा कार्यकर्ताओं एवं स्थानीय लोगों ने बाबा साहब की तस्वीर पर माल्यार्पण कर उनके बताए मार्ग पर चलने का संकल्प लिया। प्रभारी भाजपा किसान मोर्चा जिला चांदनी चौक विपिन रूखड़ ने इस मौके पर उन्हें याद करते हुए कहा कि उन्होंने अपनी जिंदगी सामाजिक न्याय के लिए समर्पित कर दिया। उन्होंने कहा, आंबेडकर ने देश को संविधान के रूप में सुनहरा उपहार दिया जो हमारे प्रजातंत्र के लिए आधारशिला है। देश हमेशा उनका कर्जदार रहेगा। आंबेडकर प्रजातंत्र के चैंपियन थे, वे एक कट्टर देशभक्त, राष्ट्रवादी और मानवतावादी पुरुष थे, जिनके लिए गरीबों और दलितों का उत्थान विकास के लिए एक आवश्यक शर्त थी। रूखड़ ने बताया राष्ट्र निर्माण में उल्लेखनीय योगदान देने वाले सभी महापुरुषों को अगर पहली बार किसी सरकार ने भेदभाव रहित सम्मान देने का काम किया है तो वह नरेंद्र मोदी की सरकार है। मोदी सरकार ने संविधान निर्माता डा. भीमराव आंबेडकर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को उनकी जयंती पर होने वाले सेमिनारों तक सीमित नहीं रहने दिया, बल्कि कई बड़े निर्णय कर उनके योगदान को धरातल पर उतारकर अमिट बनाने की पहल की है। बहुजनों के न्याय की लड़ाई लड़ने वाले संविधान निर्माता डॉ. आंबेडकर, की विरासत को जिस तरह से मोदी सरकार बढ़ा रही है, उसे उनके सपनों का भारत बन रहा है।

'इतिहास का दस्तावेजीकरण सही तरीके से नहीं किया: सुधा मूर्ति

- 'बोधगया के विहार' पुस्तक का विमोचन

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

भारत का युवा ने देश के अतीत और इतिहास को नहीं जाना तो भविष्य को नहीं जान पाएगा। भारतीय इतिहास का दस्तावेजीकरण सही तरीके से नहीं किया गया इसलिए बहुत सारे महत्वपूर्ण तथ्य आज हमारे सामने नहीं है।

उक्त बातें पद्म भूषण सुधा मूर्ति ने हंसराज कॉलेज में बोगनवेलिया आर्ट फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित बोधगया के विहार पुस्तक के विमोचन एवं परिचर्चा कार्यक्रम में कहीं। उन्होंने कहा कि बुद्ध एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने शांति की स्थापना की। इस कॉफी टेबल बुक के माध्यम से बोधगया के विहारों का बड़ा सुंदर तरीके से प्रस्तुतीकरण किया गया है। भारतीय जनता पार्टी के महिला मोर्चा की राष्ट्रीय अध्यक्ष वनथी श्रीनिवासन ने कहा कि बोधगया के विहारों पर किया गया यह कार्य एक बहुत महत्वपूर्ण प्रयास है।

विशेष अतिथि पद्म श्री के.के मोहम्मद ने कहा कि एक शानदार फोटोग्राफर होने के साथ-साथ लेखक होने पर भारतीय संस्कृति का और सुंदर तरीके से प्रस्तुतीकरण किया जा सकता है।

पुस्तक की लेखिका एवं फोटोग्राफर डॉक्टर कायनात ने कहा कि इस कॉफी टेबल बुक में बोधगया स्थित 41 बौद्धविहारों का दस्तावेजीकरण किया गया है। महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो. रमा ने अतिथियों का स्वागत किया। पुस्तक के संपादक डॉ दिग्विजय सिंह राठौर ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संयोजन एवं संचालन डॉ. प्रभांशु ओझा एवं डॉ. पूजा झा मैती ने किया। इस अवसर पर बोगनविलिया आर्ट फाऊंडेशन की फाउंडर आलिया रफत शादमा, डॉ. ऋतु पाण्डेय , डॉ. अनिल पाण्डेय , डॉ. पुर्णेन्दु मिश्र ,आदित्य प्रकाश जी, प्रोफेसर सुभाजीत, शाल्वी दत्ता, डॉ स्वाति चौधरी समेत महाविद्यालय के शिक्षक एवं विद्यार्थी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

विधायक दिलीप पांडे का कट सकता है विधानसभा टिकट

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

दिल्ली विधानसभा में पार्टी के मुख्य सचेतक दिलीप पांडे ने शुक्रवार को संकेत दिया कि आगामी चुनाव में उन्हें तिमारपुर सीट से टिकट संभवत: नहीं मिलेगा।

पांडे ने कहा कि अब उनके लिए कुछ और करने का समय आ गया है। तिमारपुर से विधायक दिलीप पांडे ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि इस निर्वाचन क्षेत्र से कोई भी चुनाव लड़े, केवल अरविंद केजरीवाल ही दिल्ली के मुख्यमंत्री बनेंगे और लोग यह सुनिश्चित करेंगे। गौरतलब है कि हाल ही में शाहदरा से आप विधायक और दिल्ली विधानसभा के अध्यक्ष राम निवास गोयल ने केजरीवाल को एक पत्र लिखकर अपनी बढ़ती हुई उम्र का हवाला देते हुए चुनावी राजनीति से संन्यास लेने की बात कही थी।

दिल्ली की 70 सदस्यीय विधानसभा के लिए चुनाव फरवरी 2025 में होने हैं। आप के मुख्य सचेतक दिलीप पांडे ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, राजनीति में पहले संगठन निर्माण और फिर चुनाव लड़ने के दायित्व का निर्वहन करने के बाद, अब समय है कि आम आदमी पार्टी में ही रह कर कुछ और करने का।

डीयूएसआईबी के ढीले रवैया से उपराज्यपाल नाराज

- सीईओ को दिया निर्देश, जांच कर लापरवाही करने वाले अधिकारियों की तय करें जिम्मेदारी

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना ने दिल्ली शहरी आश्रय सुधार बोर्ड के ढीले-ढाले रवैये पर नाराजगी जताई है। डीयूएसआईबी ने अपनी भूमि और संपत्तियों पर नियमानुसार किराए की मूल्यवृद्धि नहीं की। इसके कारण सरकारी खजाने को भारी नुकसान हुआ। एलजी ने डीयूएसआईबी के सीईओ को निर्देश दिया कि वे जांच करें और लापरवाही करने वाले अधिकारियों की जिम्मेदारी तय करें। साथ ही, उन्होंने 30 दिनों के भीतर उनकी ग्राउंड रेंट के निर्धारण के लिए एक नीति तैयार करने को कहा है।

यह मामला उपराज्यपाल के संज्ञान में तब आया जब हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड की ओर से डीयूएसआईबी के खिलाफ दायर एक अपील याचिका की सुनवाई चल रही थी। जिसमें यह पाया गया कि अनिवार्य प्रावधान होने के बावजूद डीयूएसआईबी ने एचपीसीएल से लिए जाने वाले किराए का पुनरीक्षण नहीं किया। 1984 में, दिल्ली विकास प्राधिकरण ने शहजादा बाग औद्योगिक क्षेत्र और सराय बस्ती रोहतक रोड में एचपीसीएल को फिलिंग स्टेशन स्थापित करने के लिए 10 साल की लीज पर दो भूखंड आवंटित किए थे। इस समझौते में यह प्रावधान था कि हर पांच साल में किराए का पुनरीक्षण किया जाएगा। वर्ष 2010 में डीयूएसआईबी के गठन के बाद, इन संपत्तियों को डीयूएसआईबी को हस्तांतरित कर दिया गया और किराया वसूलने की जिम्मेदारी बोर्ड को सौंप दी गई। हालांकि, 1984 के समझौते के तहत हर पांच साल में किराए का पुनरीक्षण किया जाना था, लेकिन लगभग 30 वर्षों तक इसे नजरअंदाज किया गया। इसके बाद, 2018 में, डीयूएसआईबी ने अचानक एचपीसीएल से 35 करोड़ रुपये की एक मनमानी मांग की, जिसमें ब्याज भी शामिल था।

मामले की सुनवाई करते हुए उपराज्यपाल सक्सेना ने यह पाया कि यह मामला भूमि और संपत्ति प्रबंधन के लिए जिम्मेदार डीयूएसआईबी अधिकारियों की लापरवाही को उजागर करता है। उन्होंने यह जोर दिया कि इन अधिकारियों को डीयूएसआईबी के हितों की सुरक्षा के लिए समय पर ग्राउंड रेंट का पुनरीक्षण सुनिश्चित करने के लिए सक्रिय कदम उठाने चाहिए थे।

मुठभेड़ में ताजपुरिया के दो शूटर गिरफ्तार

- पुलिस की जवाबी कार्रवाई में बदमाशों के पैर में लगी गोली

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

दिल्ली पुलिस की विशेष शाखा ने रोहिणी इलाके में गोलीबारी की घटना के बाद टिल्लू ताजपुरिया गिरोह के दो शूटर को गिरफ्तार किया है। पुलिस के अनुसार, दोनों शूटर के पैरों में गोली लगी और उन्हें इलाज के लिए नजदीकी अस्पताल ले जाया गया। उनकी पहचान सोनीपत के नरेंद्र (24) और पानीपत के अभिषेक (22) के रूप में हुई है।

दो शूटर की मौजूदगी की सूचना मिलने के बाद ए गिरफ्तारियां की गईं। पुलिस उपायुक्त (विशेष प्रकोष्ठ) प्रणव तायल ने बताया, नरेंद्र और अभिषेक मुंडका थाना क्षेत्र में हुई हत्या के एक मामले में वांछित थे। नौ नवंबर को लूट के एक मामले में जमानत पर रिहा हुए अमित लकड़ा (26) की मुंडका में गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। टिल्लू ताजपुरिया-दविंदर बंबीहा गिरोह ने हत्या की जिम्मेदारी ली थी। अधिकारी ने बताया कि मोटरसाइकिल पर सवार होकर आए हमलावरों ने घटनास्थल से भागने से पहले लकड़ा पर कई गोलियां चलाईं। विशेष प्रकोष्ठ ने 14 नवंबर को यमुना नगर निवासी निहाल को गिरफ्तार किया, जो लकड़ा गोलीकांड के कथित शूटरों में से एक है। बाद में पुलिस ने एक और गिरफ्तारी की जबकि नरेंद्र समेत दो मुख्य शूटर फरार हो गए। डीसीपी ने कहा, बृहस्पतिवार को रोहिणी इलाके में दो शूटर के मौजूद होने की सूचना मिली थी। जैसे ही हमारी टीम ने कराला रोड पर मोटरसाइकिल पर दो संदिग्धों को देखा उन्हें रुकने का इशारा किया लेकिन उन्होंने पुलिस दल पर गोलियां चलाकर भागने की कोशिश की।

युवक ने पेट्रोल डालकर किया आत्मदाह

नई दिल्ली। ज्योति नगर थानांतर्गत एक युवक ने पेट्रोल डाल कर खुद को आग लगा ली, जिसकी उपचार के दौरान अस्पताल मे मौत हो गयी, फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है। मृतक की पहचान फरहान (24) के रूप मे हुई है।

वह अपने परिवार के साथ मकान नंबर-405, गली न -9, कर्दम पूरी मे रहता था उसके परिवार मे माता-पिता ओर दो भाई है। बीती 25 तारीख की सुबह करीब 4.30 बजे फरहान अपने घर के निचले तल पर पहुंचा ओर वहां खड़ी मोटरसाइकिल से पेट्रोल निकालकर अपने ऊपर डाल लिया और घर का मेन गेट बाहर से बंद करके गली मे दुकान से माचिस मांगकर खुद को आग लगा ली।

एलपीजी सिलेंडर में विस्फोट होने से छह लोग घायल

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

राष्ट्रीय राजधानी में शुक्रवार सुबह एलपीजी सिलेंडर में विस्फोट होने से एक किशोर और तीन महिलाओं समेत छह लोग घायल हो गए। अधिकारियों ने यह जानकारी दी।

दिल्ली अग्निशमन सेवा (डीएफएस) के एक अधिकारी ने बताया कि सुबह पांच बजे सिलेंडर में विस्फोट होने की सूचना मिली जिसके बाद दमकल विभाग की दो गाड़ियों को मौके पर भेजा गया। उन्होंने बताया कि विस्फोट इतना जबरदस्त था कि कमरे की एक दीवार ढह गई। एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि यह घटना नरेला-बवाना रोड पर लक्ष्मी नारायण मंदिर के निकट एक आवासीय परिसर में हुई। उन्होंने बताया कि यहां परिवार अलग-अलग कमरों में किराए पर रहते थे।

अधिकारी ने बताया कि घायलों की पहचान विजय (28), बॉबी (24), पूजा (36), नीलम (26), रेना देवी (34) और रितेश (16) के रूप में हुई है। दक्षिणी दिल्ली के ग्रेटर कैलाश इलाके में स्थित एक होटल और गीता कॉलोनी इलाके में स्थित झुग्गी बस्तियों में बृहस्पतिवार को देर रात आग लग गई। उन्होंने बताया कि इस अग्निकांड में किसी के हताहत होने की खबर नहीं है।

किसान मार्च: दिल्ली की सीमाओं पर पर सुरक्षा चाक चौबंद

- सिंघू बॉर्डर पर लगाये बेरिकेड और सुरक्षा बल तैनात किए

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

दिल्ली पुलिस ने पंजाब के किसानों के शुक्रवार को राष्ट्रीय राजधानी की ओर मार्च से पहले सीमाओं पर सुरक्षा कड़ी कर दी है। पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा, दिल्ली पुलिस अलर्ट पर है और सीमा पर सुरक्षा कड़ी कर दी गई है।

सिंघू बॉर्डर पर फिलहाल कम संख्या में बलों को तैनात किया गया है, लेकिन पंजाब-हरियाणा सीमा के शंभू बॉर्डर पर स्थिति के अनुसार इसे बढ़ाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि सीमा पर और दिल्ली के मध्य भाग में सुरक्षा व्यवस्थाओं के कारण यातायात प्रभावित होने की संभावना है। अधिकारी ने कहा कि पुलिस नोएडा सीमा पर भी नजर रख रही है, जहां उत्तर प्रदेश के किसानों का एक अन्य समूह धरना दे रहा है। किसानों ने फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य की कानूनी गारंटी समेत अपनी विभिन्न मांगों को लेकर इससे पहले 13 फरवरी और 21 फरवरी को राष्ट्रीय राजधानी की ओर मार्च करने का प्रयास किया था, लेकिन उन्हें सुरक्षा बलों ने पंजाब-हरियाणा सीमाओं पर शंभू और खनौरी में रोक दिया था।

संयुक्त किसान मोर्चा (गैर-राजनीतिक) और किसान मजदूर मोर्चा के बैनर तले किसान तब से शंभू और खनौरी सीमा बिंदुओं पर डेरा डाले हुए हैं। अंबाला जिला प्रशासन ने बुधवार को किसानों से मार्च पर पुनर्विचार करने और दिल्ली पुलिस से अनुमति लेने के बाद ही कोई कार्रवाई करने का आग्रह किया था लेकिन दिल्ली पुलिस ने कहा कि उसे पंजाब के किसानों से दिल्ली मार्च करने का कोई अनुरोध नहीं मिला है। अंबाला जिला प्रशासन ने भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (बीएनएसएस) की धारा 163 के तहत एक आदेश जारी किया है। इस धारा के तहत जिले में पांच या अधिक व्यक्तियों की किसी भी गैरकानूनी सभा पर रोक है। किसान नेता सरवन सिंह पंधेर ने सोमवार को कहा था कि किसानों के एक प्रतिनिधिमंडल ने अंबाला के पुलिस अधीक्षक से मुलाकात की और उन्हें छह दिसंबर को दिल्ली तक पैदल मार्च करने के बारे में जानकारी दी।

पंधेर ने कहा था कि प्रतिनिधिमंडल ने पुलिस को आश्वासन दिया है कि मार्च शांतिपूर्ण रहेगा और मार्ग पर यातायात अवरुद्ध नहीं किया जाएगा। किसान एमएसपी के अलावा कर्ज माफी, किसानों एवं खेत मजदूरों के लिए पेंशन और बिजली दरों में बढ़ोतरी न करने की मांग कर रहे हैं। वे 2021 की लखीमपुर खीरी हिंसा के पीड़ितों के लिए न्याय , भूमि अधिग्रहण अधिनियम 2013 को बहाल करने और 2020-21 में पिछले आंदोलन के दौरान मारे गए किसानों के परिवारों को मुआवजा दिए जाने की भी मांग कर रहे हैं।

एमआई और पायथन में महारत हासिल कर रहे पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय के छात्र

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

कड़कड़डूमा स्थित पी एम श्री केंद्रीय विद्यालय एजीसीआर कॉलोनी में कार्यशाला का आयोजन राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान किया जा रहा है।

उक्त कार्यशाला कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों के लिए आयोजित की गई है। कार्यशाला का शुभारंभ विद्यालय की प्रभारी प्राचार्या अंजली जैन द्वारा किया जाएगा। सत्र का संचालन फैकेल्टी अंशिक बंसल, विकास सिमर और देवांश ने किया। मार्गदर्शन कुमारी अल्पना अग्रवाल और कंचन रानी द्वारा किया गया।

कार्यशाला में सिखाए जा रहे नवाचार और अनुप्रयोगों की प्रगति के मूल्यांकन के लिए प्राचार्या जैन और कार्यकारी निदेशक सुभांशु तिवारी समय-समय कार्यशाला का औचक निरीक्षण भी करते रहते हैं। विद्यालय की पीएम प्रभारी शिल्पी सिंह ने बताया कि यह प्रशिक्षण पीए श्री योजना के तहत छात्रों को दी जा रही जो कि छात्रों को केन्द्रीय विद्यालय संगठन द्वारा दी जा रही विभिन्न अवसरों में से एक अमूल्य अवसर है। प्राचार्या अंजलि जैन ने कार्यशाला के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि पी एम केन्द्रीय विद्यालय एजीसीआर कालोनी ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और एनसीएफ 2023 में उल्लेखित सभी प्रावधानों को अपना धर्म मान कर आत्मसात किया है और पालन करने में सदैव अग्रसर रहा है।

जींद में तेज रफ्तार कार दुकान में घुसी, दो युवकों की मौत

पायनियर समाचार सेवा। जींद

हरियाणा के जींद जिले में एक तेज रफ्तार कार सफीदों-असंध बाईपास के किनारे बनी एक दुकान में जा घुसी, जिसमें दो युवकों की मौत हो गई। पुलिस के एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। अधिकारी ने बताया कि दुर्घटना सफीदों नगर के सफीदों-असंध बाईपास टी-प्वाईंट पर हुई और इस हादसे में गंभीर रुप से घायल हुए कार सवार युवकों को पानीपत स्थित एक निजी अस्पताल ले जाया गया, जहां चिकित्सकों ने दोनों को मृत घोषित कर दिया। अधिकारी के मुताबिक, मृत्तकों की पहचान जोरासी गांव के रहने वाले आदित्य उर्फ लीलू (22) और समालखा के रहने वाले राहुल (23) के रूप में हुई है।

अधिकारी ने बताया कि आदित्य व राहुल अपने कुछ दोस्तों के साथ सफीदों में एक शादी समारोह में शामिल होने आए थे और शादी से रात करीब 11 बजे वापिस लौट रहे थे। उन्होंने बताया कि असंध रोड़ टी प्वाईंट पर उनकी कार अनियंत्रित हो गई और सीधे एक दुकान में जा घुसी। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि टक्कर इतनी भीषण थी कि दुकान का अगला हिस्सा गिर गया तथा कार पूरी तरह से चकनाचूर हो गई। पुलिस के मुताबिक, घटना को देखकर राहगीर और आसपास के लोग भी मौके पर पहुंच गए तथा इतने में पीछे से उनके दोस्तों की कार आ गई। पुलिस ने बताया कि उन्होंने आननफानन में दोनों को बाहर निकाला और पहले सफीदों के एक निजी अस्पताल ले गए, जहां से उन्हे पानीपत के एक निजी अस्पताल में स्थानांतरित कर दिया गया। सफीदों थाना के सहायक उपनिरीक्षक जयबीर ने बताया कि इस घटना में दो युवकों की मौत हुई है।

एनएचपीसी लिमिटेड
(भारत सरकार का नवरत्न उद्यम)

एनएचपीसी कार्यालय परिसर, सेक्टर-33, फरीदाबाद-121003, (हरियाणा), (CIN: L40101HR1975GOI032564)

अनुसूची

[केंद्रीय विद्युत विनियामक आयोग (कारोबार का संचालन) विनियम, 2023 के विनियम 23 के खंड (7) के अनुसरण में प्रकाशित किया जाना है]

1. उपर्युक्त याचिकाकर्ता ने **सलाल पावर स्टेशन, टनकपुर पावर स्टेशन, चमेरा-I पावर स्टेशन, उड़ी-I पावर स्टेशन, चमेरा-II पावर स्टेशन, धौलीगंगा पावर स्टेशन, चमेरा-III पावर स्टेशन, पार्बती-III पावर स्टेशन** के लिए टैरिफ निर्धारण हेतु केंद्रीय विद्युत विनियामक आयोग, नई दिल्ली के समक्ष याचिका दाखिल की है।
2. उत्पादन स्टेशन के लाभार्थी निम्नलिखित राज्य हैं:

i) पीएसपीसीएल-पंजाब	ii) बीआरपीएल, बीवाईपीएल और टीपीडीडीएल-दिल्ली	iii) यूपीसीएल-उत्तराखंड
iv) एचपीएसईबी-हिमाचल प्रदेश	v) एचपीपीसी-हरियाणा	vi) इंजीनियरिंग विभाग-संघ शासित राज्य चंडीगढ़
vii) यूपीपीसीएल-उत्तर प्रदेश	viii) जेवीवीएनएल, जेडीवीवीएनएल और एवीवीवीएनएल-राजस्थान	ix) पीडीडी-जम्मू व कश्मीर

		सलाल पावर स्टेशन	टनकपुर पावर स्टेशन	चमेरा-I पावर स्टेशन	उड़ी-I पावर स्टेशन	चमेरा-II पावर स्टेशन	धौलीगंगा पावर स्टेशन	चमेरा-III पावर स्टेशन	पार्वती-III पावर स्टेशन
3.	जेनरेटिंग स्टेशन की क्षमता	690 मेगावाट	94.2 मेगावाट	540 मेगावाट	480 मेगावाट	300 मेगावाट	280 मेगावाट	231 मेगावाट	520 मेगावाट
4.	परियोजना की अनुमोदित पूंजी लागत	याचिका संख्या 229/जीटी/2020 में याचिका सं. 11/आरपी/2023 की समीक्षा में सीईआरसी द्वारा दिनांक 02.08.2024 के आदेश के अनुसार दिनांक 31.03.2019 की स्थिति के अनुसार 101517.90 लाख रुपए की अनुमति दी गई।	याचिका संख्या 144/जीटी/2020 में याचिका सं. 15/आरपी/2023 की समीक्षा में सीईआरसी दिनांक द्वारा 30.11.2022 के आदेश के अनुसार दिनांक 31.03.2019 की स्थिति के अनुसार 41819.95 लाख रुपए की अनुमति दी गई।	सीईआरसी द्वारा दिनांक 30.11.2022 के आदेश के अनुसार याचिका संख्या 145/जीटी/2020 में दिनांक 31.03.2019 की स्थिति के अनुसार 208496.86 लाख रुपए की अनुमति दी गई।	याचिका संख्या 255/जीटी/2020 में याचिका सं. 31/आरपी/2023 की समीक्षा में सीईआरसी द्वारा दिनांक 31.07.2024 के आदेश के अनुसार दिनांक 31.03.2019 की स्थिति के अनुसार 343242.07 लाख रुपए की अनुमति दी गई।	सीईआरसी द्वारा दिनांक 06.01.2024 के आदेश के अनुसार याचिका संख्या 291/जीटी/2020 में दिनांक 31.03.2024 की स्थिति के अनुसार 202508.06 लाख रुपए की अनुमति दी गई।	सीईआरसी द्वारा दिनांक 18.08.2024 के आदेश के अनुसार याचिका संख्या 284/जीटी/2020 में दिनांक 31.03.2019 की स्थिति के अनुसार 175318.24 लाख रुपए की अनुमति दी गई।	सीईआरसी द्वारा दिनांक 09.06.2023 के आदेश के अनुसार याचिका संख्या 642/जीटी/2020 में दिनांक 31.03.2024 की स्थिति के अनुसार 209224.86 लाख रुपए की अनुमति दी गई।	सीईआरसी द्वारा दिनांक 31.03.2024 के आदेश के अनुसार याचिका संख्या 96/जीटी/2020 में दिनांक 31.03.2019 की स्थिति के अनुसार 268863.76 लाख रुपए की अनुमति दी गई।
	पूंजीगत लागत को अनुमोदित करने वाला प्राधिकरण	सीईआरसी	सीईआरसी	सीईआरसी	सीईआरसी	सीईआरसी	सीईआरसी	सीईआरसी	सीईआरसी
5.	वाणिज्यिक प्रचालन की अनुसूचित तारीख	पहले से ही वाणिज्यिक प्रचालन में है	पहले से ही वाणिज्यिक प्रचालन में है	पहले से ही वाणिज्यिक प्रचालन में है	पहले से ही वाणिज्यिक प्रचालन में है	पहले से ही वाणिज्यिक प्रचालन में है	पहले से ही वाणिज्यिक प्रचालन में है	पहले से ही वाणिज्यिक प्रचालन में है	पहले से ही वाणिज्यिक प्रचालन में है
6.	वाणिज्यिक प्रचालन की वास्तविक तारीख	01.04.1995	01.04.1993	01.05.1994	01.06.1997	31.03.2004	01.11.2005	04.07.2012	06.06.2014
7.	वाणिज्यिक प्रचालन की तारीख को पूंजी लागत	80341 लाख रुपए	357.68 करोड़ रुपए	1969.76 करोड़ रुपए	316614 लाख रुपए	195606.49 लाख रुपए	163139.66 लाख रुपए	199237.59 लाख रुपए	253864.11 लाख रुपए

8. टैरिफ के ब्योरे: (लाख रुपए में)

क्र. सं.	हाइड्रो पावर जेनरेटिंग स्टेशन सलाल पावर स्टेशन	पिछले वर्ष के लिए टैरिफ (2018-19)	वर्ष वार टैरिफ जिसके निर्धारण किए जाने की माँग की गई				
			2019-20	2020-21	2021-22	2022-23	2023-24
1.	वार्षिक नियत प्रभार	33002.83	37193.83	38212.44	39214.74	41867.09	44733.53
2.	प्राथमिक ऊर्जा प्रभार	प्राथमिक ऊर्जा प्रभार वार्षिक नियत प्रभार का हिस्सा है और यह वार्षिक नियत प्रभार का 50% है।					

क्र. सं.	हाइड्रो पावर जेनरेटिंग स्टेशन सलाल पावर स्टेशन	पिछले वर्ष के लिए टैरिफ (2023-24)	वर्ष वार टैरिफ जिसके निर्धारण किए जाने की माँग की गई				
			2024-25	2025-26	2026-27	2027-28	2028-29
1.	वार्षिक नियत प्रभार	44733.53	38534.34	40343.70	42219.41	44007.37	45921.10
2.	प्राथमिक ऊर्जा प्रभार	प्राथमिक ऊर्जा प्रभार वार्षिक नियत प्रभार का हिस्सा है और यह वार्षिक नियत प्रभार का 50% है।					

क्र. सं.	हाइड्रो पावर जेनरेटिंग स्टेशन टनकपुर पावर स्टेशन	पिछले वर्ष के लिए टैरिफ (2018-19)	वर्ष वार टैरिफ जिसके निर्धारण किए जाने की माँग की गई				
			2019-20	2020-21	2021-22	2022-23	2023-24
1.	वार्षिक नियत प्रभार	12926.06	16525.28	17642.71	17746.87	18934.20	19932.77
2.	प्राथमिक ऊर्जा प्रभार	प्राथमिक ऊर्जा प्रभार वार्षिक नियत प्रभार का हिस्सा है और यह वार्षिक नियत प्रभार का 50% है।					

क्र. सं.	हाइड्रो पावर जेनरेटिंग स्टेशन टनकपुर पावर स्टेशन	पिछले वर्ष के लिए टैरिफ (2023-24)	वर्ष वार टैरिफ जिसके निर्धारण किए जाने की माँग की गई				
			2024-25	2025-26	2026-27	2027-28	2028-29
1.	वार्षिक नियत प्रभार	19932.77	18238.91	19104.19	20152.09	21166.10	22135.16
2.	प्राथमिक ऊर्जा प्रभार	प्राथमिक ऊर्जा प्रभार वार्षिक नियत प्रभार का हिस्सा है और यह वार्षिक नियत प्रभार का 50% है।					

क्र. सं.	हाइड्रो पावर जेनरेटिंग स्टेशन चमेरा-I पावर स्टेशन	पिछले वर्ष के लिए टैरिफ (2018-19)	वर्ष वार टैरिफ जिसके निर्धारण किए जाने की माँग की गई				
			2019-20	2020-21	2021-22	2022-23	2023-24
1.	वार्षिक नियत प्रभार	32,903.67	32,930.19	32,580.59	33,224.32	35,933.20	36,770.60
2.	प्राथमिक ऊर्जा प्रभार	प्राथमिक ऊर्जा प्रभार वार्षिक नियत प्रभार का हिस्सा है और यह वार्षिक नियत प्रभार का 50% है।					

क्र. सं.	हाइड्रो पावर जेनरेटिंग स्टेशन चमेरा-I पावर स्टेशन	पिछले वर्ष के लिए टैरिफ (2023-24)	वर्ष वार टैरिफ जिसके निर्धारण किए जाने की माँग की गई				
			2024-25	2025-26	2026-27	2027-28	2028-29
1.	वार्षिक नियत प्रभार	36,770.60	37,570.28	38,997.53	40,939.16	42,798.05	44,284.09
2.	प्राथमिक ऊर्जा प्रभार	प्राथमिक ऊर्जा प्रभार वार्षिक नियत प्रभार का हिस्सा है और यह वार्षिक नियत प्रभार का 50% है।					

क्र. सं.	हाइड्रो पावर जेनरेटिंग स्टेशन उड़ी-I पावर स्टेशन	पिछले वर्ष के लिए टैरिफ (2018-19)	वर्ष वार टैरिफ जिसके निर्धारण किए जाने की माँग की गई				
			2019-20	2020-21	2021-22	2022-23	2023-24
1.	वार्षिक नियत प्रभार	37571.93	42541.62	42273.18	43576.54	47885.01	48877.88
2.	प्राथमिक ऊर्जा प्रभार	प्राथमिक ऊर्जा प्रभार वार्षिक नियत प्रभार का हिस्सा है और यह वार्षिक नियत प्रभार का 50% है।					

क्र. सं.	हाइड्रो पावर जेनरेटिंग स्टेशन उड़ी-I पावर स्टेशन	पिछले वर्ष के लिए टैरिफ (2023-24)	वर्ष वार टैरिफ जिसके निर्धारण किए जाने की माँग की गई				
			2024-25	2025-26	2026-27	2027-28	2028-29
1.	वार्षिक नियत प्रभार	48877.88	49875.76	51847.04	54135.80	55819.82	57447.84
2.	प्राथमिक ऊर्जा प्रभार	प्राथमिक ऊर्जा प्रभार वार्षिक नियत प्रभार का हिस्सा है और यह वार्षिक नियत प्रभार का 50% है।					

क्र. सं.	हाइड्रो पावर जेनरेटिंग स्टेशन चमेरा-II पावर स्टेशन	पिछले वर्ष के लिए टैरिफ (2018-19)	वर्ष वार टैरिफ जिसके निर्धारण किए जाने की माँग की गई				
			2019-20	2020-21	2021-22	2022-23	2023-24
1.	वार्षिक नियत प्रभार	26325.19	29271.22	29413.27	29826.71	32486.72	33529.07
2.	प्राथमिक ऊर्जा प्रभार	प्राथमिक ऊर्जा प्रभार वार्षिक नियत प्रभार का हिस्सा है और यह वार्षिक नियत प्रभार का 50% है।					

क्र. सं.	हाइड्रो पावर जेनरेटिंग स्टेशन चमेरा-II पावर स्टेशन	पिछले वर्ष के लिए टैरिफ (2023-24)	वर्ष वार टैरिफ जिसके निर्धारण किए जाने की माँग की गई				
			2024-25	2025-26	2026-27	2027-28	2028-29
1.	वार्षिक नियत प्रभार	33529.07	32419.05	33399.03	34477.17	35652.53	36842.77
2.	प्राथमिक ऊर्जा प्रभार	प्राथमिक ऊर्जा प्रभार वार्षिक नियत प्रभार का हिस्सा है और यह वार्षिक नियत प्रभार का 50% है।					

क्र. सं.	हाइड्रो पावर जेनरेटिंग स्टेशन धौलीगंगा पावर स्टेशन	पिछले वर्ष के लिए टैरिफ (2018-19)	वर्ष वार टैरिफ जिसके निर्धारण किए जाने की माँग की गई				
			2019-20	2020-21	2021-22	2022-23	2023-24
1.	वार्षिक नियत प्रभार	24131.61	26487.40	25748.91	26223.81	28467.62	29089.68
2.	प्राथमिक ऊर्जा प्रभार	प्राथमिक ऊर्जा प्रभार वार्षिक नियत प्रभार का हिस्सा है और यह वार्षिक नियत प्रभार का 50% है।					

क्र. सं.	हाइड्रो पावर जेनरेटिंग स्टेशन धौलीगंगा पावर स्टेशन	पिछले वर्ष के लिए टैरिफ (2023-24)	वर्ष वार टैरिफ जिसके निर्धारण किए जाने की माँग की गई				
			2024-25	2025-26	2026-27	2027-28	2028-29
1.	वार्षिक नियत प्रभार	29089.68	29044.03	29909.31	30870.23	31874.80	32830.94
2.	प्राथमिक ऊर्जा प्रभार	प्राथमिक ऊर्जा प्रभार वार्षिक नियत प्रभार का हिस्सा है और यह वार्षिक नियत प्रभार का 50% है।					

क्र. सं.	हाइड्रो पावर जेनरेटिंग स्टेशन चमेरा-III पावर स्टेशन	पिछले वर्ष के लिए टैरिफ (2018-19)	वर्ष वार टैरिफ जिसके निर्धारण किए जाने की माँग की गई				
			2019-20	2020-21	2021-22	2022-23	2023-24
1.	वार्षिक नियत प्रभार	37224.92	41548.88	41648.43	41415.09	42972.19	43032.82
2.	प्राथमिक ऊर्जा प्रभार	प्राथमिक ऊर्जा प्रभार वार्षिक नियत प्रभार का हिस्सा है और यह वार्षिक नियत प्रभार का 50% है।					

क्र. सं.	हाइड्रो पावर जेनरेटिंग स्टेशन चमेरा-III पावर स्टेशन	पिछले वर्ष के लिए टैरिफ (2023-24)	वर्ष वार टैरिफ जिसके निर्धारण किए जाने की माँग की गई				
			2024-25	2025-26	2026-27	2027-28	2028-29
1.	वार्षिक नियत प्रभार	43032.82	39647.61	31231.35	31931.30	32506.26	34666.51
2.	प्राथमिक ऊर्जा प्रभार	प्राथमिक ऊर्जा प्रभार वार्षिक नियत प्रभार का हिस्सा है और यह वार्षिक नियत प्रभार का 50% है।					

क्र. सं.	हाइड्रो पावर जेनरेटिंग स्टेशन पार्बती-III पावर स्टेशन	पिछले वर्ष के लिए टैरिफ (2018-19)	वर्ष वार टैरिफ जिसके निर्धारण किए जाने की माँग की गई				
			2019-20	2020-21	2021-22	2022-23	2023-24
1.	वार्षिक नियत प्रभार	50549.34	48,823.82	48,250.98	47,705.05	49,515.13	49,350.90
2.	प्राथमिक ऊर्जा प्रभार	प्राथमिक ऊर्जा प्रभार वार्षिक नियत प्रभार का हिस्सा है और यह वार्षिक नियत प्रभार का 50% है।					

क्र. सं.	हाइड्रो पावर जेनरेटिंग स्टेशन पार्बती-III पावर स्टेशन	पिछले वर्ष के लिए टैरिफ (2023-24)	वर्ष वार टैरिफ जिसके निर्धारण किए जाने की माँग की गई				
			2024-25	2025-26	2026-27	2027-28	2028-29
1.	वार्षिक नियत प्रभार	49,350.90	49,965.91	50,082.05	49,981.58	38,590.12	40,442.07
2.	प्राथमिक ऊर्जा प्रभार	प्राथमिक ऊर्जा प्रभार वार्षिक नियत प्रभार का हिस्सा है और यह वार्षिक नियत प्रभार का 50% है।					

10. टैरिफ निर्धारण के लिए किए गए आवेदन की एक प्रति वेबसाइट https://www.nhpcindia.com पर पोस्ट की गई है:
11. याचिका में निहित टैरिफ निर्धारण हेतु प्रस्तावों पर सुझाव एवं आपत्तियां, यदि कोई हो तो लाभार्थी सहित किसी भी व्यक्ति द्वारा याचिकाकर्ता को उसकी एक प्रति के साथ आयोग के ई-फाइलिंग पोर्टल पर इस सूचना के प्रकाशन के 30 दिनों के भीतर दाखिल की जा सकती है।

स्थान: फरीदाबाद
दिनांक: 29.11.2024

(अजय श्रीवास)
महाप्रबंधक (वाणिज्यिक), वाणिज्यिक विभाग

बच्चा अपहरण कर युवक ने रखी शर्त

पीड़ित से कहा- लड़का वापस चाहिए तो अपने पड़ोस में रह रही मेरी पत्नी से मिलवा दो

- अलग रह रही पत्नी से मिलने के लिए पड़ोसी के बच्चे को किया अगवा
- पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार करके बच्चे को सकुशल बरामद किया

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

अलग रह रही पत्नी से मिलने के लिए एक व्यक्ति ने पड़ोसी के बच्चे का ही अपहरण कर लिया। बच्चे के पिता को फोन करके कहा कि अगर बच्चा चाहिए तो अपने पड़ोस में रहने वाली उसकी पत्नी से उसे मिलवा दो। बच्चे के अपहरण की सूचना मिलने पर पुलिस हरकत में आई और बच्चे को सकुशल बरामद करने में जुट गई।

जानकारी के अनुसार पुलिस चौकी नाथूपुर में एक व्यक्ति ने लिखित शिकायत देकर कहा कि गुरुवार शाम के समय उसका 10 वर्षीय लड़का पार्क में खेलने गया था। वह देर रात वापस नहीं आया। उन्होंने बच्चे की तलाश की।

इसी बीच पीड़ित के मोबाइल पर एक फोन आया। फोन करने वाले ने कहा कि उनका लड़का उसके पास है। लड़के को वापस करने के बदले अपने पड़ोस में रहने वाली मेरी पत्नी से मुझे मिलवा दो। इस शिकायत पर थाना डीएलएफ फेज-3 में केस दर्ज कर लिया गया। पुलिस चौकी नाथूपुर की पुलिस टीम ने आरोपी को शुक्रवार को सरहोल बॉर्डर के नजदीक से काबू करके बच्चे को आरोपी के कब्जे से सकुशल बरामद कर लिया।

आरोपी की पहचान वरुण (25) निवासी गांव बंटापुर जिला हरदोई (उत्तर-प्रदेश) हाल निवासी नयागांव फेज-2 ग्रेटर नोएडा (उत्तर-प्रदेश) के रूप में हुई है।

आपराधिक प्रवृत्ति का है वरुण

पुलिस को पूछताछ में पता चला कि आरोपी वरुण नोएडा में रहता है। अपहृत किए गए बच्चे के पड़ोस में वरुण की पत्नी रहती है। वह गुरुग्राम में ही काम करती है। उसने अपने पति से मिलने से इंकार कर दिया था। अपनी पत्नी से मिलने के लिए आरोपी वरुण ने पत्नी के पड़ोस में रहने वाले बच्चे का अपहरण कर लिया। पुलिस के अनुसार आरोपी के आपराधिक रिकॉर्ड से पता चला है कि उस पर चोरी करने के संबंध में एक केस दर्ज है। आरोपी वरुण वर्ष 2021 में अपहरण के एक मामले में जेल जाने के बाद अगस्त 2023 में जमानत पर बाहर आया था।

दस हजार से अधिक सदस्य बनाकर मोदी मित्र बने बोधराज सीकरी

- भाजपा के सदस्यता अभियान में 10008 सदस्य बनाए

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

बोधराज सीकरी, भाजपा नेता।

भाजपा के वरिष्ठ नेता बोधराज सीकरी ने संगठन को मजबूत करने में बेहतर प्रदर्शन किया है। उन्होंने 10008 नए सदस्यों को पार्टी से जोड़कर मोदी मित्र का खिताब प्राप्त कर लिया है।

बोधराज ने कहा कि प्रधानमंत्री की प्रेरणादायक नेतृत्व शैली ने उन्हें और अधिक समर्पित होकर काम करने के लिए प्रेरित किया है। उन्होंने सभी सदस्यों से आग्रह किया कि वे पार्टी की नीतियों का प्रचार-प्रसार करें और संगठन को मजबूत बनाने में योगदान दें। भाजपा के स्थानीय और केंद्रीय नेतृत्व ने भी बोध राज सीकरी के इस योगदान की सराहना की है। मोदी मित्र का खिताब पार्टी के ऐसे कार्यकर्ताओं को दिया जाता है, जो संगठन को जमीनी स्तर पर मजबूत करने और पार्टी की नीतियों को प्रभावी ढंग से लोगों तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और दस हजार से अधिक सदस्य बनाते हैं। बोध राज सीकरी की यह उपलब्धि न केवल पार्टी के लिए गर्व का विषय है, बल्कि अन्य कार्यकर्ताओं के लिए प्रेरणा का स्रोत भी है। उनका यह प्रयास भाजपा के संगठनात्मक ढांचे को और मजबूत करेगा। उनकी कार्यशैली को देखते हुए संगठन ने इन्हें हाल ही में सक्रिय सदस्यता अभियान का गुरुग्राम की चार विधानसभा का संयोजक नियुक्त किया था।

सैनिटेशन सिक्योरिटी फोर्स ने अवैध रूप से मलबा व कचरा डंपिंग करने वाले 6 वाहन पकड़े

गुरुग्राम। अवैध रूप से सार्वजनिक स्थानों पर कचरा व मलबा फैंकने वालों पर प्रभावी कार्रवाई व निगरानी के लिए गठित नगर निगम की सैनिटेशन सिक्योरिटी फोर्स ने एक ही रात में 6 वाहनों को जब्त किया है। गठन के साथ ही यह फोर्स पूरी तरह से एक्शन मोड में आ गई है। शहर में कचरा व मलबा फेंकने वालों पर निगरानी व कार्रवाई प्रक्रिया को और अधिक बढ़ा दिया है। इसके तहत निगम द्वारा सैनिटेशन सिक्योरिटी फोर्स का गठन किया गया है, जिसमें सभी सदस्य आर्म्स होल्डर शामिल हैं। फोर्स ने गुरुवार-शुक्रवार की रात्रि विभिन्न क्षेत्रों की निगरानी के दौरान लेजर वैली सेक्टर-29, फव्वारा चौक, खांडसा रोड सेक्टर-37, देवीलाल कॉलोनी, जवाहर नगर व कटारिया चौक से 6 वाहनों को पकड़ा है। निगमायुक्त ने बताया कि पकड़े गए वाहनों में कुछ बिना नंबरों के भी शामिल हैं, जिनके बारे में कानूनी कार्रवाई की प्रक्रिया अपनाई जा रही है। इसके अलावा कुछ वाहन ऐसे भी मिले हैं, जो नगर निगम के नाम का उपयोग कर रहे थे। इनमें वाहन नंबर एचआर-14क्यू 5116 तथा एचआर 26 सीजी 6252 शामिल हैं। इन वाहनों पर नगर निगम का नाम लिखकर अवैध रूप से कचरा व मलबा डंपिंग का कार्य किया जा रहा था।

सोसाइटियों में सुविधाएं उपलब्ध कराने को अतिरिक्त निगमायुक्त से मिला प्रतिनिधिमंडल

- सरपंच सुंदर लाल यादव के नेतृत्व में आधा दर्जन सोसाइटी के लोग पहुंचे नगर निगम

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

मानेसर नगर निगम के अतिरिक्त आयुक्त को मांग पत्र सौंपते सरपंच सुंदर लाल यादव व सोसाइटियों के लोग।

सेक्टर-84 की आधा दर्जन सोसायटी का एक प्रतिनिधिमंडल समस्याओं को लेकर भाजपा हरियाणा पंचायती राज प्रकोष्ठ के प्रदेश सह-संयोजक सरपंच सुंदर लाल यादव के नेतृत्व में नगर निगम मानेसर के अतिरिक्त आयुक्त जितेंद्र कुमार से मिला। समाधान शिविर के दौरान ज्ञापन सौंपकर प्रतिनिधिमंडल ने समस्याओं के जल्द समाधान की मांग की।

कोरलवुड अल्मेरिया सोसायटी, स्पेज प्रिवी, दीवान, गुड़गांव वन एवं मैप्सको कासाबेला आदि सोसायटी के प्रतिनिधिमंडल का सरपंच सुंदर लाल यादव ने नेतृत्व करते हुए कहा कि जल्दी ही इन समस्याओं का समाधान नगर निगम द्वारा किया जायेगा एसएस कोरल से विजय सिंह कोषाध्यक्ष, अरुण पाटिल, जगदीश विज, गुलशन ग्रोवर कोरलवुड अल्मेरिया से, यादराम शर्मा, बालकिशन, अरुण जैन एवं मुकेश खन्ना स्पेज प्रिवी से, धर्मवीर यादव अध्यक्ष मैप्सको कासाबेला, आशिम, राकेश गुप्ता व गुड़गांव-वन से संदीप राणा और विजय सिंह ने बताया कि 18 अक्टूबर के पत्र के बारे में चर्चा की। उस पत्र में निगमायुक्त को सीपी ग्राम पोर्टल के माध्यम से एक शिकायत भेजी गई थी, जिसमें 30 गुणा 30 व्यास की कॉमन कवर ट्रेंच के निर्माण के बारे में लिखा गया था। क्षेत्र में सभी तरह की सर्विस लाइन डालने के लिए ओपन कवर की सुविधा की मांग की गई थी। इसके लिए अतिरिक्त बजट स्वीकृत किया गया। सिकंदरपुर-सीही रोड के साथ ट्रेंच का निर्माण करने, पोर्टल पर शिकायत में मुख्य सड़क से कोरलवुड सोसायटी तक 18 व्यास की कॉमन पेयजल पाइप लाइन डालने का भी अनुरोध किया गया, ताकि नवनिर्मित सडक़ की बार-बार खुदाई से बचा जा सके। वर्तमान में प्रत्येक सोसायटी ने अपनी पानी की पाइप लाइन डाल रखी है।

अतिरिक्त आयुक्त ने प्रतिनिधिमंडल को दोनों प्रस्तावों की जांच करने तथा आवश्यक कार्रवाई करने का आश्वासन दिया। प्रतिनिधिमंडल द्वारा यह भी अवगत कराया गया कि क्षेत्र में सफाई की स्थिति सबसे खराब है। पर्याप्त सफाई कर्मचारियों की तैनाती करके सफाई का कार्य नियमित करने की जरूरत है। प्रतिनिधिमंडल ने बताया कि क्षेत्र में स्ट्रीट लाइट की उचित व्यवस्था करने का भी अनुरोध किया गया। निर्माणाधीन सड़क के कारण निवासियों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। साथ ही दुकानदारों और रेहड़ीवालों ने भी आम क्षेत्र पर अतिक्रमण कर लिया है। अधिकारी ने सभी शिकायतों के तुरंत निवारण के लिए संबंधित अधिकारी को निर्देश दिए। साथ ही उन्होंने आश्वासन दिया कि 3-4 दिनों के बाद वे स्वयं आरडब्ल्यूए प्रतिनिधियों की मौजूदगी में प्रभावित क्षेत्र का दौरा करेंगे।

बाईपास झुग्गी क्षेत्र में बाल विवाह न करने की दिलाई शपथ

फरीदाबाद। केंद्र सरकार द्वारा बाल विवाह के खिलाफ अभियान 'बाल विवाह मुक्त भारत' की शुरुआत की गई है। देश में बाल विवाह की घटनाओं पर अंकुश लगाने और लोगों को इस परंपरा के दुष्परिणामों से अवगत कराने के लिए जिले के सरकारी स्कूलों और शिक्षण संस्थानों में विद्यार्थियों को बाल विवाह न करने की शपथ दिलाई जा जिसके तहत आज बाईपास झुग्गी क्षेत्र में जागरूकता कार्यक्रम चलाकर बाल विवाह न करने के लिए जागरूक किया गया।

इस अवसर पर हेमा कौशिक ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में बाल विवाह के खात्मे के लिए महिला एवं बाल कल्याण मंत्रालय की ओर से शुरू किया गया व अभियान इस बात का सबूत है कि सरकार इस सामाजिक बुराई की गंभीरता से अवगत है। उन्होंने लोगों को बाल विवाह मुक्त भारत अभियान से जुड़ने के लिए प्रेरित किया। किसी भी स्थिति में बाल विवाह नहीं होना चाहिए। उन्होंने कहा कि बाल विवाह उचित नहीं है। नन्ही-सी उम्र में ही यदि विवाह होता है तो बच्चों का भविष्य दांव पर लग जाता है। निर्धारित आयु सीमा पूर्ण होने पर ही विवाह करना चाहिए। इसके लिए कानून विद्यमान है, किंतु फिर भी कुछ लोग बाल विवाह की ओर कदम बढ़ा देते हैं।

डॉ. राज नेहरू होंगे मुख्यमंत्री नायब सिंह के ओएसडी

- प्रशासनिक और अकादमिक अनुभव रखने वाले नेहरू कार्पोरेट के भी हैं महारथी

पायनियर समाचार सेवा। पलवल।

डॉ. राज नेहरू।

श्री विश्वकर्मा कौशल विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. राज नेहरू को मुख्यमंत्री नायब सैनी का ओएसडी नियुक्त किया गया है। प्रशासनिक और अकादमिक अनुभव रखने वाले डॉ. राज नेहरू शिक्षाविद् के साथ बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्तित्व हैं। डॉ. राज नेहरू का दो दशक से भी ज्यादा कार्पोरेट का अनुभव है। वह आईबीएम और कॉन्सेंट्रिक्स जैसी कंपनियों में बड़े पदों पर रह चुके हैं

डॉ. राज नेहरू देश के पहले राजकीय कौशल विश्वविद्यालय के संस्थापक कुलपति हैं। कौशल क्षेत्र में उनका लंबा अनुभव है, इससे पहले वे कौशल विकास निगम के मिशन डायरेक्टर रह चुके हैं। डॉ. राज नेहरू यूजीसी और एआईसीटीई सहित देश के बड़े संस्थानों के सदस्य हैं।

2016 में उन्हें श्री विश्वकर्मा कौशल विश्वविद्यालय का कुलपति नियुक्त किया गया था। उनके पास दो अन्य विश्वविद्यालयों का भी अतिरिक्त प्रभार रह चुका है। कुलपति डॉ. राज नेहरू जाने-माने लेखक भी हैं। अभी तक उनकी चार पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। हाल ही में प्रकाशित हुई उनकी पुस्तक अहं शिवम् देशभर में चर्चाओं है।

कौशल योग्यता फ्रेमवर्क कमेटी के अध्यक्ष हैं राज

कुलपति डॉ. राज नेहरू देशभर में राष्ट्रीय कौशल योग्यता फ्रेमवर्क (एनएसक्यूएफ) के तहत कौशल-आधारित व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को तैयार करने वाली यूजीसी समिति के अध्यक्ष हैं। वह एआईसीटीई, यूजीसी, एमएसडीई, आईआईएलएम विश्वविद्यालय, जम्मू सेंट्रल यूनिवर्सिटी, नैसकॉम सेक्टर स्किल काउंसिल, गुरु जम्भेश्वर विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, वाईएमसीए विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, गुरुग्राम विश्वविद्यालय और ग्लोबल विलेज फाउंडेशन सहित विभिन्न संगठनों के बोर्ड और समितियों के सदस्य के तौर पर काम कर चुके हैं।

जत्थे को रोके जाने के बाद किसानों का मार्च एक दिन के लिए स्थगित

सुरक्षाकर्मियों से टकराव: पंजाब-हरियाणा सीमा पर आंसू गैस के गोले लगने से कुछ किसान घायल, सड़क से लोहे की कीलें और कटीले तार उखाड़ते नजर आए कुछ किसान

किसानों पर आंसू गैस के गोले दागते सुरक्षाकर्मी।

आंदोलनकारियों को रोकने के लिए लगाए गए कटीले तार उखाड़ते किसान।

घायल किसान को इलाज के लिए ले जाते उसके अन्य साथी।

पायनियर समाचार सेवा। शंभू

पंजाब-हरियाणा सीमा पर आंसू गैस के गोले लगने से कुछ किसानों के घायल होने के बाद प्रदर्शनकारी किसानों ने न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) के लिए कानूनी गारंटी समेत विभिन्न मांगों को लेकर दिल्ली की ओर अपना पैदल मार्च शुक्रवार को दिन भर के लिए स्थगित कर दिया। इससे पहले, 101 किसानों के एक जत्थे ने शुक्रवार को दिल्ली के लिए पैदल मार्च शुरू किया, लेकिन उन्हें कुछ मीटर बाद ही हरियाणा के सुरक्षा कर्मियों द्वारा लगाए गए बहुस्तरीय अवरोधक के कारण रूकना पड़ा। जब कुछ किसान अवरोधकों के पास पहुंच गए, तो सुरक्षाकर्मियों ने आंसू गैस का इस्तेमाल किया। कुछ किसान सड़क से लोहे की कीलें और कंटीले तार उखाड़ते नजर आए और उन्होंने धुएं से बचने के लिए गीले जूट के बोरे से अपने चेहरे ढके हुए थे।

सतनाम वाहेगुरु का उद्घोष करते हुए और अपने यूनियन के झंडे थामे हुए जत्थे के कई किसानों ने शुरुआती अवरोधकों को आसानी से पार कर लिया, लेकिन आगे नहीं बढ़ सके। विभिन्न किसान यूनियन के झंडे थामे कुछ किसानों ने घग्गर नदी पर बनाए गए पुल पर सुरक्षाकर्मियों द्वारा लगाई गई लोहे की जाली को नीचे धकेल दिया। प्रदर्शनकारियों में से एक टिन शेड की छत पर चढ़ गया, जहां सुरक्षा बल तैनात थे। उसे नीचे उतरने के लिए मजबूर किया गया। शंभू बॉर्डर पर पानी की बौछारें करने वाले वाहन भी तैनात किए गए हैं। हरियाणा पुलिस ने किसानों से आगे न बढ़ने को कहा और अंबाला जिला प्रशासन द्वारा भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (बीएनएसएस) की धारा 163 के तहत निषेधाज्ञा लागू होने का हवाला दिया। इससे पहले, पंधेर ने मार्च शुरू करने वाले 101 किसानों को मरजीवड़ा (ऐसे लोग, जो किसी मकसद के लिए जान भी देने को तैयार हों) कहा था। पंधेर ने हरियाणा प्रशासन द्वारा पैदल मार्च पर रोक लगाए जाने की आलोचना की। किसान फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य की कानूनी गारंटी के लिए केंद्र पर दबाव बनाने को लेकर दिल्ली की ओर मार्च कर रहे हैं। हरियाणा सरकार ने शुक्रवार को अंबाला जिले के 11 गांवों में मोबाइल इंटरनेट और एक साथ कई लोगों को संदेश भेजने की सुविधा बल्क एसएमएस सेवा पर नौ दिसंबर तक रोक लगा दी। अंबाला के डंगडेहरी, लोहगढ़, मानकपुर, ददियाना, बारी घेल, लार्स, कालू माजरा, देवी नगर, सद्दोपुर, सुल्तानपुर और काकरू गांवों में प्रतिबंध लागू कर दिया गया।

संयुक्त किसान मोर्चा (गैर-राजनीतिक) और किसान मजदूर मोर्चा के बैनर तले एकत्र हुए किसान मांग कर रहे हैं कि केंद्र उन्हें एमएसपी के लिए कानूनी गारंटी दे।

सुरक्षा बलों द्वारा दिल्ली की ओर मार्च करने से रोके जाने के बाद वे 13 फरवरी से पंजाब और हरियाणा के बीच शंभू और खनौरी बॉर्डर पर डेरा डाले हुए हैं। किसान एमएसपी के अलावा कर्ज माफी, किसानों एवं खेत मजदूरों के लिए पेंशन और बिजली दरों में बढ़ोतरी न करने की मांग कर रहे हैं। वे 2021 की लखीमपुर खीरी हिंसा के पीड़ितों के लिए न्याय, भूमि अधिग्रहण अधिनियम 2013 को बहाल करने और 2020-21 में पिछले आंदोलन के दौरान मारे गए किसानों के परिवारों को मुआवजा दिए जाने की भी मांग कर रहे हैं।

बैठक कर करेंगे रणनीति पर चर्चा

एक किसान नेता ने दावा किया कि हरियाणा के सुरक्षाकर्मियों द्वारा आंसू गैस के गोले दागे जाने के कारण पांच से छह प्रदर्शनकारी किसान घायल हो गए। बाद में किसान नेता सरवन सिंह पंधेर ने कहा कि किसानों के घायल होने के बाद प्रदर्शनकारियों ने शुक्रवार को दिल्ली की ओर अपना पैदल मार्च स्थगित कर दिया। उन्होंने कहा कि घायल किसानों को अस्पताल ले जाया गया। पंधेर ने कहा, कुछ किसानों के घायल होने के मद्देनजर हमने आज के लिए जत्था वापस बुला लिया है। उन्होंने कहा कि किसान संगठनों के दो मंच संयुक्त किसान मोर्चा (गैर-राजनीतिक) और किसान मजदूर मोर्चा, एक बैठक के बाद अगले कदम के बारे में फैसला करेंगे।

अंबाला में विद्यालय बंद करने का आदेश

अंबाला प्रशासन ने जिले के सभी सरकारी और निजी विद्यालयों को बंद करने का आदेश दिया है। पंधेर ने बृहस्पतिवार को कहा कि अगर सरकार उन्हें मार्च निकालने से रोकती है, तो यह उनके लिए नैतिक जीत होगी। उन्होंने कहा, केंद्र और राज्यों में उनके नेता नियमित रूप से कहते रहे हैं कि अगर किसान ट्रैक्टर-ट्रॉली नहीं लाते हैं, तो कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। इसलिए अगर हम पैदल दिल्ली जाते हैं, तो किसानों को रोकने का कोई कारण नहीं होना चाहिए। किसानों ने शंभू और खनौरी सीमा पर सिख गुरु तेग बहादुर का शहीदी दिवस भी मनाया। इस बीच, एसकेएम नेता जगजीत सिंह डल्लेवाल ने शुक्रवार को खनौरी सीमा बिंदु पर अपना आमरण अनशन जारी रखा।

कांग्रेस भवन में डा. भीम राव अंबेडकर को श्रद्धासुमन अर्पित करते कांग्रेस नेता।

संविधान निर्माता बाबा साहेब के परिनिर्वाण दिवस पर दी श्रद्धांजलि

- बाबा साहेब ने राष्ट्रीय एकता की भावना को एक सूत्र में पिरोकर किया संविधान का निर्माण: पंकज डावर
- कमान सराय स्थित कांग्रेस भवन में मनाया गया परिनिर्वाण दिवस

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

संविधान निर्माता बाबा साहेब डा. भीम राव अंबेडकर का शुक्रवार को यहां कमान सराय स्थित कांग्रेस भवन में परिनिर्वाण दिवस मनाया गया। बाबा साहेब के चित्र पर कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पंकज डावर ने कार्यकर्ताओं के साथ माल्यार्पण करते हुए उन्हें नमन किया। इसके बाद बाबा साहेब के समाज निर्माण के सिद्धांतों पर चर्चा की।

पकंज डावर के साथ कांग्रेस नेत्री पर्ल चौधरी, सूबे सिंह यादव, प्रदीप दहिया, नरेश वरिष्ठ, सूबे सिंह पटौदी, सीमा हुड्डा, रोहित मदान, राजीव यादव, अजय साहू, मनोज आहुजा, सुरिन्द्र पाल, सुनीता तोमर, कृष्ण वाल्मीकि समेत कई कार्यकर्ताओं ने बाबा साहेब को नमन किया। इस अवसर पर वरिष्ठ नेता पंकज डावर ने कहा कि संविधान सभा की मसौदा समिति के अध्यक्ष रहे बाबा साहेब भारत के पहले कानून और न्याय मंत्री थे। 14 अप्रैल 1891 को महू में जन्में बाबा साहेब एक बेहतरीन भारतीय अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञ और समाज सुधारक थे। डा. अंबेडकर भारतीय संविधान के शिल्पकार होने के साथ-साथ सामाजिक समरसता के पुरोधा थे। शोषितों और सिद्धांतों के कल्याण के लिए उन्होंने अपना जीवन समर्पित कर दिया। भारत रत्न बाबा साहेब ने समरसता और राष्ट्रीय एकता की भावना को एक सूत्र में पिरोकर संविधान का निर्माण किया। उन्होंने देश को एक ऐसा प्रगतिशील और न्याय-प्रवर्तक संविधान दिया, जिसने गरीब से गरीब व्यक्ति को न्याय और अधिकार सुनिश्चित कराया। उन्होंने दलितों पर ध्यान केंद्रित करते हुए सामाजिक भेदभाव के खिलाफ अभियान चलाया। उन्होंने दलित बौद्ध आंदोलन को भी प्रेरित किया और बौद्ध समाज की स्थापना की। अंबेडकर जी ने अछूतों और अन्य धार्मिक समुदायों के लिए अलग निर्वाचन क्षेत्र और आरक्षण बनाने का तर्क दिया।

बॉम्बे उच्च न्यायालय में वकालत करते हुए उन्होंने शिक्षा को बढ़ावा देने और अछूतों के उत्थान का प्रयास किया। उन्होंने दलितों की शिक्षा, कल्याण और सामाजिक-आर्थिक सुधार को बढ़ावा देने के इरादे से एक केंद्रीय संस्था, बहिष्कृत हितकारिणी सभा की स्थापना की। कांग्रेस नेत्री पर्ल चौधरी ने बाबा साहेब को नमन करते हुए कहा कि उन्होंने सार्वजनिक पेयजल संसाधनों को खोलने के लिए सार्वजनिक आंदोलन और मार्च शुरू किए। अछूतों को शहर के मुख्य जल टैंक से पानी भरने की अनुमति भी दी। उन्होंने हिंदू मंदिरों में प्रवेश के अधिकार के लिए भी संघर्ष किया।

नई शिक्षा नीति पहले हरियाणा में लागू होगी: बंडारू

- जीएवी इंटरनेशनल स्कूल के वार्षिक समारोह में बोले राज्यपाल

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

हरियाणा के राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय ने कहा कि नई शिक्षा नीति को लागू करने वाला हरियाणा देश का पहला राज्य होगा। उन्होंने कहा कि विद्या प्राप्ति से ही हमारे बच्चे आर्थिक रूप से सशक्त हो सकते हैं। विद्यार्थियों को नौकरी की बजाय स्व-रोजगार की ओर अधिक ध्यान देना चाहिए। इस युग में वही प्रदेश आगे बढ़ता है, जो अपने बच्चों को गुणात्मक शिक्षा प्रदान करता है।

राज्यपाल शुक्रवार को जीएवी इंटरनेशनल स्कूल के वार्षिक समारोह को मुख्य अतिथि के तौर पर संबोधित कर रहे थे। राज्यपाल ने देवी सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। उन्होंने कहा कि गुणात्मक शिक्षा के माध्यम से ही जीवन में आने वाली चुनौतियों का साहसपूर्वक सामना किया जा सकता है।

पवित्र ग्रंथ गीता विश्व का एक महान ग्रंथ: हरविंद्र

- विस अध्यक्ष ने की महाआरती में शिरकत

पायनियर समाचार सेवा। कुरुक्षेत्र

हरियाणा विधानसभा अध्यक्ष हरविंद्र कल्याण ने कहा कि पवित्र ग्रंथ पूरी दुनिया को अध्यात्म और दार्शनिक तरीके से देखना-समझना सिखाता है, जिंदगी को जीना सिखाता है। हम अपने जीवन और उसके उदेश्यों को लेकर कई तरह के प्रश्नों से जूझते रहते है, लेकिन यह पवित्र ग्रंथ हमें हर प्रश्नों का जवाब बहुत अच्छे तरीके से देता है। यह ज्ञान हर मनुष्य के लिए जरुरी है। पवित्र ग्रंथ गीता में कहा गया है कि चिंता चिता के सम्मान है।

अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सवमें पुरुषोतमपुरा बाग में शुक्रवार को हरियाणा विधानसभा अध्यक्ष हरविंद्र कल्याण, आरएसएस के राष्ट्रीय प्रचारक इंद्रेश, पूर्व राज्यमंत्री सुभाष सुधा, नप की पूर्व अध्यक्षा उमा सुधा, मुख्यमंत्री के ओएसडी विरेंद्र सिंह, पूर्व ओएसडी कैप्टन भूपेंद्र सिंह, हिपा की भद्रकाली शक्तिपीठ के पीठ अध्यक्ष सतपाल महाराज, ओएसडी अनिता कुंडू, केडीबी के मानद सचिव उपेंद्र सिंघल, 48 कोस तीर्थ निगरानी कमेटी के चेयरमैन मदन मोहन छाबड़ा, केडीबी सदस्य कैप्टन परमजीत सिंह, विजय नरुला, सौरभ चौधरी, अशोक रोशा, डा. ऋषिपाल मथाना, मंडल अध्यक्ष हरीश अरोड़ा सहित अन्य गणमान्य लोगों ने महोत्सव पर ब्रहमसरोवर की महाआरती और पूजा-अर्चना की तथा दीपशिखा प्रज्जवलित कर विधिवत रुप से महाआरती का शुभारम्भ भी किया। इस महाआरती का गुणगान पंडित बलराम गौतम, पंडित सोमनाथ शर्मा, गोपाल कृष्ण गौतम, अनिल व रुद्र ने किया। इस दौरान प्रसिद्ध कलाकारों ने भजन संध्या प्रस्तुत करके ब्रहमसरोवर की फिजां को भक्तिमय कर दिया।

कैशियर रूम से चोरी करने के मामले में सुरक्षाकर्मी धरा

गुरुग्राम। कंपनी के कैशियर रूम से चोरी करने के मामले में पुलिस ने एक सुरक्षाकर्मी को गिरफ्तार किया है। आरोपी के कब्जे से चोरी किए 3 लाख 34 हजार रुपये व एक लोहे की छेनी बरामद की है। एक व्यक्ति ने थाना सुशांत लोक में शिकायत देकर कहा कि 23/24 नवंबर की रात को मार्वल लिमिटेड कंपनी के कैशियर रूम से अज्ञात व्यक्ति द्वारा नगदी चोरी कर ली गई।

मानव सेवा का सर्वश्रेष्ठ कार्य है रक्तदान: राव नरबीर सिंह

- सिविल डिफेंस के 62वें स्थापना दिवस पर आयोजित किया गया रक्तदान शिविर

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

गुरुग्राम में सिविल डिफेंस के स्थापना दिवस समारोह में मंचासीन अतिथि।

प्रदेश के वन, पर्यावरण एवं उद्योग मंत्री राव नरबीर सिंह ने कहा कि दुनिया में काफी तरक्की होने के बावजूद अभी तक रक्त का कोई विकल्प नहीं बना है। मानव शरीर से ही रक्त लेकर जरूरतमंद मरीजों की जान को बचाया जा सकता है। इसलिए प्रत्येक स्वस्थ नागरिक को साल में कम से कम दो दफा रक्तदान अवश्य करना चाहिए। वे शुक्रवार को जिला परिषद स्वतंत्रता सेनानी सभागार में सिविल डिफेंस के 62 वें स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित रक्तदान शिविर समारोह को संबोधित कर रहे थे।

जिला रेड क्रास सोसायटी के सहयोग से आयोजित किए गए इस शिविर में उन्होंने सभी रक्तदाताओं को बैज लगाकर उनका उत्साहवर्धन किया। वन, पर्यावरण एवं उद्योग मंत्री ने इस अवसर पर कहा कि खून की जरूरत किसी भी व्यक्ति को पड़ सकती है। मुश्किल वक्त में आदमी के द्वारा किया गया रक्तदान उसकी अवश्य सहायता करेगा। रक्तदान सामाजिक सौहार्द और सद्भाव का भी प्रतीक है। बुजुर्गों की देखभाल के लिए रखे गए विषय के बारे में मंत्री राव नरबीर सिंह ने कहा कि समाज में संपन्नता के साथ कुछ नैतिक गिरावट भी आई है। नैतिक मूल्यों को बचाने के लिए हमें जिम्मेदार नागरिक के तौर पर आगे आना होगा। वृद्धाश्रम की बजाय बुजुर्गों की उनके घर पर ही देखभाल हो जाए तो इससे उनका जीवन खुशनुमा बना रहेगा। मंडल आयुक्त आरसी बिढ़ान ने इस अवसर पर कहा कि पहले लोग रक्तदान करने से घबराते थे।

सार्वजनिक सूचना

आम जनता को सूचित किया जाता है कि श्री अमरदीप जो संपत्ति ID No. 1BMFPKP7 के मालिक हैं, जिसका क्षेत्रफल 200 वर्ग गज में से 85 वर्ग गज है, जो वाका मौजा बल्लभगढ़ (वार्ड नंबर 1 हरिजन मोहल्ला), तहसील बल्लभगढ़, जिला फरीदाबाद, हरियाणा में स्थित है। दिनांक 04.11.2024 (दस्तावेज संख्या 5130) के हस्तांतरण विलेख के माध्यम से मालिक है जो श्रीमती बबीता द्वारा निष्पादित किया है और इसे मोतीलाल ओसवाल होम फाइनेंस लिमिटेड द्वारा वित्तपोषित और बंधक किया जाना है। श्री रविंद्र कुमार द्वारा श्रीमती बबीता और श्रीमती माया के पक्ष में निष्पादित दिनांक 30.11.2006(दस्तावेज संख्या 10063) का मूल बिक्री विलेख खो गया है/गलत जगह पर है/उपलब्ध नहीं है। बैंक/एनबीएफसी की आवश्यकताओं का अनुपालन करने के लिए, हम यह सार्वजनिक सूचना देते हैं कि यदि किसी व्यक्ति के पास उक्त संपत्ति पर किसी भी प्रकार का दावा/अधिकार/स्वामित्व/ हित/बंधक बनाने में कोई आपत्ति है तो वह आज से 7 दिनों के भीतर अपनी आपत्तियों के बारे में नीचे दिए गए पते पर लिखित रुप में सूचित कर सकता है। ऐसा न करने पर यह माना जाएगा कि उक्त संपत्ति सभी प्रकार के भार, ग्रहणाधिकार आदि से मुक्त है।
लुसेम लीगल एलएलपी
बी-93बी, द्वितीय तल, एसबीआई बैंक के सामने, सेक्टर 2, नोएडा, यूपी-201301, संपर्क #0120-4269379

THE PIONEER CLASSIFIEDS

CHANGE OF NAME

I, Km Rekha alias Rekha W/o Jaiprakash R/o 498A, Nyay Khand -1, Indirapuram, Ghaziabad have changed my name to Rekha Devi
PD(1034)A

PUBLIC NOTICE

"It is to inform to the public at large that Mr. Azeem Khan had acquired Third Floor with roof rights, area measuring 75 sq. yards, part of property bearing No. 3447, situated at Dariba Pan, Paharganj, New Delhi vide GPA Dt. 16.06.2022 along with ATS & Will executed by Mr. Rajender Singh, Mr. Tharvinder Singh & Ms. Ranjana Arora and Now Mr. Azeem Khan is the undisputed owner of the said property.
OR
Any person / firm / institution / company having any claim or right in respect of the said Property by way of inheritance, share, sale, agreement, lease, license, gift, possession, legal heirs, partners or encumbrance howsoever or otherwise is hereby required to intimate in writing to the undersigned within 07 days from the date of publication of this notice of his/her/their share or claim, if any, with all supporting documents at below mentioned address. After expiration of notice period, the claims, if any, of such person shall be treated null and void and also treated as waived and not binding on our client.
Ajay Kumar Giri, (Advocate) H.No. 26/161, Basement, Vikram Vihar, Lajpat Nagar 4, New Delhi 110024

PUBLIC NOTICE

Notice is hereby given to the public at large, on behalf of our client, **Mr. Gangaram** S/o Mr. Sitaram R/o H. No. DZ-586/1, Palwal Gupta Ganj, Palwal, Haryana. 121102. **("Owner")** **Mr. Sitaram** was the owner of schedule property by virtue of Sale Deed which was duly registered with the concerned Sub-Registrar-Palwal as Document No. 3141, in Addl. Book No.1, on 11.01.1979 is stated to have been lost, an FIR dated **05.12.2024 (Haryana Police Citizen Services)** bearing **Application No.** 132600712401656 was also lodged. **(LOST SALE DEED DOCUMENTS)**. Public are warned not to deal with the Document and any person receiving or dealing with the said Document would do so at their own risk and responsibility **(including criminal liability)** and our client shall not be liable in any manner whatsoever for any loss incurred by such person(s) on account of any such unauthorized dealing, our client will proceed to take such action including applying to concerned authorities for issue of duly Certified Copies / Certified True Copies/Duplicate Copies of the Document.
SCHEDULE PROPERTY
Property (ID-3PCHJV02), area measuring-108.450 sq. yds., Situated in the abadi of Lal Dora Mauza Palwal (Darbar Kuaa Kot Mohalla Gupta Ganj Market) Had Nagar Parishad Palwal Tehsil & Distt. Palwal.
Sachin Maheshwari & Associates (SMA) Law Offices, Sachin Maheshwari Advocate
Badarpur Border, New Delhi.
Mob. 9911380328 / Ph.: 011-69653588,

PUBLIC NOTICE

This is to inform the public that my client, **Sh. Fateh Singh** S/o **Sh. Roop Chand** & **Smt. Santosh** W/o Sh. Fateh Singh, both Resident of House No. 390, Village Bhorgarh, Delhi-110040, has disowned and severed all relationships with his son, **Pawan Saini**, daughter-in-law, **Sarita**, and grandson, **Prince** & granddaughter, **Chahak**. This decision has been made due to their involvement in anti-social behaviour, anti-family activities, and disrespectful conduct towards my client. From this point onward, **Sh. Fateh Singh** & **Smt. Santosh** disclaims any responsibility for their actions and completely disassociates himself/herself from any movable and immovable assets held by them. Any transactions or dealings with the aforementioned individuals shall be undertaken at the sole risk, cost, and consequences of the parties involved.
Mukesh Gupta (Advocate), Off. At: Kh.No.42/2, 2nd Floor, Main Safiabad Road, Narela, Delhi - 110040

PUBLIC NOTICE

Notice is hereby given to public at large that my client **Smt. Parwati** wife of **Late Shri. Meer Singh** resident of **A-286, Kusum Pur Pahari, Kususm Pur, South West Delhi, Delhi-110057**, is disowning and disinherited their son namely **Sanjay** and daughter-in-law namely **Jyoti** from all my moveable & immoveable properties and have also severed all their relations from them. Therefore my client shall not be responsible for any act and conduct done by them in future.
(Ombir Sangwan) Advocate
Ch.No.5 Patiala House Court N.D.-110001

PUBLIC NOTICE / DECLARATION

Public at large is informed vide this notice that my clients Anita Jain W/o Sh. Shashi Jain & Shashi Jain both R/o flat no.122, block-b, pocket-GH-4, HIG flats, sector-29, Pahlad Pur Banger, North-West, Delhi, have debarred their son namely Shashank Jain & wife Megha Jain and their child Sharanya Jain from all their moveable & immoveable properties and also severed all relations from them as they are not in their control as they misbehaved with them and if anybody deals with them my clients will not be responsible in any manner whatsoever in near future".
Abhishek Ranjan (Advocates) Ch.No.M-8&9, Western Wing Tis Hazari Courts, Delhi-54, M: 9990528184

सार्वजनिक सूचना

जन साधारण को सुचित किया जाता है कि (1) श्रीमती वरयाम कौर पत्नी स्व. सविंदर सिंह, (2) सरदार बंटी सिंह पुत्र श्री हरमिंदर सिंह सेठी और (3) मैसर्स जेसी इंफ्राप्रोजेक्ट्स उपरोक्त संपति Third Floor with roof rights, on eastern side built-up property bearing no. S-2/220, having Plot No. B/6, land area measuring 100 Sq. Yards out of 200 Sq. Yards, out of Khasra No. 1 etc./6, situated in the area of village Nangli Jalib colony known as old Mahavir Nagar, New Delhi-110018 को श्रीमती चरणप्रीत कौर को बेच रहे है। उपरोक्त संपति मेरे मुवक्किल हीरो हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड द्वारा वित्तपोषित व बंधक प्रस्तावित है। और दुर्भाग्य से स्वर्गीय रमेश कुमार बख्शी की बिना वसीयत के मृत्यु हो गई और वे अपने पीछे केवल एक कानूनी उत्तराधिकारी छोड़ गए उनकी पत्नी श्रीमती रेनू बख्शी और श्रीमती रेनू बख्शी को उपरोक्त संपति के बंधक के संबंध में कोई आपत्ति नहीं होगी अगर (1) श्रीमती वरयाम कौर पत्नी स्व. सविंदर सिंह, (2) सरदार बंटी सिंह पुत्र श्री हरमिंदर सिंह सेठी और (3) मैसर्स जेसी इंफ्राप्रोजेक्ट्स उपरोक्त संपति को बेचे।
यदि किसी व्यक्ति (ओं) को इस संपति में कोई आपत्ति या दवा है, तो हमे इस नोटिस की तारीख से 14 दिनों के भीतर निम्न पते पर संपर्क करें। अगर कोई दावा नहीं आया तो यह माना जाएगा की किसी का कोई दावा या हक इस प्रॉपर्टी में नहीं है।
राघव तिवारी, अधिवक्ता 830, पटियाला हाउस कोर्ट, नई दिल्ली 110001, Mob: +91-9266768808

सार्वजनिक सूचना

सूचना नगर निगम गुरुग्राम के भवन कर रिकार्ड में आई0डी0 No. 1C3NAHU2 जिसका पता 11-B, Agora Tower, Tata Raisina Residency, Raisina, Gurugram, 122102 की सम्पत्ति कर रिकोर्ड में तब्दीली हेतु USHA AHLAWADI ने आवेदन किया है। यह यूनिट सम्पत्तिकर रिकार्डानुसार USHA AHLAWADI AND OM PARKASH AHLAWADI के नाम निम्नप्रकार से दर्ज है। OM PARKASH AHLAWADI की मृत्यु दिनांक 16-09-2024 को हो चुकी है। तदोपरांत उनके कानूनी वारिसान Wife है। तदोपरांत उनके Wife ने Registred Will की प्रति को सबूत के तौर पर पेश कर उक्त सम्पत्ति कर रिकोर्ड में तब्दीली के लिये आवेदन किया है।
उपरोक्त सम्पत्ति कर रिकोर्ड/भवन/आई0डी0 No. 1C3NAHU2 को USHA AHLAWADI W/O OM PARKASH AHLAWADI के नाम दर्ज करने हेतु यदि किसी भी व्यक्ति को कोई ऐतराज है तो वह प्रकाशन के 30 दिन के अंदर अंदर अपना ऐतराज अधोहस्ताक्षरी को प्रस्तुत कर सकता है। यदि 30 दिन के अंदर कोई आपत्ति इस कार्यालय में प्राप्त नही होती है तो उपरोक्त सम्पत्ति कर रिकोर्ड में आवेदन अनुसार स्थानांतरित कर दी जायेगी जिसके लिये नगर निगम उत्तरदायी नहीं होगा। सूचित रहे।
हस्ताक्षर/-
क्षेत्रीय कराधान अधिकारी-IV
नगर निगम गुरुग्राम

एनएचपीसी लिमिटेड
(भारत सरकार का नवरत्न उद्यम)

एनएचपीसी कार्यालय परिसर, सेक्टर-33, फरीदाबाद-121003, (हरियाणा), (CIN: L40101HR1975GOI032564)

अनुसूची

[केंद्रीय विद्युत विनियामक आयोग (कारोबार का संचालन) विनियम, 2023 के विनियम 23 के खंड (7) के अनुसरण में प्रकाशित किया जाना है]

1. उपर्युक्त याचिकाकर्ता ने **दुलहस्ती पावर स्टेशन, सेवा-II पावर स्टेशन एवं उड़ी-II पावर स्टेशन** के लिए टैरिफ निर्धारण हेतु केंद्रीय विद्युत विनियामक आयोग, नई दिल्ली के समक्ष याचिका दाखिल की है।
2. जेनरेटिंग स्टेशन के लाभार्थी निम्नलिखित हैं:

i) पीएसपीसीएल-पंजाब	ii) बीआरपीएल, बीवाईपीएल और टीपीडीडीएल-दिल्ली	iii) यूपीसीएल-उत्तराखंड
iv) एचपीपीसी-हरियाणा	v) इंजीनियरिंग विभाग-संघ शासित राज्य चंडीगढ़	vii) जेवीवीएनएल, जेडीवीवीएनएल और एवीवीवीएनएल-राजस्थान
vi) यूपीपीसीएल-उत्तर प्रदेश	viii) पीडीडी-जम्मू और कश्मीर	

		दुलहस्ती पावर स्टेशन	सेवा-II पावर स्टेशन	उड़ी-II पावर स्टेशन
3.	जेनरेटिंग स्टेशन की क्षमता	390 मेगावाट	120 मेगावाट	240 मेगावाट
4.	परियोजना की अनुमोदित पूंजी लागत	सीईआरसी द्वारा दिनांक 09.05.2022 के आदेश के अनुसार याचिका संख्या 146/जीटी/2020 में दिनांक 31.03.2024 की स्थिति के अनुसार 523298.66 लाख रुपए की अनुमति दी गई।	सीईआरसी द्वारा दिनांक 17.08.2023 के आदेश के अनुसार याचिका संख्या 643/जीटी/2020 में दिनांक 31.03.2019 की स्थिति के अनुसार 1,14,921.78 लाख रुपए की अनुमति दी गई।	सीईआरसी द्वारा दिनांक 27.11.2023 के आदेश के अनुसार याचिका संख्या 18/जीटी/2021 में दिनांक 31.03.2019 की स्थिति के अनुसार 229990.00 लाख रुपए की अनुमति दी गई।
	पूंजीगत लागत को अनुमोदित करने वाला प्राधिकरण	सीईआरसी	सीईआरसी	सीईआरसी
5.	वाणिज्यिक प्रचालन की अनुसूचित तारीख	पहले से ही वाणिज्यिक प्रचालन में है	पहले से ही वाणिज्यिक प्रचालन में है	पहले से ही वाणिज्यिक प्रचालन में है
6.	वाणिज्यिक प्रचालन की वास्तविक तारीख	07.04.2007	24.07.2010	01.03.2014
7.	वाणिज्यिक प्रचालन की तारीख को पूंजी लागत	507849.37 लाख रुपए	107745.87 लाख रुपए	217118.99 लाख रुपए

8. टैरिफ के ब्योरे: (लाख रुपए में)

क्र. सं.	हाइड्रो पावर जेनरेटिंग स्टेशन दुलहस्ती पावर स्टेशन	पिछले वर्ष के लिए टैरिफ (2018-19)	वर्ष वार टैरिफ जिसके निर्धारण किए जाने की माँग की गई				
			2019-20	2020-21	2021-22	2022-23	2023-24
1.	वार्षिक नियत प्रभार	92358.79	96221.21	76150.32	75441.11	82632.81	85167.65
2.	प्राथमिक ऊर्जा प्रभार	प्राथमिक ऊर्जा प्रभार वार्षिक नियत प्रभार का हिस्सा हैं और यह वार्षिक नियत प्रभार का 50% है।					

क्र. सं.	हाइड्रो पावर जेनरेटिंग स्टेशन दुलहस्ती पावर स्टेशन	पिछले वर्ष के लिए टैरिफ (2023-24)	वर्ष वार टैरिफ जिसके निर्धारण किए जाने की माँग की गई				
			2024-25	2025-26	2026-27	2027-28	2028-29
1.	वार्षिक नियत प्रभार	85167.65	74924.36	76563.08	78321.57	80159.96	82112.90
2.	प्राथमिक ऊर्जा प्रभार	प्राथमिक ऊर्जा प्रभार वार्षिक नियत प्रभार का हिस्सा हैं और यह वार्षिक नियत प्रभार का 50% है।					

क्र. सं.	हाइड्रो पावर जेनरेटिंग स्टेशन सेवा-II पावर स्टेशन	पिछले वर्ष के लिए टैरिफ (2018-19)	वर्ष वार टैरिफ जिसके निर्धारण किए जाने की माँग की गई				
			2019-20	2020-21	2021-22	2022-23	2023-24
1.	वार्षिक नियत प्रभार	24,614.21	25,241.52	25,220.75	25,388.24	26,352.37	22,000.34
2.	प्राथमिक ऊर्जा प्रभार	प्राथमिक ऊर्जा प्रभार वार्षिक नियत प्रभार का हिस्सा हैं और यह वार्षिक नियत प्रभार का 50% है।					

क्र. सं.	हाइड्रो पावर जेनरेटिंग स्टेशन सेवा-II पावर स्टेशन	पिछले वर्ष के लिए टैरिफ (2023-24)	वर्ष वार टैरिफ जिसके निर्धारण किए जाने की माँग की गई				
			2024-25	2025-26	2026-27	2027-28	2028-29
1.	वार्षिक नियत प्रभार	22,000.34	20,289.26	21,003.11	21,750.67	22,336.90	22,944.19
2.	प्राथमिक ऊर्जा प्रभार	प्राथमिक ऊर्जा प्रभार वार्षिक नियत प्रभार का हिस्सा हैं और यह वार्षिक नियत प्रभार का 50% है।					

क्र. सं.	हाइड्रो पावर जेनरेटिंग स्टेशन उड़ी-II पावर स्टेशन	पिछले वर्ष के लिए टैरिफ (2018-19)	वर्ष वार टैरिफ जिसके निर्धारण किए जाने की माँग की गई				
			2019-20	2020-21	2021-22	2022-23	2023-24
1.	वार्षिक नियत प्रभार	40950.91	44658.64	44291.73	43971.97	45960.82	45346.59
2.	प्राथमिक ऊर्जा प्रभार	प्राथमिक ऊर्जा प्रभार वार्षिक नियत प्रभार का हिस्सा हैं और यह वार्षिक नियत प्रभार का 50% है।					

क्र. सं.	हाइड्रो पावर जेनरेटिंग स्टेशन उड़ी-II पावर स्टेशन	पिछले वर्ष के लिए टैरिफ (2023-24)	वर्ष वार टैरिफ जिसके निर्धारण किए जाने की माँग की गई				
			2024-25	2025-26	2026-27	2027-28	2028-29
1.	वार्षिक नियत प्रभार	45346.59	44650.32	45629.42	45912.66	35939.72	38087.00
2.	प्राथमिक ऊर्जा प्रभार	प्राथमिक ऊर्जा प्रभार वार्षिक नियत प्रभार का हिस्सा हैं और यह वार्षिक नियत प्रभार का 50% है।					

10. टैरिफ निर्धारण के लिए की गई याचिका की एक प्रति वेबसाइट https://www.nhpcindia.com पर पोस्ट की गई है:
11. याचिका में निहित टैरिफ निर्धारण हेतु प्रस्तावों पर सुझाव एवं आपत्तियां, यदि कोई हो तो लाभार्थी सहित किसी भी व्यक्ति द्वारा याचिकाकर्ता को उसकी एक प्रति के साथ आयोग के ई-फाइलिंग पोर्टल पर इस सूचना के प्रकाशन के 30 दिनों के भीतर दाखिल की जा सकती हैं।

स्थान: फरीदाबाद
दिनांक: 29.11.2024
(अजय श्रीवास)
महाप्रबंधक (वाणिज्यिक), वाणिज्यिक विभाग

दक्षिण कोरिया में संकट

मार्शल ला की घोषणा

दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति यून सुक युवोल ने थोड़े समय के लिए मार्शल ला की घोषणा कर दी। इसका देश में भारी विरोध तथा दुनिया में निन्दा हुई। स्थिर लोकतंत्र और समृद्धि के लिए दुनिया भर के आकर्षण का केन्द्र रहे दक्षिण कोरिया में मार्शल ला की घोषणा की गई। दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति यून सुक युवोल ने अपनी स्थिति तथा गिरती लोकप्रियता बचाने के लिए यह अतिवादी कदम उठाया। लेकिन अब उनको अपने राष्ट्रपति कार्यकाल की सबसे कठोर चुनौती का सामना करना पड़ रहा है। मार्शल ला लगाने के विवादास्पद निर्णय की व्यापक विपरीत प्रतिक्रिया हुई जिससे देश गंभीर राजनीतिक संकट में घिर गया। इसके परिणामस्वरूप भारी विरोध प्रदर्शन हुए, उनके इस्तीफे की मांग की गई और अब उनके खिलाफ महाभियोग की तैयारी हो रही है। यून ने राष्ट्रीय सुरक्षा सरोकारों तथा 'राज्य-विरोधी तत्वों' के सफाए के लिए मार्शल ला की घोषणा की थी। लेकिन बहुत से लोग इस कदम को बढ़ते राजनीतिक और व्यक्तिगत घोटालों को देखते हुए सत्ता पर पकड़ मजबूत करने का प्रयास मानते हैं। इसकी प्रतिक्रिया त्वरित व बहुत गंभीर हुई, विधि-निर्माताओं ने आदेश वापस लेने के लिए व्यापक विरोध प्रदर्शन किए और भारी संख्या में लोग सियोल की सड़कों पर जमा हो गए। हालांकि, कुछ ही घंटे के भीतर यून ने आदेश वापस ले लिया, पर इससे जनता का गुस्सा शांत नहीं हुआ और उनको नुकसान उठाना पड़ा।

2022 के चुनाव में मामूली बढ़त के साथ शुरू हुआ यून का राष्ट्रपति कार्यकाल विवादों में घिरा हुआ है। उनके मंच ने जेंडर तटस्थता तथा उत्तर कोरिया के प्रति कट्टरपंथी दृष्टिकोण अपनाया जिससे शुरुआत में युवा पुरुष मतदाता खुश हुए। लेकिन अनेक गलत कदमों और घोटालों के कारण उनकी लोकप्रियता में लगातार गिरावट आई। इनमें प्रथम महिला किम कियोन ही से जुड़े भ्रष्टाचार के आरोपों के साथ विपक्ष-नियंत्रित नेशनल असेम्बली के कारण पैदा तनाव शामिल हैं। अप्रैल के संसदीय चुनावों में डेमोक्रेटिक पार्टी की भारी विजय से भी यून राजनीतिक रूप से और अलग-थलग हो गए। उत्साही विपक्ष ने यून के प्रशासन से जुड़े महत्वपूर्ण प्रशासनिक अधिकारियों के खिलाफ महाभियोग के कदम तेज किए जिससे राष्ट्रपति का कामकाज करना कठिन हो गया। मार्शल ला की घोषणा ऐसे राष्ट्रपति का अंतिम प्रयास था जिनका समर्थन लगातार घट रहा है तथा अपनी पार्टी के भीतर भी विरोध बढ़ रहा है। वास्तव में यह कदम बड़ी गलती थी जो दयनीय रूप से विफल हो गया और अब उसके नकारात्मक राजनीतिक परिणाम सामने हैं। इस घटना से विपक्ष द्वारा यून के खिलाफ महाभियोग प्रयास तेज हुए हैं और सत्तारूढ़ पार्टी के कुछ सदस्य खुलेआम उनके इस्तीफे की मांग कर रहे हैं। अभूतपूर्व रूप से बहुत बड़ी संख्या में प्रदर्शनकारी सड़कों पर उतरे तथा श्रम संगठनों ने यून के इस्तीफा देने तक राष्ट्रव्यापी हड़ताल की धमकी दी है। इस संकट ने दक्षिण कोरिया के मित्रों में भी खतरे की घंटियां बजा दी हैं जिनमें अमेरिका और जापान ने गंभीर चिन्ता प्रकट की है। उनको सबसे बड़ी चिन्ता इस बात की है कि उत्तर कोरिया इस आंतरिक अशांति का लाभ उठा कर दक्षिण कोरिया के खिलाफ तनाव बढ़ा सकता है जिससे पूरे क्षेत्र में अस्थिरता और बढ़ेगी। इस प्रकार दक्षिण कोरिया वर्तमान समय में अपनी लोकतांत्रिक दृढ़ता की कठोर परीक्षा दे रहा है। मार्शल ला के फौरन वापस लेने की घोषणा से स्पष्ट है कि दक्षिण कोरिया में संस्थागत नियंत्रणों और संतुलनों की स्थिति बहुत मजबूत बनी हुई है। लेकिन आगे के रास्ते पर सतर्कतापूर्वक चलना होगा ताकि एशिया के एक सबसे जीवन्त लोकतांत्रिक देश में और ध्रुवीकरण न होने पाए तथा उसका स्थायित्व सुनिश्चित रहे।

जी 20 का रियो सम्मेलन

शिखर सम्मेलन ने महत्वपूर्ण वैश्विक चुनौतियों, जैसे आर्थिक असमानताओं, पर्यावरण क्षरण तथा खाद्य सुरक्षा एवं गरीबी उन्मूलन की चुनौतियों को संबोधित किया।

सुधीर हिन्दवान
(लेखक, रणनीतिक मामलों के विशेषज्ञ हैं)

हाल ही में ब्राजील के रियो डि जिनेरियो में हुए जी 20 के उन्नीसवें शिखर सम्मेलन ने बहुत महत्वपूर्ण मुद्दे उठाए और यह 'ग्लोबल साउथ' का महत्वपूर्ण स्वर बन कर सारी दुनिया के समक्ष उभरा। 19 सदस्य देशों को संबोधित करने वाले इस सम्मेलन में दो और देश शामिल हुए जिनमें से एक अफ्रीका तथा दूसरा यूरोपीय संघ से था। पश्चिम एशिया संकट तथा वर्तमान समय में जारी रूस-यूक्रेन युद्ध से पैदा अनिश्चितता के बावजूद इस शिखर सम्मेलन ने दो महत्वपूर्ण मुद्दों पर अपना ध्यान केन्द्रित किया।

इनमें लगातार बढ़ती आर्थिक असमानता तथा पर्यावरण क्षरण के साथ ही खाद्य सुरक्षा एवं गरीबी उन्मूलन के मुद्दे भी शामिल हैं। इसके साथ ही उसने स्थिर एवं शांतिपूर्ण विश्व व्यवस्था के एजेंडे पर भी महत्वपूर्ण विचार-विमर्श किया। 1997 के आर्थिक संकट के बाद जी 20 समूह की स्थापना 1999 में हुई थी और उसका मुख्य उद्देश्य अर्थव्यवस्थाओं को आर्थिक मंदी से बाहर लाना था। इसके बाद से ही आर्थिक प्रगति सभी जी 20 बैठकों में चर्चा का केन्द्रीय बिंदु रहा है। जी 20 समूह में दुनिया के सर्वाधिक शाक्तिशाली देशों के साथ अनेक विकासशील देश भी शामिल हैं जिनमें अमेरिका, फ्रांस, चीन, भारत, जापान, जर्मनी, रूस, ब्रिटेन, ब्राजील, कनाडा, इटली, इंडोनेशिया, जापान, मैक्सिको, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, दक्षिण कोरिया, तुर्की, अर्जेन्टाइना व आस्ट्रेलिया शामिल हैं।

हाल ही में स्पेन को जी 20 के स्थाई अतिथि तथा अफ्रीकन संघ व यूरोपीय संघ को शामिल करने से इसका विस्तार हुआ है तथा प्रभाव क्षेत्र बढ़ा है। जी 20 की नवीनतम बैठक इस दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है कि अब दक्षिण के देश अपने महत्वपूर्ण उद्देश्यों पर जोर देने लगे हैं। इस दृष्टिकोण से हरित औद्योगिक नियोजन तथा रणनीतियों के विचार को सर्वाधिक महत्व दिया जा रहा है। प्रमुख अंतरराष्ट्रीय मौद्रिक संस्थानों तथा विश्व बैंक, आईएमएफ व डब्लूटीओ जैसी संस्थाओं के नियंत्रण की बढ़ती मांग इस दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। संयुक्त राष्ट्रसंघ की सुरक्षा परिषद में परिवर्तन की इच्छा से संकेत मिलता है कि यह समूह अब ज्यादा पारदर्शी व समावेशी विश्व व्यवस्था के पक्ष में है। इसके साथ ही वह सांस्कृतिक निरंतरता और ऊर्जा संसाधनों के आदान प्रदान पर विचार करना चाहता है जो जी 20 बैठकों के नए विषय हैं। दूसरी ओर सदस्य देश लगातार टिकाऊ विकास की आवश्यकता पर जोर दे रहे हैं। इसके साथ ही वे दुनिया भर में लगातार बढ़ते तापमान की चिन्ता से परेशान हैं। अर्थव्यवस्था में आधुनिक तकनीकों, जैसे डिजिटल अर्थव्यवस्था के पूर्ण प्रयोग को भी महत्वपूर्ण विषय माना गया है जो समय की महत्वपूर्ण बचत करते हुए पुरानी व्यवस्था को नया स्वरूप दे सकती हैं। विकसित देशों के साथ भाईचारा बढ़ाने के भारतीय अनुभवों को देखते हुए विकसित दुनिया भी काफी कुछ सीख सकती है।

भारत ने आईटी उद्योग को प्रगति देने में महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं और उसने भारतीय कंपनियों के लिए नए दरवाजे खोले हैं जो अब आक्रामक रूप से समुद्रपारीय बाजारों में अपना विस्तार कर रही हैं। देश की नियामक एवं कार्यक्रम क्रियान्वयन एजेंसियों ने सुनिश्चित किया है कि विदेशी निवेश सुरक्षित रहे तथा आर्थिक

प्रमुख अंतरराष्ट्रीय मौद्रिक संस्थानों तथा विश्व बैंक, आईएमएफव डब्लूटीओ जैसी संस्थाओं के नियंत्रण की बढ़ती मांग इस दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। संयुक्त राष्ट्रसंघ की सुरक्षा परिषद में परिवर्तन की इच्छा से संकेत मिलता है कि यह समूह अब ज्यादा पारदर्शी व समावेशी विश्व व्यवस्था के पक्ष में खड़ा है।

लेनदेन पर गहराई से नजर बनाई रखी जा सके। कठिन वैश्विक अर्थव्यवस्था परिवेश की चुनौतियों के बावजूद भारत ने 2023 में जी 20 की अध्यक्षता के अपने कार्यकाल में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उसने वैश्विक विनिर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका के साथ ही विभिन्न क्षेत्रों में विश्वसनीय साझीदार की भूमिका निभाई। जी 20 देशों के बीच सहयोग का विस्तार नई रणनीतियां विकसित करने में भी सहायक सिद्ध हुआ है जिससे संकटग्रस्त देशों की आवश्यकतायें पूरी होती हैं तथा ज्यादा समावेशी विश्व समाज बनाने में सहायता मिलती है।

इस सहयोग से अंतरराष्ट्रीय संबंधों में सकारात्मक परिवर्तन होगा, जेंडर सामंजस्य तथा सहयोग मजबूत होगा। भारत की शानदार प्रगति का कारण मुख्य रूप से उसकी दूरदर्शी नेतृत्व क्षमता है। इसके साथ ही भारत अपनी असाधारण प्रतिभा तथा अत्यन्त महत्वपूर्ण दूरगामी दृष्टिकोण का लाभ उठा रहा है। 'अंतरराष्ट्रीय सोलर एलायंस', 'ग्रीन हाइड्रोजन इनोवेशन सेंटर', 'वन सन वन ग्रिड' तथा 'ग्लोबल बायोफ्यूल एलायंस' के साथ ही भारत के 'वेस्ट टु एनर्जी' प्रयासों ने जी 20 में उसे एक अग्रणी भूमिका प्रदान की है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इन उल्लेखनीय प्रयासों को उजागर करते हुए शिखर सम्मेलन में दिए अपने भाषण में भारत की उपलब्धियों का उल्लेख किया। प्रधानमंत्री मोदी को असंदिग्ध रूप से विश्व राजनीति के सर्वाधिक लोकप्रिय नेता का सम्मान प्राप्त है। उन्होंने भारत को 'वैश्विक दक्षिण' का महत्वपूर्ण प्रवक्ता बना दिया है। धीरे-धीरे जी 20 का दायरा बढ़ता जा रहा है और इसकी साझीदारी को अनेक महत्वपूर्ण क्षेत्रों में विस्तार मिल रहा है। इन क्षेत्रों में आपदा प्रबंधन, डिजिटल ढांचागत संरचनायें तथा जलवायु परिवर्तन शामिल हैं। इन क्षेत्रों में बढ़ती साझेदारी से एक बहुआयामी पहल सामने आ रही है जिसमें सुरक्षा और विकास के लगभग सभी आयाम शामिल हैं।

इसके साथ ही इसमें कुछ ऐसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर भी ध्यान दिया गया है जिनके बारे में अंतरराष्ट्रीय समुदाय चिन्तित है। लेकिन जी 20 देश सामाजिक एवं राजनीतिक दबावों का भी सामना कर रहे हैं और उनकी सफलता इस बात पर निर्भर है कि वे इन असंख्य चुनौतियों के बावजूद प्रगति की गति कैसे बनाए रखते हैं। सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक कारणों से पैदा इन चुनौतियों का सामना करते हुए जी 20 देश विश्व आर्थिक क्षेत्र में अपनी स्थिति और मजबूत कर सकते हैं। इससे वे न केवल प्रगति कर सकेंगे, बल्कि उसे सदस्य देशों में विस्तार देकर एक समावेशी विश्व व्यवस्था भी बना सकेंगे।

राजनयिक संपर्क तथा टकराव समाधान व्यवस्थाओं को मजबूत कर जी 20 समूह के देश आर्थिक समृद्धि के साथ ही स्थायित्व को भी बढ़ावा देते हैं जिसका लाभ सभी सदस्य देशों को मिलता है। इस समूह द्वारा प्रस्तुत रणनीतिक दृष्टिकोण बहुआयामी व बहुस्तरीय रणनीति विकसित करने के लिए जरूरी है जिससे न केवल आर्थिक प्रगति, बल्कि सुरक्षा चुनौतियों को भी संबोधित किया जा सकेगा जो लगातार परस्पर जुड़ी दुनिया के समक्ष अत्यन्त गंभीर रूप से सामने आ रही हैं। जी 20 ऐसा मंच भी बन सकता है जो विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति को बढ़ावा दे सके। इनमें शिक्षा, विज्ञान, बायोटेक्नोलोजी तथा रणनीतिक नियोजन शामिल हैं। इससे समूह के सदस्य देशों के बीच संबंध और मजबूत होंगे तथा इसका लाभ पूरे विश्व समुदाय को होगा। भारत लगातार जी 20 समूह की प्रगति में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत अपने सक्षम व दूरगामी दृष्टिकोण से इस समूह के साथ ही दुनिया के विकास में उल्लेखनीय योगदान दे रहा है।

तेज हुआ अमेरिका-चीन व्यापार युद्ध

डोनाल्ड ट्रम्प टैरिफ और निर्यात नियंत्रण के साथ बिडेन के सख्त रुख को और मजबूत करने के लिए तैयार हैं।

कुमारदीप बनर्जी
(लेखक, नीति विश्लेषक हैं)

दुनिया की दो सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं, अमेरिका और चीन के लिए भरी हुई बंदूकें सामने आ गई हैं, इससे पहले कि मूल हार्ड हिटर डोनाल्ड ट्रम्प अगले साल जनवरी में नए राष्ट्रपति के रूप में कार्यभार संभालें। अपने अंतिम चीन को नियंत्रित करने उपायों में से एक में निवर्तमान राष्ट्रपति जो बिडेन ने चीन को उच्च-स्तरीय चिप्स, चिप बनाने वाले उपकरणों पर अतिरिक्त निर्यात नियंत्रण लगाया है, जिनका उपयोग घटकों के रूप में या हथियारों के निर्माण में भी किया जा सकता है। नए प्रतिबंध सीधे चीन के कुछ सबसे बड़े चिप निर्माताओं को भी लक्षित करते हैं, इस प्रकार ड्रैगन के आक्रामक हथियारीकरण कार्यक्रम में यथासंभव अधिक से अधिक बाधाएं डालते हैं। चीन ने गैलियम, एंटीमनी आदि जैसे महत्वपूर्ण खनिजों के निर्यात पर जवाबी नियंत्रण लगाया, जो चिप्स के आवश्यक घटक हैं।

जब इन उपायों की घोषणा की जा रही थी, तब भी राष्ट्रपति-चुनाव डोनाल्ड ट्रम्प ने 9 सदस्य ब्रिक्स देशों को 100 प्रतिशत टैरिफ की धमकी दी थी, अगर वे डॉलर के लिए एक वैकल्पिक वैश्विक मुद्रा बनाने का विकल्प चुनते हैं। श्री ट्रम्प ने पहले ही कनाडा, मैक्सिको और यूरोपीय संघ को टैरिफ स्केलपेल से धमकाया है, जब तक कि वे उनके पास ऐसे प्रस्तावों के साथ वापस नहीं आते जिन्हें अनदेखा करना मुश्किल है। ट्रम्प का तीसरा पसंदीदा शब्द टैरिफ है, जिसका उपयोग वे सहयोगियों और दुश्मनों के साथ व्यापार सौदों पर बातचीत करने के लिए करते हैं। जिन देशों ने डोनाल्ड ट्रम्प से उच्च टैरिफ के नवीनतम खतरे का सामना किया है, उन्होंने पहले से ही सख्त व्यवसायी के साथ बातचीत करने के लिए एक सतर्क दृष्टिकोण अपनाया है। कनाडा और मैक्सिको ने कहा है कि टैरिफ मुद्दों पर उनका सामना करने की तुलना में ट्रम्प के तहत अमेरिका के

साथ सौदे को और बेहतर बनाने में अधिक रुचि होगी। चीन जानता है कि ट्रम्प अपने पूर्ववर्ती जो बिडेन की तुलना में उन मुद्दों पर अधिक स्पष्ट होंगे, जहां अमेरिका उन्हें प्रत्यक्ष खतरा मानता है। चीनी सरकार के मुखपत्र ग्लोबल टाइम्स में हाल ही में प्रकाशित संपादकीय में से एक में, इंटरनेट सोसाइटी ऑफ चाइना, चाइना एसोसिएशन ऑफ ऑटोमोबाइल मैन्युफैक्चरर्स, चाइना सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री एसोसिएशन और चाइना एसोसिएशन ऑफ कम्युनिकेशंस एंटरप्राइजेज को अमेरिकी चिप्स को असुरक्षित और अविश्वसनीय बताते हुए बयान जारी करने के लिए उद्धृत किया गया है। इसमें आगे कहा गया है, अमेरिका ने इस उपाय का इस्तेमाल अपनी शक्ति का बहुत अधिक विस्तार करने के लिए किया है, जिससे जापान, नीदरलैंड, इज़राइल, मलेशिया, सिंगापुर, दक्षिण कोरिया और चीन के ताइवान क्षेत्र सहित कई देश और क्षेत्र प्रभावित हुए हैं। यह वैश्विक औद्योगिक और आपूर्ति श्रृंखलाओं की स्थिरता को गंभीर रूप से बाधित करेगा और अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक और व्यापार व्यवस्था को कमजोर करेगा। आने वाले राष्ट्रपति ट्रम्प के निर्यात नियंत्रण और चीन के आयात के लिए उच्च टैरिफ पर सख्त रुख अपनाने की संभावना है। आने वाले प्रशासन के जो बिडेन प्रशासन द्वारा हासिल किए गए उपायों की तुलना में उच्च डेसिबल, उच्च ऑप्टिक्स और चीन को नियंत्रित करने वाले उपायों पर ध्यान केंद्रित करने की संभावना है।

यह ध्यान देने योग्य होगा कि ट्रम्प के पहले राष्ट्रपति पद के दौरान चीन के खिलाफ पेश किए गए कुछ प्रतिबंधात्मक उपायों को केवल राष्ट्रपति जो बिडेन के तहत उन्नत और सख्त बनाया गया है। इसलिए कुछ स्तर पर, अमेरिकी सरकार में चीन को नियंत्रित करने के लिए द्विदलीय समर्थन है। भारत इस क्षेत्र पर सावधानीपूर्वक नज़र रख रहा है और अच्छी तरह जानता है कि वह बहुत लंबे समय तक अमेरिकी टैरिफ तोप से बच नहीं सकता है। यह भी अच्छी तरह से जानता है कि, अमेरिका के साथ व्यापार अधिशेष है, जिसका अर्थ है कि वह आयात से अधिक निर्यात करता है। आने वाले राष्ट्रपति ट्रंप के भले ही भारतीय प्रधानमंत्री मोदी के साथ अच्छे संबंध हों, लेकिन वे इस उल्लंघन को शायद ही भूल पाएंगे। जाहिर है, एकमात्र सुरक्षित भविष्यवाणी कुछ हद तक अप्रत्याशितता है। विभिन्न देशों को पहले प्रशासन से अपने-अपने अनुभव मिले हैं और संभवत: वे दूसरे प्रशासन से संपर्क करने के लिए उसी से प्रेरणा लेंगे।

स्वाभाविक रूप से, दो प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं के बीच हमेशा कुछ देना और लेना होता है। जब हम आर्थिक या प्रौद्योगिकी डोमेन को देखते हैं, तो हाल के वर्षों में विश्वसनीय और भरोसेमंद साझेदारी के मामले में वास्तव में वृद्धि हुई है। आगे जो कुछ भी होने वाला है, वह उन जुड़ावों के संदर्भ में होगा जिन्हें पारस्परिक रूप से लाभकारी माना जाता है। भारत के व्यापार संबंधों का सावधानीपूर्वक पुनर्मूल्यांकन न केवल अमेरिका के साथ, बल्कि उसके अन्य सहयोगियों के साथ भी होने वाला है।

आप की बात

एमएसएमई का महत्व

भारतीय अर्थव्यवस्था में एमएसएमई के महत्व को कम करके नहीं आंका जा सकता। वे नवाचार को बढ़ावा देते हैं, रोजगार पैदा करते हैं और निर्यात तथा जीडीपी में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। उद्यमशीलता को बढ़ावा देने और बड़े पैमाने पर औद्योगिकीकरण का समर्थन करके, एमएसएमई क्षेत्रीय असंतुलन को कम करने, आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के उत्थान और सामाजिक-आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनकी अनुकूलनशीलता और लचीलापन उन्हें आर्थिक प्रतिकूलताओं का सामना करने में अपरिहार्य बनाता है, जिससे भारतीय अर्थव्यवस्था की निरंतर गतिशीलता सुनिश्चित होती है। भारत के सकल घरेलू उत्पाद में 27 प्रतिशत, कुल विनिर्माण उत्पादन में 38.4 प्रतिशत और देश के कुल निर्यात में 45 प्रतिशत के योगदान के साथ, एमएसएमई क्षेत्र अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी के रूप में कार्य करता है। प्रधानमंत्री मुद्रा योजना (पीएमएमवाई) और स्टैंड-अप इंडिया जैसी योजनाओं को सराहनीय कहा जा सकता है। ये प्रयास लाभकारी हैं, लेकिन सरकार को इन योजनाओं के बारे में जागरूकता और प्रभावी वितरण सुनिश्चित करना चाहिए ताकि अधिक से अधिक उद्यम लाभान्वित हो सकें। इससे रोजगार बढ़ेंगे एवं अर्थव्यवस्था को भी निश्चित रूप से लाभ पहुंचेगा।

– **विशाल भारद्वाज**, कानपुर

नोटों की गड्डी, जांच का विषय

न शादी न बरात, न रिसेप्शन न बाजार, न कोई खरीदारी और न ही कोई दान-पुण्य के लिए भगवान् का मंदिर। ये तो लोकतंत्र का मंदिर है जहाँ निस्वार्थ जनसेवा के लिए जनहित और देशहित में निर्णय लेने हेतु चुने हुए प्रमुख जनप्रतिनिधियों की सभा आयोजित की जाती है। यहां नोटों का क्या काम वो भी 100-200 या 500-1000 नहीं पूरी 500 (कुल 50000) के नोटों की गड्डी वो भी जनप्रितिनिधि की गद्दी पर। सभापति के पूछने पर जवाब मिलता है ये गड्डी मेरी नहीं है. मैं तो संसद में केवल 500 का नोट लाता हूँ. भाई 500 का नोट ही क्यों लाते हो खुल्ले (चिल्लर) भी तो ला सकते हो. क्योंकि 500 के नोट से ज्यादा जरूरत पड़ती है छोटे नोटों की घर से बाहर निकलने पर. वैसे दिल्ली जैसे बड़े शहर में तो 500-1000 तो सामान्य आदमी को भी अपनी जेब में लेकर चलना पड़ते हैं तब वे तो जाने-माने वकील और जनप्रतिनिधि है। केवल 500 रूपये ? बात कुछ जमी नहीं। ठीक है हो सकता है गाड़ी सरकारी, खाना-पीना संसद की डायरी में मेंटेंड तब नगद 500 रूपये काफी हैं. यूं तो आजकल डिजिटल करेंसी का जमाना है. गूगल पे, पेटीएम,एटीएम व मोबाईल याने सारी दुनिया मुट्ठी में समझो. वैसे भी ये कुछ लोगों को विपक्ष की साजिश लग रही है किन्तु पहले भी संसद में लाखों रूपये उड़ाने की घटना घट चुकी है।

– **शकुंतला महेश नेनावा**, इंदौर

गंभीर आरोप

महोदय ,संबित पात्रा द्वारा लोकसभा में राहुलगांधी व वीपक्षी दलों पर लगाया गये विदेशियों के हाथों कठपुतली बन कर नाचने के आरोप गंभीर है। हमारे देश में मीडिया को अत्यधिक स्वतंत्रता के कारण विदेशी पैसा प्राप्त करके सरकार के हर काम में रोड़े अटकने की निरंतर प्रयास होते रहे हैं। कई बार हमने देखा है कि राहुलगांधी के विचार और पाकिस्तान तथा भारत विरोधी संस्थाओं के विचार एक समान होते हैं। बल्कि राहुल गांधी विदेश से फैलाए गए भ्रम जाल को भारत में और मजबूती प्रदान करते हैं। इतना ही नहीं खुद विदेशों में जाकर भी भारत विरोधी विचारधारा वाले सक्रिय लोगों से भेंट करते हैं। भारत सरकार की कटु आलोचना करते हैं। और बिना सबूत के कुछ भी अनर्गल बयान बाजी करते रहते हैं। सरकार को अब इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर होनेवाली व्यर्थ बहसों पर सख्त पाबंदी लगाना चाहिए। प्रेस की स्वतंत्रता के नाम पर देशके लोगों के बीच सोची समझी साजिश के तहत भ्रम फैलाना और लोगोंको सरकार के खिलाफ भड़काने की कोशिशों को सख्ती से रोकना होगा। बार-बार चुनाव में जनता जब इन्हें नकारी चुकी है। तो यह भ्रम फैलाने के नए-नए हथकंडे अपनाते हैं। हाल ही में तो एक एक चुनाव क्षेत्र बेलेट पेपर पर फिर से मतदान करवाने के योजना बध्द प्रयास किए थे ताकि ईवीएम को और चुनाव आयोग को गलत ठहरा सके।

– **सुभाष बुड़ावनवाला,** रतलाम

सुखबीर बादल पर हमला

पंजाब के पूर्व डिप्टी सीएम सुखबीर बादल पर स्वर्ण मंदिर में जानलेवा हमला कई बातों का संशय पैदा कर रहा है। बढ़ते हुए खालिस्तानी प्रभाव ने भिंडरावाला की स्मृति को ताजा कर दिया है। जब स्वर्ण मंदिर खालिस्तानियों का गढ़ बन गया था। खौफ के कारण खुद सिख समुदाय के लोग भी उन्हें बाहर नहीं निकल सके। आज वैसी ही परिस्थितियां बन रही है और खालिस्तान समर्थन खुलेआम इंदिरा गांधी की हत्या का महिमा मंडन कर रहे हैं। चैलेंज दे रहे हैं कि हमने इंदिरा जी को नहीं छोड़ा तो किसी अन्य को मारना मामूली बात है। पंजाब सरकार और केंद्र सरकार को मिलकर स्थिति को सख्ती के साथ शीघ्र काबू में करना होगा। अन्यथा यह रोग नासूर बन जाएगा और धार्मिक स्थल होने के कारण उन्हें पुलिस और सेना से सुरक्षा भी मिलती रहेगी क्योंकि सेना और पुलिस धार्मिकस्थलों पर सीधे प्रवेश नहीं कर सकते हैं। साथ-ही-साथ हम धार्मिक स्थलों पर राष्ट्र राष्ट्रविरोधी गतिविधियों होने पर पुलिस और सेना को सीधे हस्तक्षेप करने की छूट होना चाहिए। ताकि राष्ट्रीय विरोधी शक्तियां हमारे धार्मिक स्थलों का शरणगाह के रूप में उपयोग न कर सके।

– **विभुक्ति बुपक्या**, खाचरोद

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से
responsemail.hindipioneer@gmail.com
पर भी भेज सकते हैं।

पायनियर
नई दिल्ली, शनिवार, 7 दिसम्बर 2024

संविधान की प्रति दिखाकर ढोंग करने वाले बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार पर मौन क्यों: योगी

मुख्यमंत्री ने बाबा साहब डॉ. भीमराव आंबेडकर के निर्वाण दिवस पर दी श्रद्धांजलि

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि आज बांग्लादेश में हिंदुओं, बौद्ध और अन्य अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों को कट्टरपंथियें द्वारा मारा जा रहा है। उन्हें जलाया जा रहा है। उनकी संपत्तियों को लूटा जा रहा है। इतना ही नहीं माता और बहनों की इज्जत के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है। जब तक वहां जिन्ना का जिन्न रहेगा तब तक इस तरह की अराजकता होती रहेगी। वहां पर गरीबों और वंचितों का शोषण हो रहा है। यह पाप 1947 में देश के विभाजन के रूप में सभी के सामने आया था। उसी का बदसूरत स्वरूप बांग्लादेश के रूप में फिर हमारे सामने है। बाब साहेब ने 1946-47 में ही जनता को इसे लेकर आगाह कर दिया था। उन्होंने कहा था कि देश का बंटवारा मत होने दीजिए। अगर यह हो गया तो आर-पार की लड़ाई शुरू हो जाएगी, जो आज हमारे सामने है।

मुख्यमंत्री शुक्रवार को विधानसभा मार्ग स्थित आंबेडकर महासभा परिसर में बाबा साहब डॉ. भीमराव आंबेडकर के निर्वाण दिवस पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। इससे पहले योगी आदित्यनाथ ने हजरतगंज स्थित बाबा साहब की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज कुछ लोग समाज को धोखा दे रहे हैं। वह समाज में झूठ फैला रहे हैं। यह वही लोग हैं, जो उसे समय हैदराबाद के निजाम और उनके राजाकारों द्वारा दलितों के गांव जलाए जा रहे थे तो चुप थे। उस दौरान उनका शोषण हो रहा था। उन पर अत्याचार किया जा रहा था। उस समय भी बाबा साहब आंबेडकर ने खुला पत्र लिखा था कि हैदराबाद के निजाम की रियासत के सभी दलितों, जिन पर अत्याचार हो रहा है, वह निजाम की रियासत को छोड़कर महाराष्ट्र की ओर चले जाएं लेकिन अपना धर्म और मत न बदलें। वहीं हैदराबाद के निजाम और पाक परस्त जिन्ना के लोगों ने अपने नापाक इरादों को अंजाम देने के लिए बाबा साहब को प्रलोभन देने का प्रयास किया, लेकिन वह अपने आदर्शों से टस से मस नहीं हुए। उन्होंने कहा कि मैं हमेशा भारतीय ही रहूंगा। मैंने भारतीय के रूप में जन्म लिया है और मेरी अंतिम यात्रा भी भारतीय के रूप में ही निकलेगी। उन्होंने आजीवन इस व्रत का पालन भी किया। वह लगातार दलित और वंचितों के लिए काम करते रहे। जिन लोगों ने बाबा साहब की बात मानी, वह आज भारत में सुरक्षित हैं और आरक्षण का लाभ प्राप्त कर रहे हैं। हमारी सरकार उन सभी का सम्मान करने के साथ उन्हे हर सुविधा उपलब्ध करा रही है। सीएम ने कहा कि योगेंद्र नाथ मंडल की बातों में आकर जो लोग बहक गये थे, वह आज पाकिस्तान और बांग्लादेश में अत्याचार सह रहे हैं।

गुरु तेग बहादुर ने विदेशी आक्रांताओं से कश्मीर व सनातन की रक्षा की: मुख्यमंत्री

गुरु तेग बहादुर के शहादत दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में शामिल हुए सीएम योगी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने यहियागंज गुरुद्वारा में गुरु परंपरा के नवम् गुरु श्री तेग बहादुर महाराज के बलिदान दिवस पर उन्हें श्रद्धांजलि दी। इस दौरान सीएम योगी ने उनके बलिदान और स्मृतियों को नमन करते हुए कहा कि सिख पंथ के अनुयायियों ने अपनी साधना और सामर्थ्य से अपने कौम के साथ-साथ पूरे देश को और पूरे सनातन धर्म को न केवल सुरक्षा प्रदान की बल्कि एक लंबे समय के लिए उन्हें अभय भी प्रदान किया। उन्होंने कहा कि गुरु तेग बहादुर जी महाराज ने उस समय कश्मीर को बचाया था जब वहां के सनातन धर्मावलंबियों को विदेशी आक्रांताओं द्वारा धर्म परिवर्तन करने का आदेश मिला था।

सीएम योगी ने कहा कि गुरु तेग बहादुर ने कश्मीरी पंडितों को एक नया जीवन दिया था। धर्म परिवर्तन के आदेश के बाद सुरक्षा के लिए भटक रहे कश्मीरी पंडितों को न सिर्फ नया जीवन दिया था बल्कि उनसे कहा था कि अत्याचारियों से कह दो कि पहले हमारे गुरु को इस्लाम स्वीकार कराओ। सीएम योगी ने कहा कि गुरु तेग बहादुर ने हमेशा देश और धर्म को प्राथमिकता दी और किसी विदेशी आक्रांता के सामने सिर नहीं झुकाया। योगी ने कहा कि वह कैसा कालखंड रहा होगा जब एक विदेशी आक्रांता बाबर देश के अंदर अत्याचार कर रहा था, उसके खिलाफ गुरु नानक देव जी ने आवाज उठाई थी। सीएम ने कहा कि इतिहास के उन पन्नों को कौन नहीं जानता है जब भक्ति की इस परंपरा से ऊपर उठकर उन्होंने समय के साथ तात्कालिक समाज को एक नई दिशा देने का काम किया था। वहां से चलकर हम शहादत और बलिदान की एक सुदृढ़ नियम को आगे बढ़ाते हुए गुरु गोविंद सिंह महाराज तक पहुंचे। वह शक्ति का एक दिव्य पुंज बन करके न केवल सनातन धर्म की रक्षा के लिए बल्कि भारत की रक्षा के लिए अपने आपको बलिदान करने से पीछे नहीं हटे। योगी ने कहा कि गुरु तेग बहादुर अपनी शहादत के पहले सनातन धर्म की रक्षा के लिए, देश और धर्म की रक्षा करने के लिए गुरु गोविंद सिंह जी महाराज जैसा सशक्त शक्तिपुंज भी देश को दिया।

कृषि मंत्री ने योजनाओं की धीमी प्रगति पर अधिकारियों को लगाई फटकार

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही द्वारा शुक्रवार को कृषि निदेशालय में विभागीय योजनाओं तथा कार्यक्रमों की समीक्षा बैठक की गई। इस दौरान उन्होंने धीमी प्रगति पर नाराजगी जताई तथा निर्देशित किया कि योजनाओं का क्रियान्वयन समयबद्ध रूप से सुनिश्चित किया जाए ताकि किसानों को समय से योजनाओं का लाभ मिल सके।

समीक्षा बैठक के दौरान उन्होंने बीज वितरण, एनएफएसएम योजना, खेत तालाब योजना, त्वरित मक्का विकास योजना, परम्परागत कृषि विकास योजना तथा मिलेट्स पुनरोद्धार कार्यक्रम सहित अन्य विभागीय योजनाओं की समीक्षा की। जिन योजनाओं में आवंटित बजट के सापेक्ष धनराशि अभी तक व्यय नहीं की गई है उन योजनाधिकारियों पर कृषि मंत्री ने सख्त नाराजगी व्यक्त की। उन्होंने कृषि निदेशक श्री जितेन्द्र तोमर सहित अन्य योजना अधिकारियों को निर्देशित किया कि वे सम्बन्धित योजनाओं हेतु आवंटित बजट को समय पर खर्च करना सुनिश्चित करें तथा समयबद्ध मॉनीटरिंग करते रहें।

इस दौरान कृषि राज्यमंत्री श्री बलदेव सिंह औलख, प्रमुख सचिव कृषि श्री रवीन्द्र, सचिव श्री अनुराग यादव, निदेशक कृषि सहित अन्य योजनाधिकारी उपस्थित रहे।

जीवन को सरल बनाने के लिए कठिन मेहनत जरूरी: डॉ. जीके गोस्वामी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उत्तर प्रदेश स्टेट इंस्टीट्यूट ऑफ़ फॉरेंसिक साइंस लखनऊ में जनपद सीतापुर के 10 विद्यालयों से आए छात्र-छात्राओं ने आज उत्तर प्रदेश स्टेट इंस्टीट्यूट आफ फॉरेंसिक साइंस लखनऊ के फॉरेंसिक लैब, परिसर भ्रमण एवं व्याख्यान का लाभ लेकर फोरेंसिक विज्ञान के महत्व एवं बारीकियों को सीखा। सीतापुर से आए बच्चों के लिए विशेष व्याख्यान सत्र का भी आयोजन किया गया था। उत्तर प्रदेश स्टेट इंस्टीट्यूट ऑफ़ फॉरेंसिक साइंस लखनऊ के संस्थापक निदेशक डॉ जी.के. गोस्वामी ने बच्चों एवं उनके साथ आए शिक्षकों को फोरेंसिक विज्ञान के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि फॉरेंसिक साइंस एक न्यूट्रल विज्ञान है, जो मात्र सत्य और न्याय का साथी है। उन्होंने कहा कि मौखिक साक्ष्य महत्वपूर्ण तो है ही परन्तु उसमें दूषित होने की संभावना हो सकती है।

युनाइटेड नेशन में दक्षिण कोरिया के पूर्व राजदूत मयंग चुल हाम ने की अखिलेश यादव से भेंट

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव से शुक्रवार को संयुक्त राष्ट्र संघ में दक्षिण कोरिया के पूर्व राजूदत मयंग चुल हाम ने भेंट की और दोनों देशों के बीच पुराने सांस्कृतिक सम्बंधों की चर्चा के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बंधों के विस्तार पर वार्ता की। उनका मानना है कि भारत-दक्षिण कोरिया के बीच राजनीतिक, आर्थिक और व्यापारिक रिश्तों के लिए तमाम संभावनाएं हैं।

दक्षिण कोरिया के पूर्व राजदूत मयंग चुल हाम ने कहा कि उत्तर प्रदेश भारत का सबसे बड़ा प्रदेश है। उन्होंने राजधानी लखनऊ में इकाना स्टेडियम, पलासियों मॉल के अलावा शिल्पग्राम देखा और उन्होंने समाजवादी सरकार में हुए अन्य निर्माणकार्यों का इतिहास जानने में भी दिलचस्पी दिखाई।

मयंग चुल हाम जनेश्वर मिश्र पार्क, आगरा लखनऊ एक्सप्रेस-वे से बहुत प्रभावित हुए और इन विश्वस्तरीय निर्माण कार्यों की उन्होंने प्रशंसा की। उन्होंने समाजवादी सरकार के तमाम विकास कार्यों के लिए अखिलेश यादव की सराहना की। उन्हें यह जानकार विशेष प्रसन्नता हुई कि समाजवादी सरकार के कार्यकाल में ही सैमसंग को उत्तर प्रदेश में स्थापित होने का अवसर दिया गया था। मयंग चुल हाम ने अखिलेश यादव को दक्षिण कोरिया की यात्रा के लिए भी आमंत्रित किया जिससे दोनों देशों के लोगों के बीच मैत्री प्रगाढ़ होती है।

केशव प्रसाद मौर्य ने तेलंगाना के राज्यपाल व सीएम को महाकुंभ में आने का न्यौता दिया

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने शुक्रवार को हैदराबाद स्थित राजभवन में तेलंगाना के राज्यपाल जिष्णु देव वर्मा से आत्मीय भेंट किया और प्रयागराज में आयोजित महाकुंभ में आने निमंत्रण दिया। उन्होंने हैदराबाद में ही तेलंगाना के मुख्यमंत्री अनुमुला रेवंत रेड्डी के साथ भेंटकर महाकुम्भ मेला के भव्य आयोजन में सम्मिलित होने के लिए आमंत्रण दिया। उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने तेलंगाना के राज्यपाल व मुख्यमंत्री को कुम्भ कलश, कुम्भ का लोगो व आमन्त्रण पत्र देकर उन्हें महाकुंभ में सपरिवार आने के लिए आमंत्रित किया और तेलंगाना राज्य के लोगों से भी महाकुंभ में आने की अपील की।

इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री ने मुख्यमंत्री से महाकुम्भ मेले के महत्व और इसके पीछे की पौराणिक कथाओं के बारे में चर्चा भी की। इस दौरान उप मुख्यमंत्री के साथ उत्तर प्रदेश के पूर्व कैबिनेट मंत्री व विधायक सिद्धार्थ नाथ सिंह भी मौजूद रहे। शनिवार को उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य आन्ध्र प्रदेश में रहेंगे।

केशव प्रसाद मौर्य हैदराबाद मे कान्हा शांति वनम् के हार्टफुलनेस संस्थान में इनडोर स्टेडियम, जिम, स्विमिंग पूल, हर्बल गार्डन एवं पूज्य बाबूजी महाराज की प्रतिमा का अवलोकन कर सभी व्यवस्थाओं के बारे में जानकारी प्राप्त की।

हैदराबाद के कान्हा शांति वनम स्थित हार्टफुलनेस संस्थान में आयोजित गीतोपदेश शिखर सम्मेलन-2024 को किया सम्बोधित

कान्हा शांति वनम में वरिष्ठ जनों के साथ उपवन में वृक्षारोपण किया तथा उनके रखरखाव व पुराने पेड़ों के बारे में चर्चा की। उप मुख्यमंत्री मौर्य ने हैदराबाद के कान्हा शांति वनम स्थित हार्टफुलनेस संस्थान में आयोजित गीतोपदेश शिखर सम्मेलन-2024 में उपस्थित सभी छात्र-छात्राओं एवं सम्मानित हार्टफुलनेस परिवार के सदस्यों को संबोधित कर गीता जयंती की हार्दिक शुभकामनाएं दीप कहा कि श्रीमद्भागवत गीता हमारे जीवन का सार है, जिसके माध्यम से हम प्रकृति और मानव जीवन में सामंजस्य लाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता दुनिया का एक मात्र ऐसा ग्रंथ है, जिसकी जयंती मनाई जाती है। कहा आइए हम सभी भगवान श्री कृष्ण के द्वारा बताये गए मार्ग का अनुसरण करें और जीवन को सार्थक बनायें।

कान्हा शांति वनम, हैदराबाद में हार्टफुलनेस के वैश्विक आध्यात्मिक मार्गदर्शक व पद्म भूषण से सम्मानित पूज्य कमलेश डी पटेल 'दाजी' के सानिध्य में 'गीतोपदेश शिखर सम्मेलन-2024' का शुभारंभ और संस्थान के बच्चों की सांस्कृतिक प्रस्तुति का अवलोकन कर उत्साहवर्धन किया।

महा परिनिर्वाण दिवस पर रालोद ने आयोजित की संगोष्ठी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

भारत रत्न बाबा साहब भीम राव अम्बेडकर के महा परिनिर्वाण दिवस पर राष्ट्रीय लोकदल के राष्ट्रीय प्रवक्ता अनिल दुबे के नेतृत्व में राष्ट्रीय लोकदल के पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं ने हजरतगंज स्थित बाबा साहब की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए। वहीं, राष्ट्रीय लोकदल के प्रदेश कार्यालय में बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर के महापरिनिर्वाण दिवस पर प्रदेश अध्यक्ष रामाशीष राय की अध्यक्षता में एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसका संचालन प्रदेश महासचिव रजनीकांत मिश्रा ने किया। रालोद प्रदेश अध्यक्ष रामाशीष राय ने बाबा साहेब को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुये कहा कि बाबा साहेब जातिवाद के घोर विरोधी थे तथा शिक्षा को सर्वमान्य मानते थे। उनका मानना था कि बिना शिक्षित हुये समाज एवं राष्ट्र का उत्थान संभव नहीं है। आज हम सबको उनके बताये हुये रास्ते पर चलने की जरूरत है। संविधान निर्माता के द्वारा रचित संविधान के रास्ते पर चलने की प्रेरणा लेनी चाहिए। इस मौके पर पार्टी द्वारा आयोजित समता, समरता पखवाड़ा कार्यक्रम की शुरुआत भी की गयी। जिसका आयोजन भारत रत्न चौधरी चरण सिंह जयन्ती 23 दिसंबर तक सभी पदाधिकारी अपने अपने क्षेत्र एवं जनपद में समरसता पखवाड़ा का आयोजन करेंगे। राष्ट्रीय लोकदल के पूर्व विधायक शिव करन सिंह व राष्ट्रीय सचिव विजय श्रीवास्तव ने बाबा साहेब के व्यक्तित्व पर अपने विचार व्यक्त किये।

परिवहन आयुक्त ने स्कूली वाहनों के विरुद्ध विशेष चेकिंग अभियान चलाने के दिए निर्देश

लखनऊ। परिवहन आयुक्त चन्द्रभूषण सिंह ने सभी संभागीय/ सहायक संभागीय अधिकारी (प्रवर्तन) एवं समस्त यात्री/ मालकर अधिकारी को 12 दिसम्बर से 24 दिसम्बर, 2024 तक स्कूली वाहनों के विरुद्ध विशेष चेकिंग अभियान चलाये जाने के निर्देश दिए हैं। प्रदेश के अधिकांश जनपदों में मानकों के विपरीत बिना फिटनेस या स्कूल के नाम बिना पंजीकृत/ अनुबंधित स्कूल वाहनों का संचालन किया जा रहा है। ऐसे वाहनों के विशेष जांच किये जाने की आवश्यकता है। परिवहन आयुक्त ने बताया कि जिला मुख्यालय से दूर स्थित विद्यालयों में मारूति वैन, मैजिक, आटो, ईरिक्शा में बच्चों को विद्यालय अभिभावकों की सहमति से बिठाकर स्कूल भेजा जा रहा है। विद्यालय परिवहन सुरक्षा समिति की नियमित बैठक कराकर अभिभावक/स्कूल प्रबंधन एवं स्थानीय प्रशासन का सहयोग लेकर प्रभावी कार्यवाही किये जाने के निर्देश दिये हैं। मुख्यमंत्री जी एवं परिवहन मंत्री के निर्देश है कि किसी भी परिस्थिति में अनफिट स्कूली वाहन से बच्चों को स्कूल न भेजा जाए। अभियान की मुख्यालय स्तर से नियमित मानीटरिंग भी की जायेगी और लापरवाही करने वाले अधिकारियों के खिलाफ भी विभागीय कार्यवाही की जायेगी।

बुंदेलखंड क्षेत्र के किसानों की समस्याओं को लेकर कृषि मंत्री से मिले रालोद नेता

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

राष्ट्रीय लोक दल के राष्ट्रीय सचिव अनुपम मिश्रा ने शुक्रवार को प्रदेश सरकार के कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही से भेंट कर उन्हें बुंदेलखण्ड क्षेत्र के किसानों की बिंदुवार समस्याओं से अवगत कराया। पिछले दिनों जनसंवाद के इस क्रम में जनपद जालौन के कई गाँव में किसान चौपालों को भी संबोधित किया था, जहाँ किसानों ने उन्हें कृषि संबंधी समस्याओं से अवगत कराते हुए उनके समाधान हेतु छह सूत्रीय प्रार्थना पत्र सौंपा था। जिसमें खाद, मवेशी, बिजली आपूर्ति, नहरों व नलकूपों का संचालन तथा मटर क्रय केंद्र खोले जाने की प्रमुख माँगे सम्मिलित थी। इस मौके पर शाही ने रालोद प्रतिनिधि मंडल सदस्यों को बुंदेलखंड क्षेत्र में कृषि एवं किसानों की समस्याओं के समाधान हेतु सरकार द्वारा की गई क्रियान्वित योजनाओं के बारे में अवगत कराया। साथ ही कृषि मंत्री ने समस्याओं के निवारण हेतु हरसंभव कदम उठाने का आश्वासन देते हुए स्थानीय स्तर पर विद्यमान समस्याओं का आंकलन कर समाधान हेतु संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया। प्रतिनिधिमंडल में शैलेष कुमार सिंह, सुरेश श्रीवास्तव, विजय कुमार,शालिनी सिंह व अन्य रालोद नेता शामिल थे।

भाजपा सरकार से है बाबा साहब के संविधान को खतरा: अखिलेश

सपा के राज्य मुख्यालय सहित पार्टी के सभी जिला कार्यालयों पर बनाया गया डॉ. आम्बेडकर का परिनिर्वाण दिवस

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

समाजवादी पार्टी के राज्य मुख्यालय समेत प्रदेश के सभी जिला कार्यालयों पर भारतरत्न बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर के परिनिर्वाण दिवस पर उन्हें याद करते हुए श्रद्धांजलि दी गई। बाबा साहब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर के परिनिर्वाण दिवस पर मुख्य कार्यक्रम समाजवादी पार्टी के राज्य कार्यालय 19- विक्रमादित्य मार्ग, लखनऊ में हुआ। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने भारतरत्न बाबा साहब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर जी की प्रतिमा पर श्रद्धा सुमन अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए नमन किया। इस अवसर पर नेता विरोधी दल माता प्रसाद पांडेय, समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव एवं पूर्व कैबिनेट मंत्री राजेंद्र चौधरी एवं समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्याम लाल पाल ने बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर को श्रद्धांजलि अर्पित की। अखिलेश यादव ने इस अवसर पर कहा कि भारतरत्न बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर ने भारत का संविधान बनाकर देश के गरीबों, दलितों पिछड़ों, अल्पसंख्यकों, आदिवासियों, महिलाओं और वंचित वर्गों को उनका हक और अधिकार दिलाने का काम किया। बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर जी का बनाया हुआ संविधान हम सबके लिए संजीवनी है, संविधान से हमें अधिकार और सम्मान मिला हुआ है। संविधान पीडीए की ढाल है। इस संविधान की रक्षा करना सभी का कर्तव्य है। अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा सरकार से बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर के संविधान को खतरा है।

बीजेपी ने बूथ स्तर पर मनाया महापरिनिर्वाण दिवस

लखनऊ। भारतीय संविधान के शिल्पकार, समाज सुधारक, विधिवेत्ता, अर्थशास्त्री एवं%भारत रत्न% बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर की हजरतगंज स्थित प्रतिमा पर प्रात: मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक, महानगर अध्यक्ष आनंद द्विवेदी एवं अन्य जनप्रतिनिधियों के साथ 'बाबा साहब' की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर नमन करा। इस अवसर पर मंत्री बलदेव सिंह औलख, कपिल अग्रवाल, असीम अरुण, अध्यक्ष, अनुसूचित जाति एवं जनजाति आयोग, उत्तर प्रदेश बैजनाथ रावत, महापौर सुषमा खर्कवाल , विधायक ओपी श्रीवास्तव,सदस्य विधान परिषद लालजी प्रसाद निर्मल, राम चंद्र प्रधान एवं पार्टी पदाधिकारी उपस्थित रहे। मीडिया प्रभारी प्रवीण गर्ग ने बताया कि बूथ स्तर पर आयोजित कार्यक्रमों में महानगर अध्यक्ष आनंद द्विवेदी ने कैंट विधानसभा के गीता पल्ली वार्ड की बूथ संख्या 182 पर, एमएलसी मुकेश शर्मा ने मध्य विधानसभा की बूथ संख्या 217 पर और जनप्रतिनिधियों ने भीमराव अंबेडकर के चित्र पर श्रद्धांजलि अर्पित की और बाबा साहेब के बताये रास्ते पर चलकर उनके सपनों को साकार करने का आह्वान किया। भाजपा प्रदेश कार्यकाल पर आयोजित संविधान गौरव पर्व में मुख्य अतिथि प्रदेश महामंत्री गोविंद नारायण शुक्ल, अवध क्षेत्र प्रभारी एवं प्रदेश महामंत्री संजय राय, महानगर अध्यक्ष आनंद द्विवेदी, महापौर सुषमा खर्कवाल, प्रदेश मंत्री शंकर लाल लोधी, शिव भूषण सिंह, अनुसूचित जनजाति मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष राम चंद्र कनौजिया अनुसूचित जनजाति आयोग सदस्य रमेश तूफानी, पूर्व विधायक ओ पी श्रीवास्तव, पश्चिम उपविजेता अंजनी श्रीवास्तव, मध्य उपविजेता रजनीश गुप्ता ने बाबा साहब भीमराव अंबेडकर के चित्र पर पुष्प अर्पित कर कार्यक्रम की शुरुआत की।

संवैधानिक कल्याण के लिए पूरी जिद के साथ सत्ता की मास्टर चाभी प्राप्त करें बहुजन : मायावती

लखनऊ। बाबा साहेब डा. भीमराव अम्बेडकर के परिनिर्वाण दिवस पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए बसपा सुप्रीमो मायावती ने भाजपा और कांग्रेस आदि पर संविधान के आदर्शों के अनुरूप न चलने का आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि सत्ता के असली हक़दार देश के बहुजनों को करना होगा तभी यहाँ सही संवैधानिक कल्याण का रास्ता खुलेगा। मायावती ने कहा कि देश के लोगों ने कांग्रेस और भाजपा आदि के लगभग 75 वर्षों का लम्बा राज-काज देख लिया है, किन्तु आत्म-सम्मान व स्वाभिमान के साथ जीवन जीने के लिए सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक उन्नति का संवैधानिक अधिकार पाने का उनका सपना अधूरा के अधूरा है। क्योंकि इन विरोधी पार्टियों की सरकारों के दिल में कुछ और जुबान पर कुछ और की जनविरोधी ग़ैर-ईमानदार नीयत व नीति के आधार पर सरकार चलाई है। इसी कारण देश का हाल बेहाल बना हुआ है।

संघर्ष की एक ज्वलंत मिसाल है बाबा साहब का जीवन: अजय राय

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

भारतीय संविधान के निर्माता, भारत रत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर के परिनिर्वाण दिवस के अवसर पर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष पूर्व मंत्री अजय राय ने बाबा साहब के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किया। उन्होंने डॉ. अम्बेडकर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि बाबा साहब ने अपना सम्पूर्ण जीवन देश के शोषित, पीड़ित, वंचित वर्ग लोगों के सम्मानजनक जीवन और न्याय का हक दिलाने के लिए समर्पित किया। बाबा साहब का जीवन संघर्ष की एक ज्वलंत मिसाल है। उन्होंने अपना पूरा जीवन व्यवस्था के खिलाफ लड़ते हुए वंचितों को इंसान होने का हक दिलवाने में बिताया। उन्होंने कहा कि विश्व के महानत्म विद्वान, संविधान निर्माता, भारत रत्न, बोधिसत्व बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर द्वारा निर्मित संविधान की वजह से ही इस देश को समानता का हक मिला। बाबा साहब द्वारा रचित संविधान हर इंसान को बराबरी का हक देता है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का हक देता है। जाति, धर्म के आधार पर किसी भी तरीके के भेदभाव को खारिज करता है। राय ने कहा कि वर्तमान सत्ता जिस तरीके से संविधान को बदल देने का कुत्सित प्रयास कर रही है हम उसे होने नहीं देंगे, हम प्रतिबद्ध हैं संविधान की रक्षा के लिए।

डीजी अभय कुमार ने उत्कृष्ट कार्य करने वाले स्वयंसेवकों को सम्मानित किया

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

नागरिक सुरक्षा के स्थापना दिवस की 62वीं वर्षगांठ के अवसर पर नागरिक सुरक्षा नियंत्रण केन्द्र पर स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि नागरिक सुरक्षा उत्तर प्रदेश पुलिस महानिदेशक अभय कुमार प्रसाद ने परिसर में ध्वजारोहण किया। इसके तत्पश्चात आपदाओं में सजग एवं अहम भूमिका निभाई वाले निस्वार्थ उत्कृष्ट कार्य करने वाले वार्डेनों को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया।

मुख्य अतिथि अभय कुमार प्रसाद का स्वागत चीफ वार्डेन अमरनाथ मिश्र, डिप्टी चीफ वार्डेन गुरूप्रीत सिंह सेठी, स्टाफ आफीसर ऋतुराज रस्तोगी एवं उप नियंत्रक अनीता प्रताप ने किया। स्वागत भाषण में चीफ वार्डेन अमरनाथ मिश्रा कहा कि वर्ष 2024 में सिविल डिफेन्स लखनऊ के स्वयंसेवकों द्वारा किये गये कार्यों से डीजी को अवगत कराया और यह भी बताया कि इस वर्ष लोकसभा चुनाव में लखनऊ सिविल डिफेन्स द्वारा 297 मतदान केन्द्रों में मतदाताओं की सुविधा हेतु व्यवस्था की गयी। जिसमें दिव्यांगजनों व वरिष्ठ मतदाताओं की सहायाता हेतु मतदाता मित्र के रूप में 595 स्वयंसेवकों के द्वारा यह कार्य किया गया। डीजी ने सभी स्वयं सेवको को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। स्थापना दिवस के अवसर पर डीजी ने सर्वप्रथम राष्ट्रपति द्वारा स्थापना दिवस पर भेजे गए संदेश को पढ़कर सुनाया, इसी क्रम में चीफ़ वार्डेन ने प्रधानमंत्री एवं गृहमंत्री का संदेश पढ़कर सुनाया। तत्पश्चात डिप्टी चीफ़ वार्डेन ने डीजी सिविल डिफेंस भारत सरकार एवं सचिव सिविल डिफेंस भारत सरकार का शुभकामना संदेश पढ़कर सुनाया।

पायनियर
नई दिल्ली , शनिवार, 7 दिसंबर, 2024

मंत्री व पूर्व सांसद ने बाबा साहब को दी श्रद्धांजलि

संवाददाता। कानपुर देहात

शुक्रवार को बाबा साहब डॉ. भीमराव आंबेडकर के परिनिर्वाण दिवस के मौके पर उत्तर प्रदेश सरकार की राज्यमंत्री प्रतिभा शुक्ला व पूर्व सांसद अनिल शुक्ला वारसी ने रामजानकी महाविद्यालय स्थित अपने कार्यालय में एवं अकबरपुर कस्बा स्थित सहज़ादपुर गांव में बाबा साहब डॉ. भीमराव आंबेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण व पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि अर्पित की। राज्यमंत्री प्रतिभा शुक्ला ने कहा कि डॉ. भीमराव आंबेडकर के परिनिर्वाण दिवस पर भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश भर के कार्यकर्ता सभी बूथों पर विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे है। प्रत्येक बूथ पर संविधान की प्रस्तावना का वाचन किया गया है। गोष्ठियों के माध्यम से बूथ स्तर पर राष्ट्र नवनिर्माण में डॉ. आंबेडकर के योगदान बताया जा रहा है। उन्होंने कहा कि 'अंत्योदय' एवं लोक-कल्याण हेतु समर्पित बाबा साहब सच्चे अर्थों में मां भारती के महारत्न और लोकतंत्र की पाठशाला हैं। उनका संपूर्ण जीवन हम सभी के लिए पाथेय है। पूर्व सांसद अनिल शुक्ला वारसी ने कहा कि बाबा साहब ने कहा था कि अनुच्छेद 370 देश के अंदर विभाजनकारी तत्वों को सिर उठाने का अवसर प्रदान करेगी। जैसे भी हो इसे समाप्त करना चाहिए और उनकी बात सही साबित हुई। प्रधानमंत्री ने अनुच्छेद 370 हटाई और यही बाबा साहब को सच्ची श्रद्धांजलि है। इस मौके पर बउवा पांडेय ,सौरभ मिश्रा ,बबलू भारती ,सरमन तिवारी ,मन्नी गुप्ता ,कमल शुक्ला ,सियाराम कमल ,रामखिलावन आदि मौजूद रहे। डॉ भीमराव अंबेडकर भारतीय संविधान के निर्माता, समाज सुधारक ,सामाजिक न्याय के लिए संघर्ष के प्रतीक थे दलित वर्गों को समानता दिलाने के लिए जीवन भर संघर्ष करते रहे उक्त विचार मुलायम सिंह यादव अध्यक्ष जिला बार एसोसिएशन कानपुर देहात ने डॉक्टर अंबेडकर की 68वीं पुण्यतिथि पर जनपद न्यायालय परिसर झंडा पार्क में अधिवक्ताओं की गोष्ठी में कही।

कांग्रेस ने डॉ. अम्बेडकर की पुण्य तिथि पर किया नमन

कानपुर देहात। जिला कांग्रेस की ओर से सीधामऊ गांव में बनी अम्बेडकर प्रतिमा पर जिलाध्यक्ष नरेश कटियार की अध्यक्षता में लगभग आधा सैकडा लोगो ने अम्बेडकर प्रतिमा पर फूल माला समर्पित कर उनके ब्यक्तित्व पर प्रकाश डाल कर दो मिनट मौन रखा व आत्म शांति की कामना की। इस मौके पर पीसीसी शमीम कुरैशी सगीर अहमद बसंत लाल डी यस राठौर रोहित कटियार के अलावा अशोक शुक्ल अजय यादव रमेश मलखान सिंह ताहिर राजेंद्र आदि काग्रेस के लोगोंने जिला कार्यालय आकर मनोनीत प्रदेश सेवादल महासचिव राम औतार दीक्षित को माला आदि पहनाकर सभी जनों ने स्वागत कर एक दूसरे का मुंह मीठा कराया। अंत में दीक्षित जी ने उपस्थित सभी कांग्रेसी जनों के प्रति आभार व्यक्त किया।

संविधान बनाकर बाबा साहब ने दलितों, पिछड़े व शोषित वर्ग को अधिकार देने का कार्य कियाः कठेरिया

संवाददाता। फर्रुखाबाद

भारत रत्न डॉ बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर के 69 वें परिनिर्वाण दिवस के अवसर पर अंतर्राष्ट्रीय प्रबुद्ध महासंघ के अंतर्गत कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पूर्व केंद्रीय मंत्री डॉ राम शंकर सिंह कठेरिया एवं विशिष्ट अतिथि जॉइंट कमिश्नर पंकज कुमार सिंह एवं प्रोफेसर दिल्ली विश्वविद्यालय चंद्रकांता माथुर ने आयोजित संगोष्ठी को संबोधित किया। इस कार्यक्रम में भाजपा जिला अध्यक्ष रूपेश गुप्ता सहित अन्य सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हुए व्यक्ति सम्मिलित हुए। कार्यक्रम की अध्यक्षता कायमगंज के पूर्व विधायक अमर सिंह खटीक ने की एवं कार्यक्रम संयोजक वीरेंद्र सिंह कठेरिया रहे।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पूर्व केंद्रीय मंत्री डॉ राम शंकर सिंह कठेरिया ने कहा महान समाज सुधारक अर्थशास्त्री राजनीतिज्ञ और विधिवेता भारत रत्न डॉ बी आर अंबेडकर एक संघर्षशील व्यक्तित्व थे। भारत के संविधान का निर्माण करके उन्होंने अति पिछड़े गरीब दलित शोषित और वंचित लोगों को अधिकार देने का कार्य किया। दलित बौद्ध आंदोलन से प्रेरित होकर उन्होंने समाज में व्याप्त छुआछूत को समाप्त करने का संकल्प लिया था। समावेशी समाज के निर्माण में अपना अभूतपूर्व योगदान देने वाले डॉ आंबेडकर सदियों सदियों तक याद किए जाएंगे। लड़ी उनके इस निर्माण दिवस पर उनके विचारों से प्रेरणा लेकर वर्तमान की युवा पीढ़ी को समाज में फैल रही कुरीतियों के खिलाफ खड़ा होना है। तभी उनको सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित होगी। विशिष्ट अतिथि जॉइंट कमिश्नर पंकज कुमार सिंह ने कहा डॉ बी आर अंबेडकर को केवल भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व के अनेकों देश में

सपा कार्यालय पर मनाया गया बाबा साहब भीमराव अंबेडकर का परिनिर्वाण दिवस

फर्रुखाबाद। आज दिनांक 6 दिसंबर को आवास विकास स्थित समाजवादी पार्टी कार्यालय पर संविधान के रचयिता भारत रत्न बाबा साहब भीमराव अंबेडकर का महापरिनिर्वाण दिवस समाजवादी पार्टी कार्यालय पर मनाया गया। इस अवसर पर जिला अध्यक्ष चंद्रपाल सिंह यादव की अध्यक्षता में समस्त समाजवादी पार्टी के नेताओं ने बाबा साहब भीम राव अंबेडकर के चित्र पर पुष्प अर्पित किए। उसके उपरांत एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के दौरान जिला अध्यक्ष चंद्रपाल सिंह यादव ने कहा समस्त पार्टी के पदाधिकारीयों को वोट बढ़ाने पर जोर दिया, कहा जब वोट ही नहीं होगा तो कैसे सरकार बनाएंगे। उन्होंने नाराजगी व्यक्त करते हुए कहा कि कुछ संगठनों को छोड़कर किसी ने भी फ्रंटल संगठन में पूरा संगठन सक्रिय तौर पर नहीं बनाया है जिसे जल्द से जल्द सक्रिय करें।

दिव्यांग बच्चों के कल्याण व सक्षम बनाने के लिए ब्लॉक सरवनखेड़ा में लगा कैंप

●मुख्य विकास अधिकारी ने दिव्यांग बच्चों को वितरित की होम बेस्ड लर्निंग किट

कानपुर देहात। जिलाधिकारी आलोक सिंह के निर्देशन व मुख्य विकास अधिकारी लक्ष्मी एन. के मार्गदर्शन में दिव्यांग बच्चों के कल्याण एवं सक्षम बनाए जाने के उद्देश्य से आधार कार्ड बनाने, दिव्यांगता प्रमाण पत्र जारी करने एवं निशुल्क उपकरण वितरण हेतु एक कैंप का आयोजन विकासखंड सरवन खेड़ा के ब्लॉक कार्यालय परिसर में किया गया एवं वहीं पर दिव्यांगो के यूडीआइडी कार्ड, जन्म प्रमाण पत्र, राशन कार्ड में नाम, दिव्यांग प्रमाण पत्र आदि से संबंधित विभागों के स्टाल लगाकर योजनाओं का लाभ दिलाया गया। बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा चिन्हित 15 बच्चे जो स्वयं चलकर विद्यालय आ पाने में असमर्थ हैं ऐसे दिव्यांग बच्चों को होम बेस्ड लर्निंग किट, 7 डी जी प्लेयर दृष्टि बाधित बच्चो के लिए और 02 ब्रेल किट दृष्टि बाधित बच्चो के लिए उपकरण वितरित किये। उन्होंने कहा कि शासन की योजना का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे यही हमारा उद्देश्य है।

तहसील व नगर पंचायत स्तर पर जीएसटी कार्यशाला करें आयोजितः डीएम

संवाददाता। फतेहपुर

सड़क पर फैले अतिक्रमण को स्वयं हटा लें व्यापारी, अन्यथा होगी कार्रवाई

जिलाधिकारी रविन्द्र सिंह की अध्यक्षता में व्यापार बंधु की बैठक कलेक्ट्रेट स्थित महात्मा गांधी सभागार में संपन्न हुई। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि व्यापारियों की शिकायतों व सुझावों का निस्तारण नियमानुसार कार्यवाही करते हुए संवेदनशीलता के साथ करें। उन्होनें अधिकारियों को निर्देशित किया कि प्रवर्तन कार्य के लिए व्यापारियों के अधिष्ठानो में जाएं या अन्य प्रवर्तन का कार्य करते समय अपना परिचय पत्र अवश्य रखें अन्यथा नियमानुसार कड़ी कार्यवाही की जाएगी।

डीएम ने उपायुक्त राज्य कर को निर्देशित किया कि जीएसटी से संबंधित कार्यशाला का आयोजन तहसील स्तर एवं नगर पंचायत स्तर पर किया जाए। व्यापारियों को आयोजन के पूर्व जानकारी दें। समाचार पत्रों में आयोजन की तिथि, समय, स्थान का भी प्रकाशन करायें जिससे अधिक से अधिक व्यापारीगण इसका लाभ उठा सके। उन्होंने व्यापारिक संगठनों के पदाधिकारियों से कहा कि जिन व्यापारियों ने सड़क पर अतिक्रमण किया है उसको हटवा लें अन्यथा की दशा में नगर पालिका व पुलिस विभाग की टीम द्वारा लाउडस्पीकर के माध्यम से दी जा रही जानकारी के बावजूद यदि अतिक्रमण नही हटाया गया तो नियमानुसार कार्यवाही करते हुए अतिक्रमण हटाया जायेगा। उन्होंने अधिशासी अभियंता लोक निर्माण विभाग से कहा कि प्राप्त शिकायत के आधार पर 50 नंबर पुल का स्थलीय जायजा लेते हुए रिपोर्ट से अवगत करायें कि तत्काल क्या सुधार कराया जा सकता है। उन्होंने कहा कि नगर पालिका परिषद द्वारा की जा रही जलापूर्ति की जाँच करायें। साथ ही आरओ प्लांट की जांच कराकर रिपोर्ट से अवगत करायें। उन्होंने एलडीएम से कहा कि व्यापारियों द्वारा जो ऋण के आवेदन किये जाते है उसमें क्या-क्या प्रपत्रों की आवश्यकता है उसकी बैंक के माध्यम से जागरूक करें, साथ ही जो ऋण के आवेदन लंबित है उनका निस्तारण नियमानुसार कार्यवाही पूर्ण करते हुए कराये। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी पवन कुमार मीना, अपर जिलाधिकारी (वि/रा) अविनाश त्रिपाठी, अपर जिलाधिकारी (न्यायिक) धीरेन्द्र प्रताप, मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा0 राजीव नयन गिरि, पुलिस क्षेत्राधिकारी, उपायुक्त उद्योग, सहायक आयुक्त खाद्य सुरक्षा, बाँट माप अधिकारी, सहायक श्रमायुक्त, व्यापारिक संगठनों के पदाधिकारी सहित संबंधित उपस्थित रहे।

क्विक न्यूज

जिला कार्यक्रम अधिकारी को हाई कोर्ट ने लगाई फटकार, अधिकारी के आदेश को किया रद्द

मौदहा (हमीरपुर)। लखनऊ खंडपीठ ने गूगल से चेक की गई मार्कशीट को जाली करार देने के मामले पर बाल विकास सेवा पुष्टाहार के जिला कार्यक्रम अधिकारी को फटकार लगाते हुए याची की अंक पत्र को असली ठहराया और अधिकारी के आदेश को निरस्त कर दिया। जानकारी के अनुसार मौदहा विकासखंड के गीता देवी ने सहायिका पद से आंगनवाड़ी पद पर पदोन्नति के लिए सरकार के आदेशानुसार आवेदन किया था लेकिन प्रभारी जिला कार्यक्रम अधिकारी शैलेन्द्र प्रताप सिंह ने अभ्यर्थी की मार्कशीट को जाली करार देते हुए पदोन्नति नहीं किया इस पर गीता देवी ने बताया कि चार माह तक लगातार दो बार प्रत्यावेदन देने के बावजूद अभ्यर्थी विभाग के चक्कर लगाती रही लेकिन अधिकारी झूठे आश्वासन देकर अभ्यर्थी को घूमाते रहे विभाग से न्याय न मिलता देख अभ्यर्थी ने हाई कोर्ट की खंडपीठ लखनऊ मे न्याय की गुहार लगाई न्यायमूर्ति आलोक माथुर ने याची के याचिका आंशिक रूप स्वीकार करते हुए मार्कशीट को सबूत के आधार पर असली साबित कर दिया सरकार के उस आदेश को रद्द कर दिया जिसमें अभ्यर्थी के मार्कशीट को जाली कर दिया गया था यही नहीं याची के वकील अभिलाष पांडेय ने मजबूती के साथ याची का पक्ष रखा जिससे कोर्ट ने अंतिम फैसला याची के पक्ष में दे सकी कोर्ट ने जिला कार्यक्रम अधिकारी को आर्थिक दंड भी दिया है लेकिन सरकारी वकील की अपील पर कोर्ट ने माफकर दिया और याची के पदोन्नति के आदेश जारी कर दिए ।अब प्रश्न उठता है कि सरकार के द्वारा आंगनवाड़ी चयन भर्ती प्रक्रिया का प्रकाशन जिले में हो चुका है क्या निष्पक्षता और पारदर्शिता के साथ संपन्न होगी या इसी प्रकार कोई नए विवाद याची बनकर हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाएंगे यह भविष्य के गर्त में है।

सपाईयों ने बाबा साहब का परिनिर्वाण दिवस मनाया

फतेहपुर। समाजवादी पार्टी के कार्यालय में बाबा साहब डा. भीमराव अंबेडकर का परिनिर्वाण दिवस मनाया गया। सपाईयों ने उनके चित्र पर जहां पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी वहीं भाजपा सरकार को समानता के अधिकारों का खुलेआम हनन करने वाला बताया। गोष्ठी की अध्यक्षता जिलाध्यक्ष सुरेन्द्र प्रताप सिंह ने की। संचालन जिला महासचिव चौधरी मंजर यार ने किया। जिलाध्यक्ष ने कहा कि बाबा साहब ने ऐसा संविधान बनाया जिससे देश में समानता रहे, ऊंच-नीच का भेदभाव खत्म हो, सभी को बराबर का न्याय मिले, सबके अधिकार बराबर रहें। इस मौके पर पूर्व जिलाध्यक्ष विपिन सिंह यादव, राजू कुर्मी, जगनायक सचान, आजम खान, संदीप माली, मनोज यादव, अनिल यादव, कामता प्रसाद, सुहैल खान हेमू, पूज्य सिंह मौर्य, प्रदीप सोनकर, वीरेन्द्र यादव, दिलीप पाल भी मौजूद रहे।

कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय में जागरूकता गोष्ठी आयोजित

फतेहपुर। नेहरू युवा संगठन टीसी के तत्वावधान में कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय त्रिलोकीपुर में बाल विवाह निषेध जागरूकता गोष्ठी का आयोजन बाल कल्याण समिति के अध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद साहू की अध्यक्षता में किया गया। कहा कि बाल विवाह कानूनी ही नहीं सामाजिक अपराध भी है। बाल विवाह से बालिकाओं पर शैक्षिक, शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक बहुत ही गहरा प्रभाव पड़ता है। जिससे कम उम्र की बालिकाओं का जीवन नरकीय बन जाता है। समिति के सदस्य रामकृष्ण पांडेय ने बताया कि कानूनी रूप से बाल विवाह कराने वाले अभिभावकों के साथ रिश्तेदार, टेन्ट, बाजे, सजावट, खाना बनाने वाले शामिल लोग सभी दोषी माने जाएंगे। एंटी ह्यूमन ट्रैफिकिंग यूनिट के प्रभारी इंस्पेक्टर संजय पांडेय ने जानकारी दी कि जगह जगह पर ऐसे रैकेट सक्रिय है जो बालिकाओं को बहला फुसला कर घर से निकल ले जाते है फिर उनको बेंच देते है। संगठन की कार्यक्रम प्रबंधक अनिता वर्मा ने बालिकाओं के मध्य जेंडर समानता, माहवारी स्वच्छता, मोबाइल का सदुपयोग आदि की जानकारी दी।

प्रधान पर मंदिर की जमीन में दुकानें बनवाने का आरोप

फतेहपुर। महादेव बाबा विराजमान मंदिर मालिक रमेश गिरि गोसाई समिति चांदपुर गाटा संख्या 3637 एवं 3638 3639 और 3641 पर स्थित है। वहां पर धर्म जागरण, रामलीला, रावण वध जैसे धार्मिक कार्यक्रम प्रतिवर्ष होते हैं। गांव में बारात घर न होने के कारण वहां पर बारातें रुकती हैं। जो राजस्व रिकॉर्ड में भी दर्ज है। जिस पर ग्राम प्रधान शिव शंकर सिंह पुलिस की सांठगांठ से अपने स्वार्थ के निमित्त व्यवसाय के उद्देश्य की पूर्ति हेतु अतिक्रमण करके मंदिर की जमीन पर दुकान बनवा रहा है। जो कि निहायत गलत है। विरोध करने पर पुलिस द्वारा उल्टा फर्जी मुकदमा में जेल भेजने की धमकी दी जाती है। प्रशासन से आग्रह किया कि उपरोक्त गलत गतिविधि पर अभिलंब रोक लगाकर धार्मिक स्थल की जमीन को सुरक्षित किया जाए। चांदपुर निवासी जसवंत सिंह के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मंडल ने मांग पत्र जिलाधिकारी एवं आचार्यकुलम संस्थापक अध्यक्ष आचार्य विनोद शुक्ला को देखकर गुहार लगाई। आचार्यकुलम का प्रतिनिधिमंडल यथाशीघ्र स्थलीय दौरा कर प्रशासन को स्थिति से अवगत कराएगा।

महिला का संदिग्ध मौत पर मायके वालों ने काटा हंगामा, पुलिस ने शुरु की जांच

राठ (हमीरपुर)। अलीगढ़ के गोंडा में ईंट भट्टों पर एक महिला की संदिग्ध हालात में मौत हो गई। स्वजन शव लेकर घर आ गए। मृतका के मायके पक्ष के लोगों ने जमकर हंगामा काटा। जरिया पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कराया है। जरिया थाने के गोहांड निवासी अशवेंद्र अहिरवार ने बताया कि उसके बड़े भाई नंदराम अहिरवार अपनी 30 वर्षीय पत्नी मीना अहिरवार और बच्चों को लेकर अलीगढ़ के गोंडा में ईंट भट्टों पर मजदूरी करने के लिए गए थे। बुधवार की रात करीब दस बजे ईंट भट्टों पर उसकी भाभी मीना की अचानक हालत बिगड़ गई। इलाज के लिए अलीगढ़ अस्पताल में ले गए। जहां चिकित्सक ने मृत घोषित कर दिया। बताया कि भाभी के शव को अपने गांव ले आए। बताया कि जब भाभी के मायके जनों को सूचना दी तो भाभी के पिता रामकुमारए भाई छोटू निवासी बिहार गाली गलौज करने लगे। घर आकर हंगामा काटा। अशवेंद्र अहिरवार ने बताया कि उसके भाई मजदूरी करते हैं। मृतका अपने पीछे दो पुत्र 6 वर्षीय मनीष दो वर्षीय पियूष को छोड़ गई है। जरिया थानाध्यक्ष ने बताया कि शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

उद्योग व्यापार मंडल की नयी प्रांतीय कार्यकारिणी घोषित

राठ (हमीरपुर)। उप्र उद्योग व्यापार मंडल की एक आवश्यक बैठक शू मर्चेंट एसोसिएशन राठ के अध्यक्ष राजेंद्र गुप्ता के प्रतिष्ठान में संपन्न हुई। इस दौरान आगामी समय में कंबल वितरण करने की योजना बनाई गई। बैठक की अध्यक्षता व्यापार मंडल के जिलाध्यक्ष केजी अग्रवाल ने की। जिलाध्यक्ष ने बताया कि वर्ष 2024 से 2027 की नयी प्रांतीय कार्यकारिणी की घोषणा की गई है। जिसमें कई वर्तमान विधायक एवं कई पूर्व विधायक प्रांतीय उपाध्यक्ष बनाए गए हैं। नगर के व्यापार मंडल की सक्रियता को देखते हुए प्रांतीय अध्यक्ष ने नगर से भी दो प्रांतीय पदाधिकारीयों का मनोनयन किया है। नगर अध्यक्ष काशी प्रसाद गुप्ता ने बताया कि व्यापार मंडल राठ द्वारा पिछले कई वर्षों से शीतलहर एवं सर्दी से बचाव के लिए नगर में 1000 से अधिक कंबलों का वितरण किया जाता है। उसी क्रम में इस वर्ष भी 21 दिसंबर दिन शनिवार को डीएम व एसपी के मुख्य अतिथित्व में उत्सव पैलेस में कंबल वितरण कार्यक्रम एवं व्यापारी गोष्ठी का आयोजन किया जायेगा। इस मौके पर प्रांतीय उपाध्यक्ष प्रदीप कुमार गुप्ताए नगर महामंत्री रहमत वेग कोषाध्यक्ष पंकज सोनी संतोष परिहार शिवशरण सोनी डॉ. रामगोपाल गुप्ता कामतानाथ बबेलें मंगल सोनी मनोज अग्रवाल, मनोज सोनी आदि व्यापारी मौजूद रहे।

अंबेडकर विकास समिति ने मनाया परिनिर्वाण दिवस

फतेहपुर। बाबा साहब डा. भीमराव अंबेडकर का परिनिर्वाण दिवस डा. बाबा साहब अंबेडकर विकास समिति ने मनाया। कलेक्ट्रेट परिसर स्थित बाबा साहब की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया तत्पश्चात आयोजित गोष्ठी में वक्ताओं ने उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। मुख्य अतिथि राम खेलावन ने हिस्सा लिया। अध्यक्षता मायाराम गौतम एड. व संचालन बृज किशोर ने किया। संरक्षक जियालाल ने बाबा साहब को याद करते हुए बताया कि जिसको पढ़ने लिखने नहीं दिया गया उसी ने भारत का संविधान रच डाला। इस मौके पर अध्यक्ष गया प्रसाद, शत्रुघनलाल, अखिलेश चन्द्र, भंते धम्मरक्षित, कमलेश बौद्ध, कामनी बौद्ध भी मौजूद रहीं। उधर अंबेडकर युवा जन सेवा फाउंडेशन ने अंबेडकर के महापरिनिर्वाण दिवस पर फाउंडेशन कार्यालय चित्रांश नगर में कार्यक्रम आयोजित किये। कार्यक्रम की अध्यक्षता फाउंडेशन के केंद्रीय अध्यक्ष विनोद गौतम ने की। इस मौके पर फाउंडेशन के संस्थापक देवेंद्र गौतम, संरक्षक रूद्रेश कुमार, मीडिया प्रभारी लवकुश साहू, सक्रिय सदस्य चंद्रभान यादव के अलावा फाउंडेशन की टीम मौजूद रही।

चेयरमैन ने अस्थाई रैन बसेरा का किया शुभारंभ

फतेहपुर। नगर पालिका परिषद ने सर्दी के मौसम के दृष्टिगत तैयारियां शुरू कर दी हैं। जिलाधिकारी के निर्देशन में नगर पालिका परिषद की ओर से अस्थाई रैन बसेरा का निर्माण सार्वजनिक स्थानों में कराया जा रहा है। रोडवेज बस स्टाप में बने अस्थाई रैन बसेरा का चेयरमैन राजकुमार मौर्य ने फीता काटकर शुभारंभ किया। अस्थाई रैन बसेरा का शुभारंभ करते हुए न.पा.प. चेयरमैन राजकुमार मौर्य व अधिशाषी अधिकारी रविन्द्र कुमार ने बताया कि इस रैन बसेरा के बन जाने से अब रात्रि में यात्रा करने वाले यात्रियों के साथ-साथ निर्धनों को भीषण ठण्ड में इधर-उधर भटकने की जरूरत नहीं है। अस्थाई रैन बसेरा में वह रात गुजार सकते हैं।

जिला जज ने किया प्रचार वाहन को हरी झंडी दिखाकर रवाना

कन्नौज। राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के निर्देशानुसार जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा 14 दिसम्बर को राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया जाएगा। लोक अदालत के लिए प्रचार वाहन को हरी झंडी दिखाकर जनपद न्यायाधीश चन्द्रोदय कुमार ने रवाना किया।

शुक्रवार को प्रचार वाहन को रवाना करने के बाद जिला जज ने बताया की लोक अदालत में मोटर दुर्घटना प्रतिकर, सिविल वाद, चेक बाउंस के मामले, पारिवारिक विवादों को सुलह समझौते के आधार पर निस्तारित किया जाएगा। उन्होंने आमजन से अपील की है कि अधिक से अधिक लोग लोक अदालत में आकर अपने वादों का निस्तारण करायें।

इस दौरान अपर जिला जज प्रथम लोकेश वरुण, अपर जिला जज/स्पेशल जज एससी/एसटी हरि प्रसाद, अपर जिला जज नंद कुमार, अपर जिला जज इंद्रजीत सिंह, अपर जिला जज/सचिव लवली जायसवाल, अपर जिला जज अल्का यादव समेत समस्त न्यायिक अधिकारी, अधिवक्तागण मौजूद रहे।

श्रद्धा से मनाया नौवे गुरु तेग बहादुर का शहीदी पर्व

फतेहपुर। सिक्ख समुदाय के नौवे गुरू तेग बहादुर जी का शहीदी पर्व श्री गुरू सिंह सभा कमेटी की अगुवई में गुरूद्वारा परिसर में मनाया गया। वक्ताओं ने उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विस्तार से प्रकाश डाला।

इस अवसर पर ज्ञानी पवन सिंह, प्रधान चरनजीत सिंह, जतिंदर पाल सिंह, परमजीत सिंह, संतोष सिंह, नरिंदर सिंह रिक्की, संतोष सिंह, सतपाल सिंह, वरिंदर सिंह, नरेंद्र सिंह रिंकू, सरनपाल सिंह, गुरमीत सिंह, महिलाओं में हरविंदर कौर, मंजीत कौर, हरजीत कौर, सतबीर कौर, जसपाल कौर, हरमीत कौर, प्रभजीत कौर, गुरप्रीत कौर, खुशी आदि उपस्थित रहीं।

बेसिक बाल क्रीड़ा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रतियोगिता में बच्चों ने बिखेरी चमक

संवाददाता। निघासन - खीरी

बेसिक शिक्षा अधिकारी प्रवीण कुमार तिवारी के निर्देशानुसार एवं बीईओ निघासन फूलचंद गौतम के कुशल मार्गदर्शन में स्थानीय जिला पंचायत इंटर कालेज में ब्लॉक स्तरीय बेसिक बाल क्रीड़ा प्रतियोगिता सफलता पूर्वक संपन्न हुई। प्रतियोगिता में बच्चों ने विभिन्न खेल विधाओं एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम में उत्कृष्ट प्रदर्शन के माध्यम से ग्रामीण भारत के प्रत्यक्ष दर्शन कराए।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि एसडीएम निघासन राजीव निगम ने फीता काट कर किया। एसडीएम ने खेलों के महत्व को रेखांकित करते हुए प्रतियोगिता में हिस्सा लेने वाले बच्चों के उज्जवल भविष्य की कामना व्यक्त की। जानकारी के अनुसार प्राथमिक स्तर के अंतर्गत 100 मीटर, 200 मीटर तथा 400 मी दौड़ में क्रमशः अरमान कंपोजिट विद्यालय ढखेरवा खालसा , अरुण बुद्धा पुरव, प्रिंस ढखेरवा खालसा तथा मोहित दुबहा ने प्रथम स्थान प्राप्त करते हुए जिला स्तरीय प्रतियोगिता के लिए क्वालीफाई किया। प्राथमिक स्तर बालिका वर्ग में उपरोक्त इवेंट में कामिनी खैरहनी , सुलोचना सकटू पुरवा , कामिनी खैरहनी , मिस्वा दुबहा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसी प्रकार उच्च प्राथमिक स्तर पर लम्बी कूद में पचपेड़ी, बालिका वर्ग में तनु बनवीर पुर, अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता में ढखेरवा खालसा की टीम ने बाजी मारी । इसी प्रकार 100 मीटर 200 मीटर 400 मीटर 600 मी दौड़ में क्रमशः आदर्श हरसिंग पुर , अरुण तिकुनिया , रवि मुर्गहा , रमजान एवं प्रियांशु ने पहले स्थान पर परचम लहराया। इसी प्रकार उच्च प्राथमिक बालिका वर्ग में 100 मीटर, 200 मीटर, 400 मीटर 600 मीटर दौड़ में क्रमशः नैंशी , ऐंजिल, तनु बनवीर पुर तथा आरती पचपेड़ी ने पहले स्थान पर कब्जा जमाया । बेला परसुआ तथा चखरा की बालिकाओं ने लोक नृत्य के माध्यम से सभी दर्शकों का मन मोह लिया बेला परसुआ की बालिकाओं के पारंपरिक थारू लोक नृत्य को देखकर प्रसन्न हुए खंड शिक्षा अधिकारी फूलचंद गौतम ने 500 रुपए का नगद पुरस्कार प्रदान किया। कार्यक्रम का संचालन मोहम्मद दिलशाद तथा एआरपी नेहा चतुर्वेदी ने संयुक्त रूप से किया।

पलिया बना चैंपियन, लखीमपुर को उपविजेता का खिताब

डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल ने विजेता टीमों को प्रदान किए पुरस्कार, खिले चेहरे

संवाददाता। लखीमपुर-खीरी

जिला स्पोर्ट्स स्टेडियम लालपुर में चल रही जनपदीय खेलकूद प्रतियोगिताओं का सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ समापन हो गया। बच्चों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में खूब दम खम दिखाया। प्रतिगोगिताओं में पलिया ब्लाक ने चैंपियनशिप जीती। लखीमपुर ब्लाक को उपविजेता का खिताब मिला। बेहजम तीसरे स्थान पर रहा। मुख्य अतिथि डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल ने विजेता टीमों को शील्ड प्रदान की, विजेताओं को मेडल और पुरस्कार देकर सम्मानित किया।

इससे पहले विशेष प्रदर्शन की विजेता टीमों ने मुख्य अतिथि के सम्मुख अपनी प्रस्तुतियां दी। लखीमपुर देहात की बच्चों ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। स्वागत गीत पीएस सलेमपुर के बच्चों ने प्रस्तुत किया। लखीमपुर रिसोर्स सेंटर के विशेष आवश्यकता वाले बच्चों ने प्रेरक गीत पर विशेष प्रस्तुति दी। पीएम श्री विद्यालय सकेथू के बच्चों ने देशभक्ति गाने पर सुन्दर प्रस्तुति दी। दो दिनों तक चलने वाले इस खेलकूद प्रतियोगिता में जनपद के सभी ब्लॉकों के बच्चों ने भाग लिया। डीएम ने हरीझंडी दिखाकर बालिकाओं की दौड़ प्रतियोगिता की शुरुआत की। इस दौरान छात्राओं का मनोबल भी बढ़ाया। प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली बालिकाओं को मेडल पहनकर सम्मानित भी किया। शुक्रवार को जनपदीय खेलकूद प्रतियोगिता के समापन समारोह को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल ने कहा खेल बच्चों के विकास के लिए काफी जरूरी हैं। खेल से बच्चो के विकास में भी काफी मदद मिलती है। उन्होंने परिषदीय स्कूलों के बच्चों की खेल प्रतिभाग और उस प्रतिभा निखारने वाले शिक्षकों की सराहना की। उन्नाव में आयोजित मंडलीय प्रतियोगिता में खीरी जिले के बच्चे पहला स्थान अर्जित करे, ऐसी मेरी शुभकामनाएं है। घोषणा की कि अगले वर्ष बच्चों के साथ-साथ शिक्षकों की भी स्पेशल प्रतियोगिताएं आयोजित कराए जाए।

उच्चतम न्यायालय ने 1987 के हाशिमपुरा नरसंहार मामले में आठ दोषियों को जमानत दी

नई दिल्ली (भाषा)। उच्चतम न्यायालय ने 1987 में प्रादेशिक आर्म्ड कान्स्टेबुलरी (पीएसी) के कर्मियों द्वारा 38 लोगों की कथित हत्या से जुड़े हाशिमपुरा नरसंहार मामले में आठ दोषियों को शुक्रवार को जमानत दे दी। न्यायमूर्ति अभय एस ओका और न्यायमूर्ति ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की पीठ ने चार दोषियों की ओर से पेश हुए वरिष्ठ अधिवक्ता अमित आनंद तिवारी की इन दलीलों पर गौर किया कि उन्हें बरी करने के अधीनस्थ अदालत के फैसले को दिल्ली उच्च न्यायालय द्वारा पलटे जाने के बाद से वे लंबे समय से जेल में हैं। तिवारी ने शुक्रवार को समी उल्ला, निरंजन लाल, महेश प्रसाद और जयपाल सिंह का प्रतिनिधित्व करते हुए दलील दी कि अपीलकर्ता उच्च न्यायालय के फैसले के बाद से छह साल से अधिक समय से जेल में हैं। उन्होंने कहा कि अपीलकर्ताओं को पहले अधीनस्थ अदालत द्वारा बरी किया जा चुका है तथा अधीनस्थ अदालत में सुनवाई और अपील प्रक्रिया के दौरान उनका आचरण अच्छा रहा है। उन्होंने यह भी दलील दी कि अधीनस्थ अदालत द्वारा सोच-विचारकर पारित किए गए बरी करने के फैसले को उच्च न्यायालय ने पलटने का गलत आधार पर निर्णय लिया। शीर्ष अदालत ने दलीलों पर गौर किया और आठ दोषियों की आठ लंबित जमानत याचिकाओं को स्वीकार कर लिया। हाशिमपुरा नरसंहार 22 मई 1987 को हुआ था, जब पीएसी की 41वीं बटालियन की सी-कंपनी के जवानों ने सांप्रदायिक तनाव के दौरान उत्तर प्रदेश में मेरठ के हाशिमपुरा इलाके से लगभग 50 मुस्लिम पुरुषों को कथित तौर पर घेर लिया था। सांप्रदायिक दंगों के कारण पीड़ितों को सुरक्षित स्थान पर ले जाने के बहाने शहर के बाहरी इलाके में ले जाया गया था, जहां उन्हें गोली मार दी गई और उनके शवों को एक नहर में फेंक दिया गया था। इस घटना में 38 लोगों की मौत हो गई थी तथा केवल पांच लोग ही इस भयावह घटना को बयां करने के लिए बचे। अधीनस्थ अदालत ने 2015 में 16 पीएसी कर्मियों को उनकी पहचान और संलिप्तता को साबित करने वाले साक्ष्यों के अभाव का हवाला देते हुए बरी कर दिया था।

महाराष्ट्र में हिंदुत्व मुद्दे की रही अहम भूमिका जवाबी ध्रुवीकरण से जीतने में मदद मिली

मुंबई (भाषा)। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कहा है कि हाल के राज्य विधानसभा चुनाव में हिंदुत्व के मुद्दे ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और जवाबी ध्रुवीकरण से महायुति गठबंधन को बड़ी जीत हासिल करने में मदद मिली। बृहस्पतिवार को तीसरी बार महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ लेने वाले फडणवीस ने एबीपी न्यूज चैनल को दिए साक्षात्कार में कहा कि हिंदुत्व और विकास एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा का हिंदुत्व जीवन जीने का एक तरीका है। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि विपक्षी गठबंधन महा विकास आघाडी (एमवीए) का (इस्लामी विद्वान) सज्जाद नोमानी जैसे लोगों के साथ एक समझौता था, जिसमें 2012 से मुसलमानों के खिलाफ दर्ज दंगों के मामलों को वापस लेने पर सहमति हुई थी। चुनाव प्रचार के दौरान उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने 'बंटेंगे तो कटेंगे' का नारा दिया था। इसके बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'एक हैं, तो सेफ हैं' का नारा दिया था।

चुनाव प्रचार के दौरान, फडणवीस ने नोमानी द्वारा महायुति सरकार के खिलाफ 'वोट-जिहाद' की कथित अपील किए जाने का जवाब वोटों के 'धर्म-युद्ध' की वकालत करके दिया था। फडणवीस ने कहा, मतदान प्रतिशत में वृद्धि हुई, क्योंकि कांग्रेस ने हिंदुओं को दबाने की कोशिश की। जब आप किसी को दबाने की कोशिश करते हैं, तो वे मजबूती से उठते हैं। हिंदुत्व ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और जवाबी ध्रुवीकरण ने महायुति गठबंधन की मदद की। हमारी विकास योजनाओं और हिंदुत्व ने काम किया। हिंदुत्व और विकास एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। इस साल के विधानसभा चुनाव में 66.05 प्रतिशत मतदान हुआ, जो 2019 में 61.1 प्रतिशत था। फडणवीस ने कहा, भाजपा का हिंदुत्व जीवन जीने का एक तरीका है और यह धार्मिक रीति-रिवाजों से संबंधित नहीं है। मुसलमानों के विभिन्न धार्मिक रीति-रिवाज हैं। किसी को भी हिंदुत्व के बारे में संकीर्ण सोच नहीं रखनी चाहिए। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने अपने कार्यों से दिखाया है कि समावेशी हिंदुत्व क्या है। फडणवीस ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर स्पष्ट रूप से निशाना साधते हुए कहा, जो लोग मुस्लिम वोट खोने के डर से मंदिरों में जाने से डरते थे, वे अब बार-बार मंदिरों में जा रहे हैं। मुख्यमंत्री के रूप में फडणवीस के अलावा, शिवसेना प्रमुख एकनाथ शिंदे और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के अध्यक्ष अजित पवार ने उपमुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली। मंत्रिपरिषद विस्तार पर फडणवीस ने कहा कि यह 16 दिसंबर से पहले हो जाना चाहिए, जब राज्य विधानमंडल का शीतकालीन सत्र नागपुर में शुरू होगा। उन्होंने कहा, तीन दलों हैं और उनमें से प्रत्येक को उचित सम्मान दिया जाएगा। विभाग आवंटन पर चर्चा जारी है। मुख्यमंत्री ने कहा, मैं सभी राजनीतिक नेताओं के साथ संवाद स्थापित करने की कोशिश करूंगा, जो 2019 से बंद है। महायुति गठबंधन ने महाराष्ट्र की कुल 288 विधानसभा सीट में से 230 सीट पर जीत हासिल की। भाजपा को 132 सीट, शिवसेना को 57 और राकांपा को 41 सीट मिलीं।

महाराष्ट्र मंत्रिमंडल का विस्तार 11 या 12 दिसंबर को होने की संभावना

मुंबई (भाषा)। देवेंद्र फडणवीस के नेतृत्व वाली महाराष्ट्र सरकार का मंत्रिमंडल विस्तार 11 या 12 दिसंबर को होने की संभावना है। सूत्रों ने बताया कि पूरी संभावना है कि अजित पवार के नेतृत्व वाली राकांपा वित्त विभाग और भाजपा गृह विभाग अपने पास रखेगी, जैसा कि एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली पिछली सरकार में था। शिवसेना सूत्रों की मानें तो शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना शहरी विकास मंत्रालय अपने पास रखेगी और राजस्व मंत्रालय भी उसे मिल सकता है। महाराष्ट्र में मंत्रिपरिषद में मुख्यमंत्री सहित अधिकतम 43 मंत्री हो सकते हैं। महायुति गठबंधन के सबसे बड़े घटक दल भाजपा को 21-22 मंत्री पद मिलने की उम्मीद है। सूत्रों के अनुसार शिवसेना को 11 से 12 और राकांपा को 9 से 10 मंत्री पद मिल सकते हैं। भाजपा के एक वरिष्ठ नेता ने बताया कि शपथ लेने वाले मंत्रियों की संख्या पर अंतिम फैसला एक-दो दिन में लिया जाएगा। विधायकों को शनिवार से शुरू हो रहे विधानसभा के तीन दिवसीय विशेष सत्र में अस्थाई अध्यक्ष कालिदास कोलांबकर शपथ दिलाएंगे।

बाराबंकी में नाबालिग दलित लड़के के धर्म परिवर्तन के आरोप में मामला दर्ज

बाराबंकी (भाषा)। बाराबंकी के मोहल्ला नबीगंज में एक 15 वर्षीय दलित किशोर का धर्म परिवर्तन करने के आरोप में तीन लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है, जिनमें से दो को गिरफ्तार किया जा चुका है। अपर पुलिस अधीक्षक (उत्तरी) चिरंजीव नाथ सिन्हा ने बताया कि करीब दो साल पहले बाराबंकी में कबाड़ का काम करने वाले मुर्शीद और उसके पिता रियासत अली नौकरी का लालच देकर आजमगढ़ के रहने वाले नाबालिग लड़के को साथ लाए थे और उसे नबीगंज में स्थित एक रेस्तरां में काम पर रखवा दिया था। उन्होंने बताया कि जब रेस्तरां के मालिक को पता चला कि लड़का अनाथ और दलित है तो उसका कथित तौर पर धर्म परिवर्तन कराकर नूर मोहम्मद नाम रख दिया। उन्होंने बताया कि एक दिन रेस्तरां में भोजन करने आए बजरंग दल के जिला संयोजक विनय सिंह राजपूत को इस बारे में पता चला तो उन्होंने कोतवाली नगर में प्राथमिकी दर्ज कराई। सिन्हा ने बताया कि पुलिस ने इस मामले में उत्तर प्रदेश विधि विरुद्ध धर्म संपरिवर्तन प्रतिषेध अधिनियम 2021 तथा अनुसूचित जाति-अनुसूचित जनजाति अधिनियम के तहत प्राथमिकी दर्ज की और लड़के को आजमगढ़ से लाने वाले मुर्शीद और उसके पिता रियासत अली को बृहस्पतिवार को गिरफ्तार कर लिया। रेस्तरां का मालिक फरार है। पुलिस पूछताछ के दौरान किशोर ने बताया कि वह मूलरूप से आजमगढ़ के अतरौलिया का रहने वाला है, उसके पिता ने दूसरी शादी मुस्लिम महिला से की थी, लेकिन पिता की हत्या के बाद मां ने उसे घर से निकाल दिया था। पुलिस पूछताछ में पता चला कि वह कबाड़ का काम करने वाले रियासत और मुर्शीद के संपर्क में आया, जिन्होंने उसे बाराबंकी में रेस्तरां में काम दिलवाया।

वाराणसी में कॉलेज परिसर से मजार हटाने की मांग को लेकर छात्रों का प्रदर्शन

वाराणसी (भाषा)। वाराणसी के उदय प्रताप कॉलेज परिसर में स्थित एक मजार को हटाने की मांग को लेकर शुक्रवार को बड़ी संख्या में छात्रों ने प्रदर्शन किया। करीब 500 की संख्या में छात्र कॉलेज के गेट पर भगवा झंडा लेकर जय श्री राम का नारा लगाने लगे। प्रदर्शनकारी छात्र कॉलेज के अंदर जाने का प्रयास कर रहे थे, लेकिन इस दौरान गेट पर मौजूद पुलिसकर्मियों ने उन्हें रोक दिया। छात्र नेता विवेकानंद सिंह ने कहा कि जब मजार की जमीन वक्फ बोर्ड की नहीं है तो यहां से मजार को हटा देना चाहिए। सिंह ने बताया कि शुक्रवार को छात्रों के एक समूह ने कॉलेज परिसर से मजार को हटाने की मांग को लेकर प्रदर्शन किया। पुलिस ने छात्रों को कॉलेज के अंदर नहीं जाने दिया। सिंह ने कहा कि यदि मजार पर नमाज पढ़ी जाएगी तो छात्र वहां हनुमान चालीसा पढ़ेंगे। इस बीच, सहायक पुलिस आयुक्त (एसीपी)-कैंट विदुष सक्सेना ने बताया कि कॉलेज के गेट पर पर्याप्त संख्या में पुलिस बल तैनात किया गया है। शुक्रवार को छात्रों का एक समूह अपनी बात रखने आया था। इस दौरान छात्र थोड़ा आक्रामक भी हुए। पुलिस ने मामले को शांत कराया दिया है। इस दौरान कुछ उपद्रवियों की भी पहचान की गई है जिनके खिलाफ आवश्यक कार्रवाई की जाएगी। उदय प्रताप कॉलेज परिसर में स्थित एक मजार को हटाने की मांग को लेकर बढ़ते तनाव के बीच पुलिस ने बृहस्पतिवार को कॉलेज परिसर में बाहरी व्यक्तियों के प्रवेश पर रोक लगा दी थी और केवल वैध पहचान पत्र वाले विद्यार्थियों को ही भीतर जाने की अनुमति दी थी। इससे पहले, मंगलवार को मजार के पास नमाज पढ़े जाने के दौरान विद्यार्थियों ने हनुमान चालीसा का पाठ किया था। स्थानीय पुलिस के मुताबिक, मंगलवार को विवाद के बाद सात व्यक्तियों को हिरासत में लिया गया था। इससे जुड़ी एक घटना में कॉलेज के छात्रों ने एक विद्यार्थी अदालत का गठन किया है और 11 बिंदुओं का एक पत्र उत्तर प्रदेश वक्फ बोर्ड को भेजकर इस मजार की स्थिति और इसके स्वामित्व के संबंध में 15 दिनों के भीतर जवाब मांगा है। अंजुमन इंतेजामिया मस्जिद कमेटी के संयुक्त सचिव मोहम्मद यासीन ने कहा कि उन्होंने इस मजार की स्थिति पता लगाने के लिए उत्तर प्रदेश सेंट्रल वक्फ बोर्ड को पत्र लिखा है। इससे पूर्व, उत्तर प्रदेश सुन्नी सेंट्रल वक्फ बोर्ड ने दावा किया था कि इस कॉलेज परिसर में बनी मजार और इसके पास की जमीन वक्फ की संपत्ति है। इस दावे को कॉलेज प्रशासन ने खारिज किया था। उदय प्रताप स्वायत्त कॉलेज की अवधारणा राजर्षि उदय प्रताप सिंह जुदेव ने इस क्षेत्र के समाज में मूल्यों का निर्माण करने के उद्देश्य से पेश की थी। इसकी शुरुआत उस समय हुई जब जुदेव ने 1909 में वाराणसी में हीवेट क्षेत्रीय हाईस्कूल की स्थापना की जो 1921 में इंटरमीडिएट कालेज बन गया और इसका नाम उदय प्रताप इंटरमीडिएट कॉलेज कर दिया गया।

जिस कार्यालय में थे चपरासी, परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद उसी में बन गए अधिकारी

रायपुर(भाषा)। छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर स्थित राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) से बीटेक कर राज्य लोक सेवा आयोग (सीजीपीएससी) कार्यालय में चपरासी के पद पर कार्यरत शैलेंद्र कुमार बांधे ने अंततः कड़ी मेहनत से राज्य लोक सेवा परीक्षा पास कर अधिकारी बनने का सपना पूरा कर लिया। बांधे राज्य के उन युवाओं के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बन गए हैं जो इस परीक्षा की तैयारी में लगे हुए हैं।

बांधे ने अपने पांचवें प्रयास में सीजीपीएससी-2023 परीक्षा पास की है, जिसके परिणाम पिछले सप्ताह घोषित किए गए थे। उन्हें सामान्य श्रेणी में 73वीं रैंक और आरक्षित श्रेणी में दूसरी रैंक मिली है। बांधे ने कहा कि वह अपने माता-पिता की मदद के बिना ऐसा नहीं कर पाते, जिन्होंने हर फैसले में उनका साथ दिया। बांधे ने शुक्रवार को पीटीआई-वीडियो से कहा, इस वर्ष मई में मुझे सीजीपीएससी कार्यालय में चपरासी के पद पर नियुक्त किया गया। फिर मैंने इस साल फरवरी में आयोजित सीजीपीएससी-2023 प्रारंभिक परीक्षा पास कर ली। इसके बाद मैंने मुख्य परीक्षा की तैयारी जारी रखी क्योंकि मैं अधिकारी बनना चाहता था।

अनुसूचित जाति समुदाय से ताल्लुक रखने वाले बांधे राज्य के बिलासपुर जिले के बिटकुली गांव के एक किसान परिवार से हैं। अब वह रायपुर में बस गए हैं। बांधे ने बताया कि उन्होंने रायपुर में अपनी स्कूली शिक्षा पूरी की और फिर राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) रायपुर में मैकेनिकल इंजीनियरिंग में बीटेक की पढ़ाई की। एक प्रतिष्ठित संस्थान से इंजीनियरिंग पूरी करने के बाद, उन्हें प्रमुख निजी फर्मों में नौकरी मिल सकती थी लेकिन उन्होंने प्लेसमेंट इंटरव्यू में शामिल नहीं होने का फैसला किया क्योंकि वह सरकारी नौकरी पाना चाहते थे। बांधे ने कहा कि उन्हें एनआईटी रायपुर में अपने एक सुपर सीनियर हिमाचल साहू से प्रेरणा मिली, जिन्होंने सीजीपीएससी-2015 परीक्षा में प्रथम रैंक हासिल की थी। उन्होंने कहा, मैं पहले प्रयास में प्रारंभिक परीक्षा में असफल रहा और अगले प्रयास में मैं मुख्य परीक्षा पास नहीं कर सका। तीसरे और चौथे प्रयास में, मैं साक्षात्कार के लिए योग्य हो गया, लेकिन इसमें सफल नहीं हो सका। अंत में, पांचवें प्रयास में मुझे सफलता मिली। बांधे ने कहा, सीजीपीएससी की परीक्षा की तैयारी में लगातार एक के बाद एक वर्ष बीतने के दौरान मुझे चपरासी की नौकरी चुननी पड़ी क्योंकि परिवार की आर्थिक मदद करने के लिए इसकी जरूरत थी। लेकिन इसके साथ ही मैंने राज्य सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी भी जारी रखी।

जब उनसे पूछा गया कि क्या चपरासी के तौर पर काम करने में उन्हें असहजता महसूस होती है तो उन्होंने कहा, कोई भी नौकरी बड़ी या छोटी नहीं होती, क्योंकि हर पद की अपनी गरिमा होती है। चाहे वह चपरासी हो या डिप्टी कलेक्टर, हर नौकरी में ईमानदारी और पूरी जिम्मेदारी के साथ काम करना होता है। बांधे ने कहा, कुछ लोग मुझे ताना मारते थे और चपरासी के तौर पर काम करने के लिए मेरा मजाक उड़ाते थे लेकिन मैंने उनकी बातों पर ध्यान नहीं दिया। मेरे माता-पिता, परिवार और कार्यालय ने हमेशा मेरा साथ दिया और मुझे प्रोत्साहित किया। बांधे के पिता संतराम बांधे एक किसान हैं। उन्होंने कहा कि वह अपने बेटे की कड़ी मेहनत और समर्पण को सलाम करते हैं। वह अधिकारी बनने के लिए पिछले पांच सालों से तैयारी कर रहा था। कुछ असफलता मिली लेकिन हार नहीं मानी। बांधे के पिता ने कहा, मुझे उम्मीद है कि मेरा बेटा उन सभी लोगों के लिए प्रेरणा बनेगा, जो सरकारी नौकरी पाने और देश की सेवा करने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे हैं।

संभल में कड़ी सुरक्षा के बीच जुमे की नमाज शांतिपूर्वक संपन्न हुई

भाषा। संभल

बाबरी मस्जिद को गिराए जाने की घटना के 32 साल पूरे होने और पूर्व में हुई हिंसा के मद्देनजर शुक्रवार को संभल में भारी सुरक्षा व्यवस्था के बीच जुमे की नमाज शांतिपूर्वक संपन्न हो गई। जिलाधिकारी राजेंद्र पेंसिया ने शुक्रवार को नमाज के बाद संवाददाताओं को बताया कि शाही जामा मस्जिद में शुक्रवार की नमाज शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न हुई।

इससे पहले, शहर के मौलानाओं ने लोगों से अपनी स्थानीय मस्जिदों में नमाज अदा करने और क्षेत्र में शांति एवं सद्भाव बनाए रखने में सहयोग करने की अपील की थी। अदालत के आदेश पर 24 नवंबर को शहर के कोट गर्वी इलाके में मुगलकालीन शाही जामा मस्जिद का सर्वेक्षण किए जाने के बाद संभल में हिंसा हुई थी। हिंसा में चार लोगों की मौत हो गई थी और कई अन्य लोग घायल हो गए थे। जिले में तभी से स्थिति तनावपूर्ण है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) से प्रेरित कारसेवकों ने छह दिसंबर 1992 को अयोध्या में बाबरी मस्जिद को ढहा दिया था। इस घटना के 32 साल पूरे होने की पूर्व संध्या पर पुलिस ने संभल में फ्लैग मार्च निकाला और सुरक्षा व्यवस्था बढ़ा दी गई। पुलिस उपमहानिरीक्षक (डीआईजी) मुनिराज जी, जिलाधिकारी राजेंद्र पेंसिया और पुलिस अधीक्षक कृष्ण कुमार बिश्नोई ने बृहस्पतिवार को फ्लैग मार्च का नेतृत्व किया। मुनिराज ने बृहस्पतिवार रात संवाददाताओं से कहा, पूरे संभल में अतिरिक्त सुरक्षाबलों की तैनाती, प्रमुख स्थानों पर व्यापक पैमाने पर अवरोधक लगाने और बेहतर निगरानी के लिए संभल को विभिन्न सेक्टर में विभाजित करने समेत सभी एहतियाती कदम उठाए गए हैं। पेंसिया ने कहा कि संभल में 30 मजिस्ट्रेट तैनात किए गए हैं और तीन-स्तरीय सुरक्षा व्यवस्था की गई है।

पेंसिया ने कहा, हमने एक नई शांति समिति भी बनाई है और हम हर वार्ड में इसी तरह की समितियां स्थापित करेंगे। पिछली बार 700-800 लोगों ने शाही जामा मस्जिद में नमाज अदा की थी और इस बार हमने लोगों से अपील की है कि वे केवल अपने-अपने मोहल्लों की मस्जिदों में ही नमाज अदा करें। इस बीच, स्थानीय मौलानाओं ने प्रशासन के प्रयासों का समर्थन किया है और सोशल मीडिया पर वीडियो जारी कर लोगों से अपनी स्थानीय मस्जिदों में नमाज अदा करने और क्षेत्र में शांति एवं सद्भाव बनाए रखने में सहयोग करने का आग्रह किया है। जिलाधिकारी राजेंद्र पेंसिया ने शुक्रवार को नमाज के बाद संवाददाताओं को बताया कि शाही जामा मस्जिद में शुक्रवार की नमाज शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न हुई। उन्होंने कहा, जनता के साथ संवाद कायम रखा गया और शांति समिति ने स्वयंसेवकों की भी नियुक्ति की। जामा मस्जिद में करीब 600 नमाजियों ने नमाज अदा की, जो शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न हुई।

इस बीच, समाजवादी पार्टी के संभल से सांसद जिया उर रहमान के पिता ममलुकुर रहमान बर्क ने शाही जामा मस्जिद में नमाज अदा करने के बाद संवाददाताओं से कहा कि जुमे की नमाज शांतिपूर्ण तरीके से अदा की गई। स्थानीय सांसद 24 नवंबर को हुई हिंसा के मामले में आरोपियों में से एक हैं। उन्होंने कहा, हम चाहते हैं कि संभल का माहौल सामान्य हो। हमें पहले हुई घटना का दुख और अफसोस है, भविष्य में ऐसी घटना न हो, सभी हिंदू और मुसलमान एकजुट होकर प्रयास करें, ऐसा माहौल बना रहे और कानून का पालन हो। रहमान बर्क ने कहा, लेकिन मुझे छह दिसंबर का अफसोस जरूर है, इस दिन बाबरी मस्जिद को अवैध तरीके से शहीद किया गया था, अब मैं चाहता हूं कि इस मस्जिद के साथ ऐसा व्यवहार न हो। अयोध्या में 16वीं सदी की बाबरी मस्जिद को छह दिसंबर 1992 को कारसेवकों ने गिरा दिया था।

नौकरी के नाम पर 74.4 लाख की ठगी का आरोप

ठाणे (भाषा)। ठाणे जिले के कल्याण में एक परिवार के चार सदस्यों सहित नौ लोगों के खिलाफ नौकरी के इच्छुक लोगों से 74.40 लाख रुपए की ठगी करने का मामला दर्ज किया गया है। एमएफसी पुलिस थाने के अधिकारी ने बताया कि अन्य पांच आरोपी रेलवे कर्मी बताए जा रहे हैं, जिनमें एक चिकित्सा अधिकारी भी शामिल है।

मथुरा में शाही ईदगाह में जलाभिषेक का प्रयास करने वाली महिला को हिरासत में लिया गया

मथुरा(भाषा)। मथुरा में शुक्रवार को स्थित शाही ईदगाह मस्जिद में जलाभिषेक करने का प्रयास करने वाली एक महिला को पुलिस ने हिरासत में ले लिया। कुछ हिंदू समूहों का दावा है कि शाही ईदगाह, भगवान श्रीकृष्ण का मूल जन्मस्थल है। पुलिस अधीक्षक (नगर) अरविंद कुमार ने बताया कि महिला की पहचान मीरा राठौड़ के रूप में की गई है, जो अखिल भारत हिंदू महासभा की आगरा इकाई के महिला प्रकोष्ठ की जिलाध्यक्ष है। शुक्रवार की सुबह मीरा ने अपने हाथों में भगवान श्रीकृष्ण की मूर्ति लेकर ईदगाह की ओर जाने का प्रयास किया, जिससे वहां मौजूद सुरक्षाकर्मियों के बीच संदेह पैदा हो गया।

ज्ञानवापी मस्जिद समिति ने 1991 के उपासना स्थल कानून को चुनौती देने वाली याचिकाओं के खिलाफ शीर्ष अदालत का रुख किया

नई दिल्ली (भाषा)। ज्ञानवापी मस्जिद प्रबंधन समिति ने उपासना स्थल (विशेष प्रावधान) अधिनियम, 1991 की संवैधानिक वैधता को चुनौती देने वाली कई लंबित याचिकाओं का विरोध करने के लिए उच्चतम न्यायालय का रुख किया है। संबंधित कानून कहता है कि 15 अगस्त, 1947 को विद्यमान उपासना स्थलों का धार्मिक स्वरूप वैसा ही बना रहेगा, जैसा वह उस दिन विद्यमान था। हालांकि अयोध्या में राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद प्रकरण को इस कानून से अलग रखा गया था। उच्चतम न्यायालय में पहले से ही लगभग छह याचिकाएं लंबित हैं, जिनमें वकील अश्विनी उपाध्याय और पूर्व राज्यसभा सदस्य सुब्रमण्यम स्वामी द्वारा कानून के कुछ प्रावधानों के खिलाफ दायर जनहित याचिकाएं भी शामिल हैं। प्रबंधन समिति, अंजुमन इंतेजामिया मसाजिद, वाराणसी ने वकील फुजैल अहमद अय्यूबी के जरिए दायर अपनी याचिका में उच्चतम न्यायालय से हस्तक्षेप किए जाने का अनुरोध किया। याचिका में 1991 के कानून के खिलाफ लंबित याचिकाओं को इस आधार पर खारिज करने का अनुरोध किया गया है कि ए बयानबाजी और सांप्रदायिक दावों पर आधारित हैं, जो सांप्रदायिक सद्भाव और कानून के शासन को खत्म कर सकते हैं। समिति ने कहा कि विधाई अधिनियम को चुनौती देने वाली याचिकाओं में संवैधानिक सिद्धांतों के आधार पर प्रावधानों की असंवैधानिकता का संकेत दिया जाना चाहिए। मस्जिद समिति ने कहा कि कानून को असंवैधानिक ठहराए जाने से कठोर परिणाम सामने आ सकते हैं।

पेज 1 का शेष

नोटों की...

पास नहीं रख सकेगा।' लंच सेशन के बाद उपसभापति हरिवंश ने सत्ता पक्ष के सदस्यों को शांत करने की कोशिश की और उनसे बैठने और सदन को चलने देने का आग्रह किया। जब भाजपा के सदस्य लगातार नारे लगाते रहे, तो उन्होंने सदन को दिन भर के लिए स्थगित कर दिया।

मप्र में...

को सहकर्मियों और छात्रों ने एक समर्पित शिक्षक बताया था। उनकी अचानक और हिंसक मौत ने स्कूल में शोक की लहर पैदा कर दी है, छात्र और कर्मचारी इस नुकसान से जूझ रहे हैं। यह घटना युवाओं में आग्नेयास्त्रों की पहुंच और छात्रों में अनुशासनहीनता को लेकर बढ़ती चिंताओं को भी उजागर करती है। अधिकारियों ने स्कूलों से छात्रों के व्यवहार की निगरानी करने और सुरक्षित शिक्षण वातावरण को बढ़ावा देने के लिए सक्रिय कदम उठाने का आग्रह किया है। पुलिस ने आश्वासन दिया है कि दोषियों को पकड़ा जाएगा और न्याय मिलेगा। इस बीच, सक्सेना के शोकाकुल परिवार ने पूरी जांच और जिम्मेदार लोगों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की है। यह घटना स्कूलों में कर्मचारियों और छात्रों दोनों की भलाई सुनिश्चित करने के लिए मजबूत सुरक्षा प्रोटोकॉल की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करती है।

दिल्ली मेट्रो..

हरियाणा के नाथूपुर से भी जोड़ेगा। बयान में कहा गया, इस पूरे खंड में 21 स्टेशन शामिल होंगे। इस कॉरिडोर के सभी स्टेशन एलिवेटेड होंगे। इस कॉरिडोर पर आने वाले स्टेशन हैं- रिठाला, रोहिणी सेक्टर 25, रोहिणी सेक्टर 26, रोहिणी सेक्टर 31, रोहिणी सेक्टर 32, रोहिणी सेक्टर 36, बरवाला, रोहिणी सेक्टर 35, रोहिणी सेक्टर 34, बवाना औद्योगिक क्षेत्र - 1 सेक्टर 3,4, बवाना औद्योगिक क्षेत्र - 1 सेक्टर 1,2, बवाना जेजे कॉलोनी, सनोथ, न्यू सनोथ, डिपो स्टेशन, भोरगढ़ गांव, अनाज मंडी नरेला, नरेला डीडीए स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स, नरेला, नरेला सेक्टर 5, कुंडली और नाथपुर। यह कॉरिडोर दिल्ली मेट्रो का हरियाणा में चौथा विस्तार होगा। वर्तमान में, दिल्ली मेट्रो हरियाणा में गुरुग्राम, बल्लभगढ़ और बहादुरगढ़ तक चलती है।

यूपी में...

मशक्कत करनी पड़ी। अधिकारियों ने बताया कि पांच पीड़ितों की अस्पताल में मौत हो गई, जबकि चार की हालत गंभीर बनी हुई है। महोबा में एक और दुर्घटना में तीन लोगों की जान चली गई, जब झांसी-मिर्जापुर हाईवे पर एक सेलेरियो कार डिवाइडर से टकरा गई। यह वाहन घुटई गांव में एक शादी में जा रहा था, जिसमें सात लोग सवार थे। जांचकर्ताओं ने कार में शराब की बोतलें पाईं और प्रत्यक्षदर्शियों ने घटनास्थल पर शराब की तेज गंध की सूचना दी, जिससे पता चलता है कि चालक नशे में था। अत्यधिक गति, जिसका अनुमान 130 किमी/घंटा था, ने दुर्घटना के प्रभाव को और बढ़ा दिया। चित्रकूट में, प्रयागराज से एक ओवरलोड बोलेरो एसयूवी में लौट रहे पांच तीर्थयात्री झांसी-मिर्जापुर हाईवे पर एक ट्रक से टकरा गए। यह दुर्घटना रायपुरा के पास सुबह करीब साढ़े पांच बजे हुई, कथित तौर पर चालक को झपकी आने के कारण। छह अन्य घायल हो गए, जिनमें से तीन की हालत गंभीर है। लखनऊ में शुक्रवार की सुबह शादी के बाद मोटरसाइकिल से घर लौट रहे तीन दोस्तों को तेज रफ्तार ट्रक ने पीछे से टक्कर मार दी। तीनों की मौके पर ही मौत हो गई। ये दुखद घटनाएं लापरवाही से गाड़ी चलाने और यातायात नियमों का पालन न करने के परिणामों को रेखांकित करती हैं। अधिकारी सभी मामलों की जांच कर रहे हैं और इस तरह की अपरिहार्य जीवन हानि को रोकने के लिए सड़क सुरक्षा मानदंडों को सख्ती से लागू करने का आग्रह किया है।

रोहिंग्याओं..

223 के तहत पुलिस स्टेशन बाहु फोर्ट में भी असीमा लतीफ पुत्री अब्दुल लतीफ निवासी रहिमा आबाद, बटिंडी; मोहम्मद शकील पुत्र रहीम अली निवासी रहिमा आबाद, बटिंडी; और जाकिर हुसैन पुत्र खुर्शीद अली निवासी डुंगियां, बटिंडी के खिलाफ दर्ज किए गए हैं।

उड़ानों...

जिन सर्वर से ये संदेश भेजे गए, वे यूनाइटेड किंगडम और जर्मनी जैसे यूरोपीय देशों में स्थित थे। उन्होंने बताया कि डोमेन के बारे में और जानकारी हासिल करने के लिए दिल्ली पुलिस इंटरपोल से संपर्क करने के लिए केंद्रीय एजेंसियों की मदद भी ले रही है। दिल्ली पुलिस ने धमकी के मामलों की जांच करते हुए महाराष्ट्र के गोंदिया निवासी जगदीश श्रीराम उइके (35) से भी पूछताछ की। सूत्र ने बताया, जगदीश ने केंद्र सरकार के एक मंत्री को ईमेल भेजकर कहा था कि उसके पास भेजने वाले के बारे में जानकारी है। उससे पूछताछ करने पर टीम ने पाया कि यह दावा फर्जी है। उसने पुलिस अधिकारियों को बताया कि किसी आतंकवादी समूह ने ये संदेश भेजे हैं। सूत्र ने बताया कि 11वीं कक्षा तक पढ़े जगदीश ने आतंकवाद पर एक किताब 'आतंकवाद-एक तूफानी राक्षस' भी लिखी है। अक्टूबर में बम विस्फोट की कई फर्जी धमकियों की पृष्ठभूमि में आईटी मंत्रालय ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स से कहा कि वे उचित सावधानी बरतें और आईटी नियमों के तहत निर्धारित सख्त समयसीमा के भीतर गलत सूचनाओं तक पहुंच को तुरंत हटा दें या अक्षम कर दें।

आईएनएस...

यह युद्धपोत सैकड़ों शिपयार्ड कर्मचारियों के साथ-साथ कई रूसी और भारतीय मूल उपकरण निर्माताओं (ओईएम) की निरंतर मेहनत का परिणाम है। निर्माण और तैयारी के बाद जहाज को इस साल जनवरी से कई व्यापक परीक्षणों से गुजरना पड़ा, जिसमें फैक्ट्री सी ट्रायल, स्टेट कमेटी ट्रायल और अंत में भारतीय विशेषज्ञों की एक टीम द्वारा डिलीवरी स्वीकृति परीक्षण शामिल हैं। युद्धपोत के परीक्षणों में जहाज पर लगे सभी रूसी उपकरणों का परीक्षण शामिल था, जिसमें हथियार फायरिंग भी शामिल थी। परीक्षणों के दौरान, जहाज ने 30 नॉट से अधिक की प्रभावशाली गति दर्ज की। भारतीय नौसेना के प्रवक्ता ने शुक्रवार को यहां कहा, 'इन परीक्षणों के सफलतापूर्वक पूरा होने के साथ, जहाज युद्ध के लिए तैयार स्थिति में भारत पहुँचेगा और अपने हमले की शुरुआत से ही हमला करने के लिए तैयार होगा।' जहाज का नाम तुशील है, जिसका अर्थ है 'रक्षक कवच' और इसका शिखर 'अभेद्य कवच' (अभेद्य ढाल) का प्रतिनिधित्व करता है। अपने आदर्श वाक्य 'निर्भय, अभेद्य और बलशील' (निडर, अदम्य, दृढ़) के साथ, यह जहाज देश की समुद्री सीमाओं की रक्षा और सुरक्षा के लिए भारतीय नौसेना की अटूट प्रतिबद्धता का प्रतीक है। जहाज का नया डिज़ाइन इसे बेहतर स्टेल्थ सुविधाएँ और बेहतर स्थिरता विशेषताएँ प्रदान करता है। भारतीय नौसेना विशेषज्ञों और सेवर्नोय डिज़ाइन ब्यूरो के सहयोग से जहाज की स्वदेशी सामग्री को 26 प्रतिशत तक बढ़ाया गया है। इसमें शामिल प्रमुख भारतीय ओईएम में ब्रह्मोस एयरोस्पेस प्राइवेट लिमिटेड, भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड, केल्ट्रॉन, टाटा से नोवा इंटीग्रेटेड सिस्टम्स, एल्कम मरीन, जॉनसन कंट्रोल्स इंडिया और कई अन्य शामिल हैं।

मंत्रिमंडल ने 85 नए केंद्रीय विद्यालय और 28 नवोदय विद्यालय खोलने को मंजूरी दी

नई दिल्ली(भाषा)। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि केंद्रीय मंत्रिमंडल ने शुक्रवार को 85 नए केंद्रीय विद्यालय और 28 नए नवोदय विद्यालय खोलने को मंजूरी दे दी। वैष्णव ने कहा कि मंत्रिमंडल ने एक केन्द्रीय विद्यालय के विस्तार को भी मंजूरी दे दी। इन नए केंद्रीय विद्यालयों के खुलने से देश भर में 82,000 से अधिक छात्रों को सस्ती और उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलेगा। 2025-26 तक आठ वर्षों की अवधि में 85 नए केंद्रीय विद्यालयों की स्थापना और एक मौजूदा केंद्रीय विद्यालय के विस्तार के लिए धन की कुल अनुमानित आवश्यकता 5,872.08 करोड़ रुपए है। इसमें कहा गया कि आज की तारीख तक सुचारू रूप से काम कर रहे केंद्रीय विद्यालयों की संख्या1,256 है जिनमें से तीन विदेश- मॉस्को, काठमांडू और तेहरान में स्थित हैं।

सरकार सभी कृषि उपज न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीदेगी : चौहान

भाषा। नई दिल्ली

केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने शुक्रवार को राज्यसभा में कहा कि नरेंद्र मोदी सरकार सभी कृषि उपजों को न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीदेगी। उच्च सदन में केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री चौहान ने प्रश्नकाल के दौरान किसानों को न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) के मुद्दे पर पूरक प्रश्नों का उत्तर देते हुए यह आश्वासन दिया। मंत्री ने यह आश्वासन उस दिन दिया जब किसान अपनी मांगों को लेकर दिल्ली तक पैदल मार्च करने की योजना बना रहे हैं। चौहान ने सदन को बताया, मैं आपके (सभापति के) माध्यम से सदन को आश्वस्त करना चाहता हूं कि किसानों की सभी उपज न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीदी जाएगी। यह मोदी सरकार है और मोदी की गारंटी को पूरा करने की गारंटी है। उन्होंने कहा, जब दूसरी तरफ के हमारे मित्र सत्ता में थे तो उन्होंने रिकॉर्ड पर कहा था कि वे एम एस स्वामीनाथन आयोग की सिफारिशों को स्वीकार नहीं कर सकते, खासकर उपज की लागत से 50 प्रतिशत अधिक देने की बात। मेरे पास रिकॉर्ड है। चौहान ने उन्होंने अपने दावे के समर्थन में पूर्व कृषि राज्य मंत्री कांतिलाल भूरिया, कृषि मंत्री शरद पवार और के वी थॉमस का हवाला दिया। उनकी टिप्पणी के बाद, उच्च सदन के सभापति जगदीप धनखड़ ने उनसे अपने दावे की पुष्टि करने के लिए दस्तावेज सदन के पटल पर पेश करने को कहा। चौहान इस पर सहमत हो गए। मंत्री ने दावा किया, उन्होंने (पूर्ववर्ती संप्रग सरकार ने) कभी किसानों का सम्मान नहीं किया और कभी किसानों की लाभकारी कीमतों की मांगों पर गंभीरता से विचार नहीं किया। मैं आपके माध्यम से सदन को आश्वस्त करना चाहता हूं कि 2019 से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किसानों को उत्पादन लागत पर 50 प्रतिशत लाभ देकर न्यूनतम समर्थन

मूल्य की गणना करने का फैसला किया है। उन्होंने यह भी दावा किया कि मोदी सरकार पहले से ही किसानों को लाभकारी मूल्य दे रही है। चौहान ने कहा कि धान, गेहूं, ज्वार, सोयाबीन को तीन साल पहले से ही उत्पादन लागत से 50 प्रतिशत अधिक कीमत पर खरीदा जा रहा है। उन्होंने वस्तुओं की दरों में गिरावट होने पर निर्यात शुल्क और कीमतों को बदलने में हस्तक्षेप का भी हवाला दिया।कांग्रेस सदस्य जयराम रमेश द्वारा एमएसपी पर उनके विचार पूछे जाने पर चौहान ने कहा, एमएसपी के बारे में मेरे विचार स्पष्ट हैं। हम 50 प्रतिशत से अधिक लाभ पर एमएसपी तय करेंगे और किसानों की उपज भी खरीदेंगे। उन्होंने कहा, आपने किसानों की उपज नहीं खरीदी, हम उसे खरीदेंगे और उच्च एमएसपी तय करेंगे... जब कांग्रेस सत्ता में थी, तो उन्होंने कभी किसानों की उपज एमएसपी पर नहीं खरीदी और किसान खून के आंसू बहाते रहे, लेकिन मेरे लिए किसान की सेवा भगवान की पूजा की तरह है। रमेश ने तब संवैधानिक पद पर आसीन सभापति द्वारा मंत्री को एमएसपी पर किसानों से बात करने के लिए कहे गए शब्दों की याद दिलाई। इस पर सभापति धनखड़ ने कहा कि उन्होंने कृषि मंत्री के साथ यात्रा की थी और उन्हें किसानों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का भरोसा है। धनखड़ ने कहा, जाते और वापस आते समय मंत्री मेरे साथ थे। मैंने मंत्री को बताया और मुझे आश्वासन दिया गया कि जिसे लाडले के नाम से जाना जाता है, वह किसानों का लाडला भी बनेगा। मुझे उम्मीद है कि ऊर्जावान मंत्री, जो अपने नाम शिवराज के समानार्थी हैं, ऐसा करेंगे। उन्होंने कहा, मैंने आपको किसान के लाड़ले नाम दिया है... मुझे खुशी होती अगर जयराम रमेश की ओर से कोई स्थगन प्रस्ताव आता, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। राजद सदस्य मनोज कुमार झा ने पूछा कि क्या सरकार कृषि ऋण माफी की रूपरेखा बनाने पर विचार कर रही है? इस पर चौहान ने कहा कि सरकार इसके बजाय किसानों की आय बढ़ाने की दिशा में काम कर रही है। उन्होंने कहा, हम किसानों की आय बढ़ाने में विश्वास करते हैं और यह सरकार लगातार इस दिशा में काम कर रही है। चौहान ने कहा, मोदी सरकार दूरदर्शिता के साथ काम करती है। हम उत्पादन बढ़ाएंगे, उत्पादन की लागत कम करेंगे, उपज के लिए लाभकारी मूल्य प्रदान करेंगे, उपज के नुकसान की स्थिति में मुआवजा देंगे, कृषि में विविधीकरण लाएंगे, प्राकृतिक खेती की ओर रुख करेंगे और यह सुनिश्चित करेंगे कि किसानों की आय इतनी बढ़ जाए कि उन्हें किसी भी कृषि ऋण माफी की जरूरत न हो।

दिल्ली उच्च न्यायालय ने राहुल गांधी की नागरिकता संबंधी स्वामी की याचिका पर केंद्र से जवाब मांगा

नई दिल्ली। दिल्ली उच्च न्यायालय ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेता सुब्रमण्यम स्वामी की उस याचिका पर शुक्रवार को केंद्र से अपना रुख स्पष्ट करने को कहा जिसमें गृह मंत्रालय को कांग्रेस नेता राहुल गांधी की भारतीय नागरिकता पर निर्णय लेने के लिए निर्देश दिए जाने का अनुरोध किया गया है। कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश विभु बाखरू और न्यायमूर्ति तुषार राव गेडेला की पीठ ने मौखिक रूप से केंद्र सरकार की ओर से पेश प्रॉक्सी वकील से मामले में निर्देश प्राप्त करने को कहा। पीठ ने कहा, हम कोई भी आदेश पारित करने से पहले सरकार के वकील की सहायता लेना चाहते है। अदालत शुरू में याचिका पर नोटिस जारी करने की इच्छुक थी। अदालत को केंद्र के प्रॉक्सी वकील ने बताया कि मामले में पूर्व में सरकार का प्रतिनिधित्व कर रहे अधिवक्ता को वरिष्ठ अधिवक्ता के रूप में नामित किया गया है, इसलिए उन्होंने मामले में नए वकील को नियुक्त करने के लिए कुछ समय मांगा है। स्वामी ने जब अदालत से उनकी याचिका पर नोटिस जारी करने का आग्रह किया तो पीठ ने कहा, हम देखेंगे कि उनका (केंद्र का) रुख क्या है और फिर जरूरत होने पर उनका जवाब मांगेंगे। इसके बाद पीठ ने मामले में आगे की सुनवाई के लिए 13 जनवरी, 2025 की तारीख तय की। अधिवक्ता सत्य सभरवाल के जरिए दायर याचिका में कहा गया है कि छह अगस्त, 2019 को स्वामी ने मंत्रालय को एक पत्र लिखा था और ब्रिटेन सरकार के सामने गांधी के उस स्वैच्छिक खुलासे का जिक्र किया था, जिसमें कहा गया था कि वह (गांधी) ब्रिटिश नागरिक है और वहां का पासपोर्ट रखने के हकदार है। स्वामी ने अपनी याचिका में कहा कि कांग्रेस नेता ने भारतीय नागरिक होते हुए भी संविधान के अनुच्छेद नौ और भारतीय नागरिकता अधिनियम का उल्लंघन किया है और इस प्रकार वे भारतीय नागरिक नहीं रह जाएंगे। स्वामी ने कहा है कि उन्होंने अपनी शिकायत की स्थिति के बारे में पूछताछ के लिए मंत्रालय को कई अभ्यावेदन भेजे है, लेकिन न तो कोई कार्वाई की गई है और न ही उन्हे इसके बारे में सूचित किया गया। गांधी की नागरिकता के मुद्दे पर इलाहाबाद उच्च न्यायालय मे याचिका दायर करने वाले कर्नाटक के भाजपा कार्यकर्ता एस विग्नेश शिशिर ने शुक्रवार की सुनवाई के दौरान अदालत को घटनाक्रम से अवगत कराया। इससे पहले, दिल्ली उच्च न्यायालय ने शिशिर को इलाहाबाद उच्च न्यायालय में उनके द्वारा दायर जनहित याचिका के मद्देनजर घटनाक्रम का उल्लेख करते हुए एक अभियोग आवेदन और हलफनामा दाखिल करने की अनुमति दी थी। स्वामी ने कहा है कि इलाहाबाद उच्च न्यायालय मे लंबित मामले का उनके मामले से कोई लेना-देना नही है, और प्रार्थनाएं पूरी तरह से अलग है, शिशिर ने दावा किया कि स्वामी की याचिका बहुलता और समानांतर कार्यवाही की ओर ले जा रही है।

सरकारी नौकरी के लिए चुने गए उम्मीदवारों के दस्तावेजों की जांच छह महीने में करे पुलिस : न्यायालय

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने सभी राज्य सरकारो के पुलिस अधिकारियो को निर्देश दिया है कि वे सरकारी नौकरियो के लिए चुने गए उम्मीदवारो द्वारा प्रस्तुत विभिन्न दस्तावेजों की जांच और सत्यापन उनकी नियुक्ति की तारीख के छह महीने के भीतर करें। न्यायमूर्ति जे के माहेश्वरी और न्यायमूर्ति आर महादेवन की पीठ ने पांच दिसंबर को पारित आदेश मे कहा कि उम्मीदवारो की पृष्ठभूमि के सत्यापन के बाद ही सरकारी पदो पर नियुक्तियो को नियमित किया जाना चाहिए। शीर्ष अदालत ने सेवानिवृत्ति की तारीख से दो महीने पहले एक कर्मी की बर्खास्तगी को खारिज करते हुए यह निर्देश दिया। याचिकाकर्ता छह मार्च, 1985 को लोक सेवा मे शामिल हुआ, लेकिन पुलिस द्वारा सत्यापन रिपोर्ट विभाग को सेवानिवृत्ति की तारीख से केवल दो महीने पहले सात जुलाई, 2010 को इस आधार पर दी गई कि वह देश का नागरिक नही है। शीर्ष अदालत ने सभी राज्यो के पुलिस अधिकारियो को सरकारी सेवा मे नियुक्ति के लिए चुने गए उम्मीदवारो द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजों की जांच नियुक्ति की तारीख से छह महीने से पहले करने का निर्देश दिया। पीठ ने आगे कहा, यह स्पष्ट किया जाता है कि उम्मीदवारों की पृष्ठभूमि के सत्यापन के बाद ही उनकी नियुक्तियो को नियमित किया जाना चाहिए ताकि आगे की जटिलताओं से बचा जा सके, जैसा कि इस मामले में है। न्यायालय कलकत्ता उच्च न्यायालय के एक आदेश को चुनौती देने वाली बासुदेव दत्ता द्वारा दायर याचिका पर सुनवाई कर रहा था। कलकत्ता उच्च न्यायालय ने पश्चिम बंगाल राज्य प्रशासनिक न्यायाधिकरण द्वारा पारित निर्देश को खारिज कर दिया था।

ईस्टमैन ने नवाचार व तकनीकी पर दिया ध्यान

गुड़गांव। पॉवर सॉल्यूशंस के मुख्य प्रदाता ईस्टमैन ऑटो एंड पॉवर ने अपने इन्वर्टर बैटरी पोर्टफोलियो का विस्तार करते हुए 170 स्टॉक कीपिंग यूनिट्स एसकेयू के साथ ईस्टमैन ब्रांड के अंतर्गत 100 से ज्यादा और ब्रांड के अंतर्गत 70 से ज्यादा नए मॉडल पेश किए। इस विस्तार के साथ ईस्टमैन इन्वर्टर बैटरी बाजार में सबसे बड़ा पोर्टफोलियो पेश करने वाली कंपनी बन गई हैए जो पॉवर की हर जरूरत को पूरा करने के लिए समाधान प्रदान कर रही है। इसके विस्तृत पोर्टफोलियो में अब 100एएच से लेकर भारत में पहली बार पेश किए गए 400एएच तक के उत्पाद शामिल हैं। ये उत्पाद आवासीय, वाणिज्यिक और उद्योग जगत के हर प्रयोग के लिए ऊर्जा समाधान प्रदान करेंगे। ईस्टमैन अपनी पूरी रेंज के लिए उद्योग में अग्रणी वॉरंटी के साथ भारतीय इन्वर्टर बैटरी बाजार में विश्वसनीयता का नया मानक स्थापित कर रहा है। ग्राहकों को 3 महीने से लेकर 240 महीने ;20 सालद्ध तक की लंबी वॉरंटी प्रदान करके ईस्टमैन अपने उत्पादों की गुणवत्ता में अटूट विश्वास प्रमाणित कर रहा है। ईस्टमैन की उच्च क्षमता की प्रीमियम सीरीज़ में इनोवेटिव 400 की बैटरी और 250एएचसे लेकर 400एएचतक के मॉडल शामिल हैं। यह सीरीज़ विशेषकर उन उपयोगों के लिए बनाई गई है, जिनमें एक मजबूत और विश्वसनीय पॉवर बैकअप की जरूरत होती है। बाजार में भिन्न.भिन्न जरूरतों को पूरा करने के लिए ईस्टमैन ने अपने पोर्टफोलियो को बजट.प्रेमी ग्राहकों के लिए स्मार्ट सीरीज़, किफायत पसंद करने वाले ग्राहकों के लिए रैगुलर सीरीज़, और सर्वोत्तम परफॉर्मेंस एवं फीचर्स पसंद करने वाले ग्राहकों के लिए प्रीमियम सीरीज़ में बाँटा है।

छात्र को थप्पड़ मारने के मामले में शिक्षिका ने किया समर्पण, जमानत मिली

मुजफ्फरनगर (उप्र)। उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले के एक स्कूल मे मुस्लिम छात्र को थप्पड़ मारने के मामले मे शामिल स्कूल शिक्षिका तृप्ता त्यागी ने बृहस्पतिवार को विशेष पोक्सो अदालत मे आत्मसमर्पण कर दिया और उसे नियमित जमानत मिल गई।अपर जिला न्यायाधीश (पोक्सो) अलका भारती ने स्कूल शिक्षिका तृप्ता त्यागी को नियमित जमानत दे दी और आदेश दिया कि आरोपी को 25,000 रुपए की दो जमानते देनी होगी। साथ ही उन्होने मामले मे आरोपियो के खिलाफ आरोप तय करने के लिए सात दिसंबर की तारीख तय की।तृप्ता त्यागी के वकील कपिल अहलावत ने शुक्रवार को पीटीआई भाषा को बताया कि इलाहाबाद उच्च न्यायालय के निर्देश पर तृप्ता त्यागी ने विशेष पोक्सो अदालत मे आत्मसमर्पण किया और मामले मे नियमित जमानत की अपील की।इससे पहले, इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने 23 नवंबर को तृप्ता की अग्रिम जमानत याचिका खारिज कर दी थी और उन्हे मामले मे दो सप्ताह के भीतर संबंधित अदालत मे आत्मसमर्पण करने का निर्देश दिया था।अभियोजन पक्ष के अनुसार, पुलिस ने पिछले साल अदालत मे तृप्ता त्यागी के खिलाफ भादस की धारा 323 (स्वेच्छा से चोट पहुंचाने की सजा), 504 (शांति भंग करने के इरादे से जानबूझकर अपमान करना), 295 ए (जानबूझकर और दुर्भावनापूर्ण कार्य, किसी वर्ग के धर्म या धार्मिक आस्था का अपमान करके उसकी धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाना) और किशोर न्याय अधिनियम के तहत आरोप पत्र दायर किया था।यह घटना 23 अगस्त, 2023 को एक वीडियो सामने आने के बाद सामने आई, जिसमे तृप्ता त्यागी अपने छात्रों को मुजफ्फरनगर जिले के मंसूरपुर थाने के तहत खुब्बापुर गांव के एक स्कूल मे एक युवा मुस्लिम लड़के को थप्पड़ मारने और सांप्रदायिक टिप्पणी करने का निर्देश देती दिख रही थी। घटना के बाद मामले के संबंध मे शिक्षा विभाग द्वारा स्कूल को नोटिस भी दिया गया था। लड़के के परिवार की शिकायत पर तृप्ता त्यागी मामला दर्ज किया गया।

हेमंत सोरेन ने मंत्रियों को विभागों का बंटवारा किया, गृह विभाग अपने पास रखा

रांची। झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने शुक्रवार को नए मंत्रियो को विभागो का बंटवारा किया, जबकि गृह, कार्मिक सहित कई अहम विभाग अपने पास ही रखे है। एक सरकारी अधिसूचना मे यह जानकारी दी गई। कांग्रेस विधायक राधाकृष्ण किशोर को वित्त, वाणिज्यिक कर, योजना एवं विकास विभाग तथा संसदीय कार्य विभाग सौंपा गया है। अधिसूचना के अनुसार झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) विधायक दीपक बिरुवा को राजस्व, पंजीकरण और भूमि सुधार (गैर-पंजीकरण) और परिवहन विभाग आवंटित किए गए है। झामुमो नेता चमरा लिंडा को अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित जाति, पिछड़ा वर्ग (अल्पसंख्यक कल्याण को छोड़कर) विभाग आवंटित किया गया।राजद के संजय प्रसाद यादव को उद्योग, श्रम, योजना, प्रशिक्षण और कौशल विकास विभाग दिए गए। अधिसूचना मे कहा गया है कि कांग्रेस के इरफान अंसारी को स्वास्थ्य, चिकित्सा शिक्षा और परिवार कल्याण के अलावा खाद्य, सार्वजनिक वितरण और उपभोक्ता मामले तथा आपदा प्रबंधन विभाग दिए गए है। मुख्यमंत्री ने मंत्रिमंडल सचिवालय, कार्मिक, प्रशासनिक सुधार एवं राजभाषा, पथ निर्माण, भवन निर्माण तथा अभी तक किसी को आवंटित नही किए गए विभागो को भी अपने पास रखा है। अन्य मंत्रियों मे झामुमो के रामदास सोरेन को स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता तथा निबंधन विभाग दिया गया। हफीजुल हसन को जल संसाधन और अल्पसंख्यक कल्याण विभाग आवंटित किया गया। कांग्रेस विधायक दीपिका पांडे सिंह को पंचायती राज, ग्रामीण कार्य और ग्रामीण विकास विभाग दिए गए अधिसूचना के अनुसार, मुख्यमंत्री ने पेयजल एवं स्वच्छता तथा आबकारी एवं मद्य निषेध विभाग झामुमो के योगेन्द्र प्रसाद को दिए है।

बादल पर हमला: शिअद पंजाब के राज्यपाल से निष्पक्ष जांच की मांग करेगा

चंडीगढ़। शिरोमणि अकाली दल (शिअद) की कोर कमेटी ने शुक्रवार को कहा कि वह पार्टी नेता सुखबीर सिंह बादल की हत्या के प्रयास की निष्पक्ष जांच की मांग को लेकर पंजाब के राज्यपाल गुलाब चंद कटारिया से संपर्क करेगी। पंजाब के अमृतसर में स्वर्ण मंदिर के बाहर बुधवार को शिअद प्रमुख सुखबीर सिंह बादल पर एक पूर्व खालिस्तानी आतंकवादी नारायण सिंह चौड़ा ने गोली चलाई, लेकिन वहां सादे कपड़ों में मौजूद एक पुलिसकर्मी द्वारा आरोपी को पकड़ लिए जाने से उसका निशाना चूक गया और बादल बाल-बाल बच गए। पंजाब में शिअद सरकार द्वारा 2007 से 2017 तक की गई गलतियो के लिए स्वर्ण मंदिर मे सेवादार के रूप में बादल की सजा का यह दूसरा दिन था, जिसे कवर करने पहुंचे मीडियाकर्मियो के कैमरे मे हमले का पूरा दृश्य रिकॉर्ड हो गया।

इसुज़ू मोटर्स विंटर कैम्प का आयोजन करेगा

चेन्नई। इसुज़ू मोटर्स इंडिया ने वाहन स्वामित्व का बेहतरीन और अतुलनीय अनुभव प्रदान करने की अपनी प्रतिबद्धता के साथ पूरे देश में इसुज़ू आई केयर विंटर कैम्पकी घोषणा की है। इसुज़ू डी.मैक्स पिक.अप के लिए डिज़ाइन किए गये ये शिविर पूरे देश में इसुज़ू वाहन मालिकों को आकर्षक लाभ और प्रिवेंटिव मेंटेनेंस जाँच प्रदान करेंगे। ष्इसुज़ू केयरष् द्वारा 9 से 14 दिसंबर 2024 ;ये दोनों दिन भी शामिलद्ध के बीच सभी अधिकृत इसुज़ू डीलर सर्विस आउटलेट्स पर विंटर कैम्प लगाया जा रहा है। इस अवधि में ग्राहकों को उनके वाहनों के लिए विशेष ऑफर और लाभ दिये जा रहे हैंइस शिविर में आने वाले ग्राहकों को निम्नलिखित लाभ होंगेरू.मुफ्त 37.पॉइंट विस्तृत जाँचलेबर पर 10 प्रतिशत की छूट' पार्ट्स पर 5 प्रतिशत की छूट'ल्यूब और फ्लूइड पर 5 प्रतिशतः की छूट ख़रीद पर 10 प्रतिशत की छूट देगा।विंटर कैम्पअहमदाबाद, बारामूला, बेंगलुरु, भांडुप ,मुंबइ कालीकट, चेन्नई, कोयंबतूर, दीमापुरए, गांधीधाम, गोरखपुर, गुरुग्राम, ,लखनऊ में इसुज़ू के अधिकृत सर्विस केंद्रों में लगाये जाएँगे।

ओडिशा: स्कूल के मुख्य द्वार पर लड़के को बांधकर पिटाई के मामले में जांच के आदेश

केंद्रपाड़ा (ओडिशा)। ओडिशा मे एक स्कूल के मुख्य द्वार पर शिक्षकों द्वारा सात वर्षीय लड़के को बांधकर पिटाई के मामले मे शुक्रवार को जांच का आदेश दिया गया। राज्य सरकार के एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। यह घटना 25 नवंबर को केंद्रपाड़ा जिले के मार्शाघई पुलिस थाना क्षेत्र मे एक निजी अंग्रेजी माध्यम स्कूल मे हुई थी, लेकिन घटना की तस्वीरें और वीडियो सामने आने के बाद यह मामला प्रकाश मे आया, जिससे लोगों मे आक्रोश फैल गया। कक्षा मे कथित रूप से गड़बड़ी फैलाने के आरोप मे लड़के को दंडित किया गया।

रामराज कॉटन के ब्रैंड एम्बेसेडर बने अभिषेक बच्चन

मुंबई। भारत के प्रमुख पारंपरिक और एथनिक परिधान ब्रांड रामराज कॉटन ने बॉलीवुड अभिनेता अभिषेक बच्चन को अपना नया ब्रांड एंबेसडर नियुक्त किया है। यह घोषणा रामराज कॉटन के संस्थापक और अध्यक्ष केआरण् नागराजन और प्रबंध निदेशक बीआरण अरुण ईश्वर द्वारा की गई। रामराज कॉटन के संस्थापक और चेयरमैन केण् आरनागराजन ने कहा कि हम रामराज परिवार में अभिषेक बच्चन का स्वागत करते हुए बहुत खुश हैं। प्रामाणिकता के लिये उनकी प्रतिष्ठा और देशभर में दर्शकों के साथ उनका जुड़ाव हमारे ब्रैंड के लिये उन्हें पहली पसंद बनाता है। अपनी विशिष्ट शैली और विभिन्न दर्शकों से जुड़ने की क्षमता के लिए प्रसिद्ध अभिषेक बच्चन आगामी टेलीविजन विज्ञापनों, पोस्टरों और एक व्यापक मार्केटिंग अभियान में रामराज कॉटन का प्रतिनिधित्व करेंगे जो ब्रांड की पहुंच को और अधिक मजबूत करेगा।

काला मास्क पहनकर और संविधान की प्रति लेकर विपक्षी सांसदों ने निकाला मार्च

नई दिल्ली। विपक्षी गठबंधन इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंस (इंडिया) के कई घटक दलों के सांसदों ने अदाणी समूह से जुड़े मुद्दे को लेकर शुक्रवार को संसद परिसर में काले रंग का मास्क पहनकर और हाथों में संविधान की प्रति लेकर मार्च निकाला।कांग्रेस, राष्ट्रीय जनता दल (राजद), झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) और कुछ अन्य दलों के सांसदों ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के खिलाफ नारे लगाए और जवाबदेही तय किए जाने की मांग की।लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी और कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाद्रा इस मार्च की अगुवाई कर रहे थे। तृणमूल कांग्रेस और समाजवादी पार्टी ने पिछले कुछ दिन की तरह आज भी इस विरोध प्रदर्शन में हिस्सा नहीं लिया। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाद्रा ने आरोप लगाया कि सरकार अदाणी के मुद्दे पर चर्चा कराने से डर रही है। उन्होंने कहा, अदाणी के मुद्दे पर (संसद में) चर्चा करने की उनमें हिम्मत नहीं है। चर्चा कराने से दिक्कत क्यों है... चर्चा लोकतंत्र में ही होती है, वे इससे डरते हैं। कांग्रेस के संगठन महासचिव के सी वेणुगोपाल ने कहा, आज भारतीय संविधान के निर्माता बी. आर. आंबेडकर की पुण्यतिथि है। यहां अदाणी के लिए संवैधानिक अधिकारों का हनन किया गया है। हम सांकेतिक विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं। जब अदाणी का नाम आता है, तो भारत सरकार मुद्दे को भटकाने की कोशिश करती है। रिश्वतखोरी और धोखाधड़ी के आरोपों में अदाणी समूह के प्रमुख गौतम अदाणी और कंपनी के अन्य अधिकारियों पर अमेरिकी अभियोजकों द्वारा अभियोग लगाए जाने के बाद कांग्रेस और कुछ अन्य विपक्षी दल संयुक्त संसदीय समिति से आरोपों की जांच कराए जाने की मांग कर रहे हैं।

बंगाल में चौथी कक्षा की छात्रा से बलात्कार-हत्या मामले में युवक को मृत्युदंड

ममता ने की सराहना

भाषा। कोलकाता

पश्चिम बंगाल के दक्षिण 24 परगना जिले की एक विशेष अदालत ने 10 वर्षीय लड़की से बलात्कार और हत्या के मामले में दो महीने के अंदर 19 वर्षीय युवक को मौत की सजा सुनाई है। लड़की का शव पांच अक्टूबर को जयनगर कुलतली इलाके में एक तालाब से बरामद किया गया था। चौथी कक्षा की छात्रा ट्यूशन से घर लौटते समय लापता हो गई थी। बरुईपुर में अतिरिक्त जिला न्यायाधीश सुब्रत चट्टोपाध्याय की पॉक्सो अदालत ने आरोपी को भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा 65

(बलात्कार), 66 (पीड़िता की मृत्यु या अचेत अवस्था में पहुंचाने के लिए दंड) और 103 (हत्या) के अलावा यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण (पॉक्सो) अधिनियम के तहत दोषी ठहराया। अदालत ने इस घटना को "दुर्लभतमै बताते हुए दोषी को मृत्युदंड सुनाया। पुलिस ने 30 अक्टूबर को आरोप पत्र दाखिल किया था और पांच नवंबर को शुरू हुआ मुकदमा सिर्फ 21 दिन में पूरा हो गया। यह घटना आरजी कर मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल में चिकित्सक से बलात्कार और हत्या मामले को लेकर जारी विरोध के बीच हुई थी। कोलकाता से लगभग 50 किलोमीटर दूर हुई इस घटना के बाद इलाके में हिंसक प्रदर्शन हुए थे। इस दौरान वाहनों का आग लगाने के अलावा एक पुलिस चौकी को तहस-नहस कर दिया गया था। साथ ही प्रदर्शनकारियों ने सड़कें भी बंद कर दी थीं। राज्य सरकार ने मामले की जांच के लिए एक विशेष जांच दल (एसआईटी) का गठन किया था।

राष्ट्रपति मुर्मू अपने जन्मस्थान पहुंचीं, ग्रामीणों ने भव्य स्वागत किया

रायरंगपुर। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू शुक्रवार को ओडिशा के मयूरभंज जिले में अपने जन्मस्थान उपरबेड़ा गांव की यात्रा करने के दौरान भावुक हो गईं और कहा कि उन्होंने गांव को हमेशा अपने परिवार की तरह माना है। मुर्मू का जन्म 20 जून 1958 को बामनघाटी अनुमंडल के उपरबेड़ा गांव में एक संथाली परिवार में हुआ था। वह देश के सर्वोच्च संवैधानिक पद पर आसीन होने के बाद पहली बार अपने गांव और पैतृक घर आईं। उन्होंने 25 जुलाई 2022 को भारत के राष्ट्रपति का पदभार ग्रहण किया था। गांव पहुंचते ही मुर्मू उपरबेड़ा सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालय पहुंचीं, जहां उन्होंने शुरुआती पढ़ाई की थी। उनके स्वागत के लिए स्कूल और पूरे गांव को सजाया गया था। शिक्षकों, छात्रों और ग्रामीणों ने उनका स्वागत किया। छात्रों से बातचीत करते हुए मुर्मू ने कहा, मैं 66 साल की हूं...और आज भी, मुझे अपने स्कूल और गांव में एक बच्चे की तरह महसूस हो रहा। मुझे याद है कि कैसे शिक्षक हमें मिट्टी की दीवारों वाली कक्षाओं में पढ़ाते थे। मुर्मू ने यह भी कहा कि शिक्षक और गांव के लोग उन्हें परिवार के सदस्य की तरह मानते हैं, किसी बाहरी व्यक्ति की तरह नहीं।

भारत में पांच में से एक शिशु का जन्म होता है ऑपरेशन के जरिए : अध्ययन

भाषा। नई दिल्ली

भारत में हर पांच में से एक शिशु का जन्म ऑपरेशन के जरिए होता है और इनमें से अधिकतर सर्जरी सरकारी स्वास्थ्य केन्द्रों की तुलना में निजी स्वास्थ्य केन्द्रों में की जाती हैं। एक अध्ययन में यह बात सामने आई है। द लैंसेट रीजनल हेल्थ-साउथईस्ट एशिया जर्नल में प्रकाशित इस अध्ययन में नई दिल्ली स्थित जॉर्ज इंस्टीट्यूट फॉर ग्लोबल हेल्थ के शोधकर्ताओं ने राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (2019-2021) के पांचवें दौर में एकत्र किए गए 28 राज्यों और आठ केंद्र शासित प्रदेशों की 15-49 वर्ष की 7.2 लाख से अधिक महिलाओं के आंकड़ों का विश्लेषण किया। विभिन्न राज्यों में सिजेरियन या सी-सेक्शन प्रसव की दर में काफी भिन्नता पाई गई नागालैंड में यह 5.2 प्रतिशत है वहीं तेलंगाना में 60.7 प्रतिशत तक है। अध्ययनकर्ताओं ने पाया कि ए सुविधाए सरकारी केंद्रों की तुलना में निजी स्वास्थ्य देखभाल इकाइयों में अधिक थीं। अनुसंधान कर्ताओं ने कहा, अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला है कि भारत में उच्च आय और निम्न आय वर्ग में सरकारी केन्द्रों की तुलना में निजी प्रतिष्ठानों पर सीजेरियन प्रसव कराने की अधिक संभावना है।

आरबीआई ने रेपो दर को स्थिर बनाए रखा

सीआरआर में कटौती की, बैंकों के लिए 1.16 लाख करोड़ रुपए होंगे उपलब्ध

भाषा। मुंबई

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने मुद्रास्फीति के जोखिम का हवाला देते हुए शुक्रवार को अपनी प्रमुख ब्याज दर में कोई बदलाव नहीं किया लेकिन सुस्त पड़ती अर्थव्यवस्था को सहारा देने के लिए बैंकों के पास धन बढ़ाने के लिए नकद आरक्षित अनुपात (सीआरआर) में कटौती कर दी। इसके साथ ही आरबीआई ने आर्थिक गतिविधियों में सुस्ती के बीच मार्च 2025 को समाप्त होने वाले वित्त वर्ष के लिए अपने वृद्धि अनुमान को 7.2 प्रतिशत के पिछले अनुमान से घटाकर 6.6 प्रतिशत कर दिया। जुलाई-सितंबर की तिमाही में देश के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में अनुमान से कहीं अधिक गिरावट देखी गई और यह सात तिमाहियों में सबसे कम 5.4 प्रतिशत पर रही। आरबीआई की मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) ने लगातार 11वीं बैठक में नीतिगत ब्याज दर रेपो को 6.5 प्रतिशत पर अपरिवर्तित रखने का फैसला किया। आरबीआई गवर्नर शक्तिकान्त दास ने बैठक में लिए गए फैसलों की जानकारी देते हुए कहा कि एमपीसी के छह में से चार सदस्यों ने नीतिगत रुख को तटस्थ बनाए रखते हुए रेपो दर को स्थिर रखने के लिए मतदान किया। वहीं समिति के बाहरी सदस्यों- नागेश कुमार और राम सिंह एक चौथाई अंक की कटौती के पक्ष में थे। दास ने कहा कि सीआरआर को 0.50 प्रतिशत घटाकर चार प्रतिशत कर दिया गया है जो 14 दिसंबर और 28 दिसंबर को दो चरणों में प्रभावी होगा। इस कटौती से बैंकों में 1.16 लाख करोड़ रुपए आएंगे और अल्पकालिक ब्याज दरों में नरमी आएगी तथा बैंक जमा दरों पर दबाव कम हो सकता है। सीआरआर के तहत वाणिज्यिक बैंकों को अपनी जमा का एक निर्धारित हिस्सा नकदी के रूप में केंद्रीय बैंक के पास रखना होता है। इसे आखिरी बार 2020 में कम किया गया था। दास ने कहा, "इस समय विवेक और व्यावहारिकता की मांग है कि हम सावधान रहें। यथास्थिति रखना उचित और आवश्यक है। उन्होंने कहा कि यदि वृद्धि में नरमी एक बिंदु से आगे भी जारी रहती है तो उसे नीतिगत समर्थन की आवश्यकता हो सकती है। आरबीआई ने चालू वित्त वर्ष के लिए अपने वृद्धि अनुमान को घटाकर 6.6 प्रतिशत कर दिया जबकि पहले उसने जीडीपी वृद्धि 7.2 प्रतिशत रहने का अनुमान जताया था। हालांकि दास ने कहा कि जुलाई-सितंबर तिमाही में आर्थिक गतिविधियों में नरमी अपने निचले स्तर पर पहुंच चुकी हैं और बाद के महीनों में त्योहारी खर्च और मजबूत कृषि उत्पादन के कारण इसमें तेजी देखी गई है। इसके साथ आरबीआई ने चालू वित्त वर्ष के लिए अपने मुद्रास्फीति पूर्वानुमान को भी 4.5 प्रतिशत से बढ़ाकर 4.8 प्रतिशत कर दिया है। मुद्रास्फीति आरबीआई के लिए निर्धारित चार प्रतिशत लक्ष्य से ऊपर बनी हुई है। अक्टूबर में कीमतें बढ़ने से खुदरा मुद्रास्फीति 14 महीनों के उच्च स्तर 6.21 प्रतिशत पर पहुंच गई। केंद्रीय बैंक को मुद्रास्फीति में गिरावट की पुष्टि करने के लिए आंकड़ों का इंतजार करना होगा।

डॉलर पर निर्भरता कम करने की योजना नहीं, केवल जोखिम-मुक्त करने की कोशिशः दास

मुंबई। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के गवर्नर शक्तिकान्त दास ने शुक्रवार को कहा कि भारत की अपने व्यापारिक लेनदेन में डॉलर पर निर्भरता घटाने की कोई योजना नही है और वह सिर्फ अन्य साधनो से इसे जोखिम-मुक्त करने की कोशिश कर रहा है। दास अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के एक बयान पर पूछे गए एक सवाल का जवाब दे रहे थे। ट्रंप ने कहा था कि अगर ब्रिक्स देश अमेरिकी डॉलर से दूर जाने का फैसला करते है तो उन्हें 100 प्रतिशत शुल्क का सामना करना पड़ेगा। दास ने यहां आरबीआई मुख्यालय मे संवाददाताओ से कहा, जहां तक भारत का सवाल है तो हमने ऐसा कोई कदम नही उठाया है जो खास तौर पर व्यापार विनिमय मे डॉलर पर निर्भरता को कम करना चाहता हो वैश्विक व्यापार में लेनदेन की मुद्रा के तौर पर अमेरिकी डॉलर का दबदबा बना हुआ है। दास ने कहा कि भारत के प्रयास वोस्ट्रो खातो की अनुमति देने और स्थानीय मुद्रा मे व्यापार लेनदेन निपटाने के लिए दो देशों के साथ समझौते करने तक सीमित है। यह कदम मूल रूप से हमारे व्यापार को जोखिम मुक्त करने के लिए है। एक मुद्रा पर निर्भरता की वजह से कभी-कभी मूल्यवृद्धि या मूल्यह्रास के कारण समस्या हो सकती है। निश्चित रूप से हमारा उद्देश्य डॉलर निर्भरता को कम करना नही है, ऐसा कोई भी प्रस्ताव विचाराधीन नही है। ब्रिक्स मुद्रा के बारे में आरबीआई गवर्नर ने कहा कि यह समूह के एक सदस्य द्वारा पेश किया गया विचार है लेकिन इस पर कुछ चर्चाओं के अलावा कोई प्रगति नही हुई है। इस समूह मे ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका शामिल है। हाल ही मे इसका विस्तार भी हुआ है। उन्होंने कहा कि ब्रिक्स समूह के देश दुनिया भर मे फैले हुए है जबकि यूरोपीय देशों की निकटता ने यूरोपीय संघ के लिए एकल मुद्रा अपनाने मे मदद की है।

किसानों को अब बिना किसी गारंटी के मिलेगा दो लाख रुपए तक कर्जः आरबीआई

मुंबई। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने बढ़ती महंगाई से किसानो को राहत देने के मकसद से बिना गारंटी के अब दो लाख रुपए तक का कर्ज उपलब्ध कराने की घोषणा की है। अभी यह सीमा 1.6 लाख रुपए है। आरबीआई के गवर्नर शक्तिकान्त दास ने मौद्रिक नीति समीक्षा की जानकारी देते हुए बुधवार को कहा, मुद्रास्फीति और कृषि मे उपयोग होने वाले कच्चे माल की लागत मे वृद्धि को देखते हुए गारंटी मुक्त कृषि ऋण की सीमा को 1.6 लाख रुपए से बढ़ाकर दो लाख रुपए करने का निर्णय किया गया है। उन्होंने कहा कि इससे वित्तीय संस्थानो से कर्ज लेने को लेकर छोटे और सीमांत किसानो का दायरा बढ़ेगा। उल्लेखनीय है कि आरबीआई ने 2010 मे कृषि क्षेत्र को बिना किसी गारंटी के एक लाख रुपए देने की सीमा तय की थी। बाद में, 2019 मे इसे बढ़ाकर 1.6 लाख रुपए कर दिया गया था।

फर्जी खातों पर लगाम के लिए म्यूलहंटर एआई से जुड़ें बैंक

मुंबई। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने शुक्रवार को बैंकों से कहा कि वे उसकी पहल म्यूलहंटर डॉट एआई के साथ सहयोग करें, ताकि वित्तीय धोखाधड़ी के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले म्यूल खातो (फर्जी खातो) को हटाया जा सके। म्यूल खाता एक बैंक खाता है, जिसका इस्तेमाल अपराधी अवैध तरीके से पैसा लूटने के लिए करते है। गुमनाम व्यक्ति इन खातों को खोलकर इसमें लोगो से ठगी के पैसे जमा करवाते है। इन खातो से धन हस्तांतरण का पता लगाना और उसे वापस पाना मुश्किल होता है। रिजर्व बैंक के गवर्नर शक्तिकान्त दास ने कहा, धोखाधड़ी करने वालो द्वारा ठगी की रकम को हस्तांतरित करने के लिए म्यूल खातों का इस्तेमाल एक सामान्य तरीका है। उन्होंने द्विमासिक मौद्रिक नीति समीक्षा जारी करते हुए कहा कि आरबीआई इस समय वित्तीय धोखाधड़ी को पूरी तरह से रोकने के लिए एक हैकथॉन चला रहा है। दास ने कहा कि इस दिशा मे रिजर्व बैंक की सहायक इकाई रिजर्व बैंक इनोवेशन हब (आरबीआईएच) ने म्यूलहंटर डॉट एआई नामक एक एआई मॉडल तैयार किया है।

सीमा को तनावमुक्त बनाने के लिए कदम उठाने पर सहमत हुए भारत व चीन: बीजिंग

भाषा। बीजिंग

भारत और चीन पूर्वी लद्दाख में गतिरोध को व्यापक रूप से हल करने के लिए अक्टूबर में हुए समझौते को लागू करते हुए सीमाओं पर स्थिति को और तनावमुक्त बनाने के लिए कदम उठाने पर सहमत हुए हैं। चीन के विदेश मंत्रालय ने नई दिल्ली में वार्ता के एक दिन बाद यह बात कही। चीन और भारत ने बृहस्पतिवार को नई दिल्ली में चीन-भारत सीमा मामलों पर परामर्श और समन्वय के लिए कार्य तंत्र (डब्ल्यूएमसीसी) की 32वीं बैठक की और दोनों पक्षों ने राजनयिक और सैन्य चैनलों के माध्यम से संचार बनाए रखने तथा सीमा क्षेत्रों में स्थाई शांति और स्थिरता की रक्षा करने पर सहमति व्यक्त की। दोनों पक्षों ने सीमा से संबंधित मुद्दों पर किए गए समाधानों का सकारात्मक मूल्यांकन किया और सीमा की स्थिति को और तनावमुक्त बनाने के लिए उपाय करते हुए उन्हें लगातार व्यापक एवं प्रभावी ढंग से लागू करने पर सहमत हुए। पूर्वी लद्दाख में चार साल से अधिक समय पहले शुरू हुए सैन्य गतिरोध को हल करने के लिए दोनों देशों के बीच 21 अक्टूबर को हुए समझौते के बाद डब्ल्यूएमसीसी की यह पहली बैठक है। सैन्य टकराव की स्थिति ने दोनों देशों के बीच संबंधों को तनावपूर्ण बना दिया था। दोनों देशों के नेताओं द्वारा महत्वपूर्ण सहमति के बाद, बैठक में चीन-भारत सीमा मुद्दे पर विशेष प्रतिनिधियों की वार्ता के अगले दौर की तैयारियों पर ध्यान केंद्रित किया गया। विज्ञप्ति में कहा गया है कि दोनों पक्षों ने सीमा वार्ता तंत्र की भूमिका का लाभ उठाते रहने, राजनयिक और सैन्य चैनलों के माध्यम से संचार बनाए रखने और सीमावर्ती क्षेत्रों में स्थाई शांति और स्थिरता की रक्षा करने पर भी सहमति व्यक्त की। विदेश मंत्रालय ने कहा कि दोनों पक्षों ने भविष्य में इस तरह के टकराव को रोकने के लिए पूर्व लद्दाख सीमा विवाद से सीखे गए सबक पर विचार किया। बृहस्पतिवार को डब्ल्यूएमसीसी की बैठक में दोनों पक्षों ने द्विपक्षीय समझौतों और प्रोटोकॉल के अनुरूप सीमा क्षेत्रों में शांति और स्थिरता बनाए रखने पर सहमति व्यक्त की।

सुरक्षा, रक्षा पर द्विदलीय समर्थन भारत-अमेरिका संबंधों में महत्वपूर्ण आयाम: विवेक लाल

वाशिंगटन। अमेरिका में सत्ता हस्तांतरण की प्रक्रिया के बीच एक शीर्ष भारतीय अमेरिकी रक्षा नेता ने कहा कि सुरक्षा एवं रक्षा मामलों पर द्विदलीय समर्थन और सहयोग भारत-अमेरिका साझेदारी का सबसे महत्वपूर्ण आयाम है। पीटीआई-भाषा के साथ एक साक्षात्कार में जनरल एटॉमिक्स ग्लोबल कॉर्पोरेशन के मुख्य कार्यकारी डॉ विवेक लाल ने कहा, 21वीं सदी की सबसे महत्वपूर्ण रणनीतिक साझेदारियों में से एक भारत और अमेरिका की साझेदारी है। उन्होंने कहा, इस गठबंधन का सबसे महत्वपूर्ण आयाम सुरक्षा एवं रक्षा मामलों पर द्विदलीय समर्थन और सहयोग है। जून 2016 में तत्कालीन राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भारत और अमेरिका के बीच दुनिया के सबसे बड़े मानवरहित ड्रोन की खरीद के समझौते का समर्थन किया था, जिसे इस साल उनके उत्तराधिकारी जो बाइडन ने पूरा किया। उन्होंने कहा कि यह दोनों देशों के बीच रक्षा और सुरक्षा पहलुओं को प्राप्त द्विदलीय समर्थन को दर्शाता है। बीते एक दशक में भारत-अमेरिका रक्षा व्यापार में एक प्रमुख हस्ती के तौर पर उभरे लाल ने एक प्रश्न के उत्तर में कहा, बड़े, विविधतापूर्ण लोकतांत्रिक देशों के रूप में भारत और अमेरिका स्वाभाविक साझेदार हैं और दुनिया भर में शांति, स्थिरता और सुरक्षा के लिए समान व्यापक लक्ष्यों को साझा करते हैं। अक्टूबर में, लाल को स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय के हूवर इंस्टीट्यूशन में प्रतिष्ठित विजिटिंग फेलो के रूप में नियुक्त किया गया था, जिसमें भारत-अमेरिका रक्षा संबंधों को बढ़ाने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को मान्यता दी गई थी, जिसमें तीन अरब अमेरीकी डॉलर से अधिक का एक प्रमुख ड्रोन समझौता भी शामिल था। भारत जनरल एटॉमिक्स से 31 एमक्यू-9बी प्रीडेटर ड्रोन खरीद रहा है।

ताइवान के नेता ने चीन से धमकियां नहीं देने को कहा

ताइपे। ताइवान के राष्ट्रपति लाइ चिंग ते ने अपने पहले विदेशी दौरे के समापन पर चीन से लड़ाई झगड़े के बजाय पड़ोसी मुल्कों के लिए अपनी बाहें खोलने का आह्वान किया। लाइ चिंग ते ने मई में पदभार ग्रहण करने के बाद पहला विदेश दौरा किया है। चिंग ते ने शुक्रवार को प्रशांत द्वीप पलाऊ में संवाददाताओं को संबोधित करते हुए यह टिप्पणी की। उन्होंने कहा, पड़ोसी देशों को मजबूर करने के लिए चाहे जितने भी सैन्य अभ्यास और युद्धपोत व विमान इस्तेमाल कर लें लेकिन वह (चीन) किसी भी देश का सम्मान नहीं जीत पाएगा। चीन के विदेश मंत्रालय ने अमेरिका द्वारा ताइवान को हाल ही में हथियारों की बिक्री किए जाने की घोषणा के जवाब में 13 अमेरिकी कंपनियों और छह अधिकारियों पर बृहस्पतिवार को प्रतिबंध लगाने की घोषणा की थी, जिसके एक दिन बाद राष्ट्रपति ने यह बात कही। उन्होंने कहा, जैसा कि मैंने पहले भी कहा है, जब सत्तावादी देश एक साथ इकट्ठा होते हैं, तो लोकतांत्रिक देशों को वैश्विक और क्षेत्रीय स्थिरता व विकास सुनिश्चित करने के लिए एकजुट होना चाहिए।

उत्तरी कैलिफोर्निया में 7.0 तीव्रता का भूकंप, हल्की सुनामी की चेतावनी जारी

सैन फ्रांसिस्को (अमेरिका)। अमेरिका के उत्तरी कैलिफोर्निया के एक बड़े क्षेत्र में बृहस्पतिवार को 7.0 तीव्रता का भूकंप आया। भूकंप के बाद अमेरिका के पश्चिमी तट के निकट के इलाकों में रहने वाले 53 लाख लोगों के लिए हल्की सुनामी की चेतावनी जारी की गई। अमेरिकी भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण ने बताया कि भूकंप के झटके सुबह 10:44 बजे फर्नडेल के पश्चिम में महसूस किए गए। फर्नडेल तटीय हम्बोल्ट काउंटी का एक छोटा शहर है और ओरेगन सीमा से लगभग 209 किलोमीटर दूर है। इसका असर दक्षिण में सैन फ्रांसिस्को तक महसूस किया गया, जहां निवासियों ने कई सेकंड तक भूकंप के झटके महसूस किए। इसके बाद कई छोटे-छोटे झटके आए। भूकंप के कारण दुकानों की अलमारियां हिलने लगीं, बच्चे डेस्क के नीचे छिप गए और लोग घरों से बाहर निकल आए थे। हालांकि, भूकंप से किसी बड़ी क्षति या किसी के हताहत होने की तत्काल कोई रिपोर्ट नहीं है। सुनामी की चेतावनी लगभग एक घंटे तक प्रभावी रही। यह भूकंप आने के तुरंत बाद जारी की गई थी और इसने दायरे में कैलिफोर्निया के मोंटेरे बे के तट से लेकर ओरेगन तक लगभग 805 किलोमीटर के समुद्र तट को शामिल किया गया था। रेडवुड जंगल, खूबसूरत वादियों और तीन-काउंटी एमराल्ड ट्राएंगल की प्रसिद्ध मारिजुआना फसल के लिए मशहूर यह क्षेत्र 2022 में 6.4 तीव्रता के भूकंप से प्रभावित हुआ था। भूकंप विज्ञानी लूसी जोन्स ने सोशल मीडिया मंच ब्लूस्काई पर कहा कि कैलिफोर्निया का उत्तर-पश्चिमी भाग राज्य में भूकंप के लिहाज से सबसे संवेदनशील हिस्सा है क्योंकि यह वो जगह है जहां तीन टेक्टोनिक प्लेट मिलती है।

दुबई में एक आदर्श स्टॉपओवर के लिए गाइड

दुबई। दुबई एक साधारण ट्रांजिट को मिनीहॉलिडे में बदलने के लिए आदर्श जगह हैए जहां यात्री शहर के जीवन की जीवंतता में डूब सकते हैं। अपनी ग्लोबल कनेक्टिविटी और विविध आकर्षणों के साथ दुबई एक परफेक्ट स्टॉपओवर डेस्टिनेशनहै, चाहे आपके पास एक रात हो या कुछ दिन।अगर आपका दुबई में केवल छोटा स्टॉपओवर हैए तो आप इस समय का सबसे बेहतर उपयोग कर सकते हैं। दुबई में स्टॉपओवर जोड़ना बेहद आसान है। अगर आप एमिरेट्स के साथ उड़ान भर रहे हैं तो आप आसानी से दुबई स्टॉपओवर बुक कर सकते हैं। एमिरेट्स आपकी हर जरूरत का ख्याल रखेगाए जैसे एयरपोर्ट पर ग्रीटिंग से लेकर 24.घंटे का चेकइन टूरएक्सकर्सन और वीज़ा यदि आवश्यक हो। कुछ देशों में एमिरेट्स श्दुबई एक्सपीरियंसश्प्रोग्राम भी प्रदान करता हैए जो आपकी यात्रा को कस्टमाइज करने में मदद करता है। दुबई स्टॉपओवर चेकलिस्ट-यहां वे आवश्यक चीजें हैं जो आपको अपने स्टॉपओवर के लिए जाननी चाहिए। वीजा.फ्री एंट्रीरू दुबई 70 राष्ट्रीयताओं के लिए वीज़ा.फ्री एंट्रीप्रदान करता है। एमिरेट्स से यात्रा करने वालों को 96.घंटे का वीज़ा भी मिल सकता है। टूरिस्ट सिम कार्डरू दुबई इंटरनेशनल एयरपोर्ट डीएक्सबी पर आगंतुकों को मुफ्त सिम कार्डमिलता है, जिसमें 24 घंटे के लिए डेटा उपलब्ध होता है। दुबई मेट्रो- लगभग 90 किमी तक फैलीए पूरी तरह से ऑटोमेटेड दुबई मेट्रोशहर को देखने का एक कुशल तरीका है। यह डीएक्सबी और प्रमुख जगहों व मॉल्स तक पहुंच प्रदान करती है। दुबई स्टॉपओवर पासरू दुबई स्टॉपओवर पाससमय और पैसे बचाने के लिए कुछ सबसे प्रतिष्ठित आकर्षणए पर्यटन और क्रूज़ को प्रीपेड आकर्षण पास में जोड़ता है। उन लोगों के लिए बिल्कुल सही है जो एक छोटे से स्टॉपओवर के दौरान दुबई को और अधिक देखना चाहते हैंए आप 36 घंटों में घूमने के लिए दोए तीन या चार आकर्षण चुन सकते हैं। वयस्कों के लिए कीमतें 349 दिरहम और बच्चों ;तीन से 12 वर्ष की आयुद्ध के लिए 279 दिरहम से शुरू होती हैं। सिटी बस टूररू सिटी साइटसीइंग आगंतुकों को दुबई में एक शानदार हॉप ऑनए हॉप ऑफअनुभव प्रदान करता हैए जिसमें चुनने के लिए कई पैकेज हैं और टिकट 12 महीने के लिए वैध हैं। टैक्स.फ्री शॉपिंग, दुबई में खरीदारी पर पर्यटक 5 प्रतिशत वैट रिफंडका लाभ उठा सकते हैं।

अमेजन ने कई बिलियन गिफ्ट कार्ड्स बांटे

अमेजन। अमेजन पे ने घोषणा की कि उसने भारतीय ग्राहकों को एक बिलियन से अधिक गिफ्ट कार्ड्स सफलतापूर्वक वितरित किए है, जो भारतीय गिफ्ट कार्ड बाजार में इन कार्ड्स की बढ़ती लोकप्रियता को दर्शाता है। पाइन लैब्स द्वारा क्विक सिल्वर ब्रांड नाम के तहत और अमेजन पे इंडिया प्राइवेट लिमिटेड ;अमेजन पेद्ध के ब्रांड के साथ जारी किए गए इन गिफ्ट कार्ड्स की शुरुआत आर्थिक वर्ष 2014 में हुई थी। तब से अमेजन पे गिफ्ट कार्ड्स ने लगातार ग्राहकों को मूल्य प्रदान किया है और साल दर साल दो अंकों की वृद्धि दिखायी है।नेहा गुप्ता महात्मे,डायरेक्टर स्टोर्ड वैल्यू और गिफ्टिंग,अमेजन पे ने इस अवसर पर कहा कि हम अपने ग्राहकों के आभारी हैं जिन्होंने पिछले दशक में अमेजन पे गिफ्ट कार्ड्स को एक विश्वसनीय और पसंदीदा विकल्प बनाया। एक बिलियन से अधिक गिफ्ट कार्ड्स वितरित किए गए हैं और लाखों ग्राहकों ने सरल और सार्थक तरीके से उपहार देने की खुशी साझा की है। 2024 के अमेजन ग्रेट इंडियन फेस्टिवल के दौरान गिफ्ट कार्ड्स की खरीदारी में 40 प्रतिशत की वृद्धि हमारे ग्राहकों द्वारा दिखाए गए बढ़ते विश्वास और स्नेह को दर्शाती है।

भारतीय फिल्म निर्माता इजराइल में रचनात्मक सहयोग की संभावनाएं तलाश रहे हैं

यरुशलम। प्रमुख भारतीय फिल्म निर्माताओं के एक प्रतिनिधिमंडल ने इजराइल के मनोरंजन उद्योग के विभिन्न हितधारकों के साथ व्यापक विचार-विमर्श किया तथा दोनों देशों के सहयोग से बनने वाली परियोजनाओं और रचनात्मक क्षेत्र के विभिन्न पहलुओं में एक-दूसरे की क्षमताओं के उपयोग की संभावनाओं पर विचार-विमर्श किया। पांच सदस्ईय प्रतिनिधिमंडल में प्रोड्यूसर्स गिल्ड ऑफ इंडिया (पीजीआई) के अध्यक्ष नितिन तेज आहूजा, फिल्म निर्माता, अभिनेता एवं राहुल मित्रा फिल्म्स एंड ब्रांडस्मिथ मोशन पिक्चर्स के संस्थापक राहुल मित्रा, ढिशूम सिनेमा के सीईओ (मुख्य कार्यकारी अधिकारी) और सह-संस्थापक तुषार ढींगरा, आरआरआर पर अपने काम के लिए प्रसिद्ध वीएफएक्स विशेषज्ञ नवीन डैनियल इसाक और भारत के मनोरंजन उद्योग में परियोजना प्रबंधक जिगर ढींगरा शामिल थे। प्रतिनिधिमंडल ने पश्चिम एशिया में युद्ध के बीच इस महीने इजराइल में छह दिन बिताए। यात्रा संबंधी चेतावनियों को नजरअंदाज करते हुए प्रतिनिधिमंडल ने पूरे देश की यात्रा की और मनोरंजन उद्योग के बारे में जानकारी प्राप्त की, विभिन्न परिदृश्यों का अवलोकन किया तथा स्थानीय संस्कृति और इतिहास से रूबरू हुए। मित्रा ने पीटीआई-भाषा से कहा, इजराइल और भारत गहरी सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक समानताएं साझा करते हैं। इजराइल की रचनात्मक एवं मनोरंजन सामग्री को भारत और दुनिया भर में पसंद किया जाता है। सिनेमा में लोगों को जोड़ने की असाधारण क्षमता है और भारतीय फिल्म उद्योग दुनिया को आकर्षित करने के लिए तैयार है। हम लगातार नए स्थानों और नई कहानियों की तलाश में रहते हैं। उन्होंने कहा, मैं इजराइल की यात्रा पर आकर बहुत खुश हूं तथा फिल्म सह-निर्माण, ब्रांडिंग एवं कला से संबंधित अन्य क्षेत्रों में तालमेल और साझेदारी की संभावनाएं तलाश रहा हूं। इजराइल के एक अधिकारी ने कहा कि यह यात्रा इजराइल के विदेश मंत्रालय और प्रवासी मामलों के मंत्रालय के समर्थन और वित्त पोषण के साथ-साथ मुंबई स्थित इजराइली वाणिज्य दूतावास और नई दिल्ली स्थित दूतावास से संभव हो पाई, जो कठिन परिस्थितियों में सांस्कृतिक कूटनीति के लचीलेपन को दर्शाता है। इजराइल के विदेश मंत्रालय और प्रवासी मामलों के मंत्रालय द्वारा एक सम्मेलन भी आयोजित किया गया, जहां प्रतिनिधिमंडल ने संयुक्त परियोजनाओं पर सहयोग को बढ़ावा देने के लिए अग्रणी इजराइली निर्माण कंपनियों के साथ बातचीत की।

अमिताभ कापहला एआईपॉवर्ड इंटरैक्टिव अवतार पेश

ट्रांबे। आईडीएफसी फर्स्ट बैंक ने देश के सबसे प्रसिद्ध औरदिग्गज अभिनेता अमिताभ बच्चन का एआई.पॉवर्ड होलोग्राफिक डिजिटल अवतार पेश किया है। इसने ग्राहकों को खुद से जोड़ने और डिजिटल इनोवेशन के मामले में एक नई मिसाल कायम की है। इस होलोग्राफिक एक्सटेंडेड रियलिटी एचएक्सआर डिवाइस में टच क्षमता हैए जिससे यूज़र्स सीधे डिजिटल अवतार के साथ बातचीत कर सकते हैं। वर्तमान मे बच्चन जी के इस डिजिटल अवतार से ग्राहक बैंक की विभिन्न सेवाओं और उत्पादों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैंए जैसे कि जीरो फीस बैंकिंग, मासिक ब्याज क्रेडिट, मोबाइल बैंकिंग और इनोवेटिव करंट अकाउंट ब्रावो। आने वाले समय, बैंक इसमें अतिरिक्त उत्पादों की पेशकश भी शामिल करेगा। लॉन्च के मौके पर श्रीपद शिंद, हेड. बिज़नेस एक्सीलेंस और कॉर्पोरेट स्ट्रैटेजी,आईडीएफसी फर्स्ट बैंक ने कहा कि हम खुद को गर्वित महसूस कर रहे हैंए क्योंकि हम बैंकिंग इंडस्ट्री में पहले हैंए जिन्होंने इस एआई.पॉवर्ड होलोग्राफिक इनोवेशन को संभव बनाया है। इसके साथए हमने अपने ग्राहकों के लिए हमारी चुनिंदा शाखाओं में बातचीत का एक पूरी तरह से नया तरीका पेश किया हैए जिससे बैंकिंग की परिभाषा बेहद सरलए तेज और अधिक रोचक हो गई है। विंग कमांडर रमेश पुलपाका सीईओ और डायरेक्टर. एबी कॉर्प लिमिटेडए के साथ इस अद्वितीय अवधारणा को साकार करने के लिए आइकॉन्ज़ के साथ हमारी यात्रा अद्भुत रही हैए और मुझे खुशी है कि आईडीएफसी फर्स्ट बैंक ने इस अनूठी यात्रा में श्री अमिताभ बच्चन के साथ भागीदारी की है।

पाकिस्तान में अहमदिया अल्पसंख्यक समुदाय के एक व्यापारी की हत्या

लाहौर। पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में अहमदिया अल्पसंख्यक समुदाय के एक व्यापारी की कथित तौर पर उनकी आस्था के कारण कुल्हाड़ी से हमला कर हत्या कर दी गई। पुलिस ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। पुलिस के अनुसार 40 वर्षीय तैय्यब अहमद लाहौर से लगभग 275 किलोमीटर दूर रावलपिंडी शहर मे अपने भाई की दुकान पर मौजूद थे, जब एक अज्ञात व्यक्ति ने उन पर कुल्हाड़ी से हमला कर दिया जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गए। पुलिस ने बताया कि अहमद को अस्पताल ले जाया गया जहां उनकी मौत हो गई। पुलिस ने शुरूआती जांच मे कहा कि ऐसा लगता है कि अहमद की हत्या उसकी आस्था के कारण की गई है।

बेलारूस को सुरक्षा गारंटी देने वाले समझौते पर हस्ताक्षर करेंगे पुतिन

मास्को। रूस के सबसे करीबी सहयोगी बेलारूस को सुरक्षा की गारंटी देने वाली संधि पर हस्ताक्षर करने के लिए राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने शुक्रवार को पड़ोसी देश का दौरा किया। इस दस्तावेज पर हस्ताक्षर की योजना रूस के परमाणु सिद्धांत के संशोधित संस्करण के प्रकाशन के बाद बनाई गई है, जिसके तहत यूक्रेन के साथ संघर्ष को लेकर रूस और पश्चिमी देशो के मध्य बढे तनाव के बीच बेलारूस को रूसी परमाणु क्षेत्र के अंतर्गत रखा गया है। पुतिन ने बेलारूस के राष्ट्रपति अलेक्जेंडर लुकाशेंको की मौजूदगी मे इस बात पर जोर दिया कि नए दस्तावेज मे (किसी भी) आक्रमण के जवाब मे बेलारूस में तैनात रूसी सामरिक परमाणु हथियारो के संभावित उपयोग को शामिल किया गया है।

संचार व्यवस्था में अड़चन से ब्रिटेन में रेल सेवा प्रभावित

लंदन। ब्रिटेन मे शुक्रवार को रेल यात्रियो को परेशानी का सामना करना पड़ा, क्योंकि देश भर मे चालकों और सिग्नल कर्मियों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले रेडियो सिस्टम मे खराबी के कारण पूरे नेटवर्क मे ट्रेन रद्द करनी पड़ी। ट्रेन संचालन कंपनियों का प्रतिनिधित्व करने वाली नेशनल रेल के अनुसार, सुबह के व्यस्त समय के दौरान हुई इस समस्या के कारण पूरे ब्रिटेन में ट्रेन सेवा प्रभावित हुई तथा कई ट्रेन को रद्द करना पड़ा। प्रभावित लाइन मे लंदन के हीथ्रो हवाई अड्डे के लिए एलिजाबेथ लाइन और राजधानी के दूसरे सबसे बड़े हवाई अड्डे के लिए गैटविक एक्सप्रेस शामिल है। नेशनल रेल ने कहा कि गड़बड़ी से मुख्य रूप से ऐसी ट्रेन प्रभावित हुईं, जो अपनी यात्रा के आरंभ मे डिपो से निकलने की तैयारी कर रही होती है, लेकिन एक बार ट्रेन चलने के बाद सामान्य रूप से चल सकती है।

जीरोबी ने वॉटर मैनेजमेंट पर दिया ध्यान

इंडियाना। 1986 से वॉटर प्यूरीफिकेशन टेक्नोलॉजी में प्रमुख ज़ीरोबी ने होम वॉटर सॉल्यूशंस के अपने अनुभव से आगे बढ़कर अब कमर्शियल वॉटर सॉल्यूशंस के क्षेत्र में कदम रखा है। इस रणनीतिक विस्तार के साथ ज़ीरोबी ने आवासीय और व्यावसायिक जरूरतों के लिए उन्नत वॉटर मैनेजमेंट सॉल्यूशंस प्रदान करने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराई है और जल शुद्धिकरण उद्योग में अपनी प्रमुख स्थिति को और मजबूत किया है। ज़ीरोबी के मार्केटिंग और प्रोडक्ट डेवलपमेंट हेड अभिषेक सिंह ने कहा होम वॉटर सॉल्यूशंस से कमर्शियल वॉटर सॉल्यूशंस तक का हमारा विस्तार सिर्फ सेवाओं का विस्तार नहीं है बल्कि एक होलिस्टिक वॉटर सॉल्यूशन प्रोवाइडर बनने की हमारी प्रतिबद्धता का प्रतीक है। 1986 में आयन एक्सचेंज के हिस्से के रूप में शुरू होने के बाद सेए हम वॉटर प्यूरीफिकेशन में इनोवेशन और एक्सेसिबिलिटी पर केंद्रित हैं। आज हम सिर्फ प्रोडक्ट बेचने तक सीमित नहीं हैंए बल्कि शुद्ध पानी को मौलिक मानव अधिकार बनाने के अपने वादे को पूरा कर रहे हैं।

ईरान ने अंतरिक्ष में सफल प्रक्षेपण करने का दावा किया

मनामा (बहरीन)। ईरान ने शुक्रवार को कहा कि उसने अंतरिक्ष में सफल प्रक्षेपण किया है जो उसके उस नवीनतम प्रक्षेपण कार्यक्रम का हिस्सा है, जिसकी पश्चिमी देश आलोचना करते हैं। पश्चिमी देशों का आरोप है कि इस कार्यक्रम से तेहरान के बैलिस्टिक मिसाइल कार्यक्रम को बढ़ावा मिल रहा है। ईरान ने उपग्रह ले जाने में सक्षम अपने सिमोर्ग यान के जरिए यह प्रक्षेपण किया। इससे पहले इस यान से की गई प्रक्षेपण की कई कोशिशें विफल रही हैं। यह प्रक्षेपण ईरान के सेमनान प्रांत में स्थित इमाम खुमैनी स्पेसपोर्ट से किया गया। ईरान ने सिमोर्ग के 300 किलोग्राम वजन का पेलोड अंतरिक्ष में भेजा है जो उसके पूर्ववर्ती सफल प्रक्षेपणों से कहीं अधिक भारी है। प्रक्षेपण के सफल रहने की स्वतंत्र रूप से तत्काल पुष्टि नहीं की जा सकी। वहीं, अमेरिकी सेना ने भी घटनाक्रम पर टिप्पणी करने का अनुरोध किए जाने पर तत्काल कोई प्रतिक्रिया नहीं व्यक्त की। यह घोषणा ऐसे समय में की गई है जब गाजा पट्टी में हमास के खिलाफ इजराइल के जारी युद्ध तथा लेबनान में कमजोर युद्ध विराम समझौते के कारण पश्चिम एशिया में तनाव बढ़ रहा है।

इजराइल के हवाई हमले में लेबनान सीरिया के बीच सड़क संपर्क कटा

भाषा। यरुशलम

गाजा में संघर्ष विराम वार्ता बहाल हुई: हमास नेता

इस्तांबुल। हमास के एक नेता ने बृहस्पतिवार को कहा कि अंतरराष्ट्रीय मध्यस्थों ने गाजा में युद्ध विराम के लिए हमास और इजराइल के साथ बातचीत फिर से शुरू कर दी है और 14 महीने से जारी युद्ध को समाप्त करने केलिए समझौता हो जाने की उम्मीद है।कतर ने इजराइल और हमास के बीच युद्धविराम को लेकर बातचीत आगे नही बढ़ पाने से निराश होकर मिस्र और अमेरिका के मध्यस्थो के साथ वार्ता को पिछले महीने निलंबित कर दिया था। हमास के नेता बासेम नैम ने तुर्किए में एसोसिएटेड प्रेस को बताया कि युद्ध को समाप्त करने, गाजा से बंधकों को रिहा करने और इजराइल में फलस्तीनी कैदियों को मुक्त करने के प्रयासो को हाल के दिनों में पुनः सक्रिय किया गया है। वार्ता की जानकारी रखने वाले एक अन्य अधिकारी ने अपनी पहचान गोपनीय रखने की शर्त पर कतर के मध्यस्थों के फिर से बातचीत शुरू करने की पुष्टि की। वार्ता बाधित होने के बाद से वैश्विक और क्षेत्रीय परिदृश्य में उल्लेखनीय बदलाव हुए है। डोनाल्ड ट्रंप ने अमेरिका के राष्ट्रपति पद का चुनाव जीत लिया है और पिछले सप्ताह लेबनान में इजराइल और हमास के सहयोगी हिजबुल्ला के बीच युद्ध विराम की घोषणा की गई।

इजराइल के हवाई हमले में लेबनान और सीरिया के बीच एक प्रमुख सीमा चौकी पर सड़क संपर्क कट गया है। इसे कुछ दिन पहले ही फिर से खोला गया था। लेबनान की नेशनल न्यूज एजेंसी की खबर में यह जानकारी दी गई। देश के उत्तर में अरीदा सीमा पर हवाई हमले से भारी नुकसान हुआ और सड़क संपर्क कट गया। सीरिया में सरकार समर्थक दैनिक समाचार पत्र अल-वतन की खबर के अनुसार, शुक्रवार तड़के हुए हवाई हमले के कारण सीमा चौकी पर स्थित मार्ग बंद कर दिया गया है। खबरों के अनुसार, सीरियाई विद्रोही शुक्रवार तड़के होम्स शहर के ठीक उत्तर में स्थित दो कस्बों में घुस गए। इस तरह, वे सीरिया के तीसरे सबसे बड़े शहर के करीब आ गए। इस बीच, हमास के एक अधिकारी ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय मध्यस्थों ने गाजा में संघर्ष विराम के लिए चरमपंथी समूह और इजराइल के साथ बातचीत फिर से शुरू कर दी है, और उन्हें उम्मीद है कि 14 महीने से जारी युद्ध को समाप्त करने के लिए समझौता हो जाएगा। हमास के खिलाफ इजराइल का युद्ध उस वक्त शुरू हुआ था जब अक्टूबर 2023 में हमास के नेतृत्व वाले चरमपंथियों ने दक्षिणी इजराइल में हमला किया था, जिसमें लगभग 1,200 लोग मारे गए और लगभग 250 लोगों को बंधक बना लिया गया। इजराइल की सेना ने कहा कि लड़ाकू विमानों ने लेबनान और सीरिया के बीच स्थित सीमा पर हमला किया। पिछले दो महीनों में, इजराइल के हवाई हमलों के कारण लेबनान और सीरिया के बीच कई सीमा चौकियों को बंद कर दिया गया है। इस बीच, ईरान ने शुक्रवार को कहा कि उसने अंतरिक्ष में सफल प्रक्षेपण किया है जो उसके उस नवीनतम प्रक्षेपण कार्यक्रम का हिस्सा है, जिसकी पश्चिमी देश आलोचना करते हैं। पश्चिमी देशों का आरोप है कि इस कार्यक्रम से तेहरान के बैलिस्टिक मिसाइल कार्यक्रम को बढ़ावा मिल रहा है। ईरान ने उपग्रह ले जाने में सक्षम अपने सिमोर्ग यान के जरिए यह प्रक्षेपण किया। इससे पहले इस यान से की गई प्रक्षेपण की कई कोशिशें विफल रही हैं। यह प्रक्षेपण ईरान के सेमनान प्रांत में स्थित इमाम खुमैनी स्पेसपोर्ट से किया गया।

चीन से टकराव के बीच अमेरिका, जापान, फिलीपीन के बलों ने दक्षिण चीन सागर में संयुक्त गश्त की

मनीला (फिलीपीन)। विवादित दक्षिण चीन सागर में शुक्रवार को एक संयुक्त गश्त में अमेरिका ने एक टोही विमान तैनात किया जबकि जापान और फिलीपीन ने नौसेना के जहाज भेजे। दो दिन पहले ही मित्र देशों की सेनाओं ने फिलीपीन के गश्ती जहाजों के खिलाफ चीनी तट रक्षक जहाजों की कार्वाई की निंदा की थी। अमेरिका हिंद-प्रशांत कमान ने कहा कि फिलीपीन के विशेष आर्थिक क्षेत्र में मित्र देशों और सहयोगियों द्वारा नौवहन और ऊपर उड़ान की स्वतंत्रता के अधिकार को बनाए रखने तथा समुद्र एवं अंतरराष्ट्रीय हवाई क्षेत्र के अन्य वैध उपयोगों के लिए संयुक्त गश्त आयोजित की गई थी। फिलीपीन के दो सुरक्षा अधिकारियों ने कहा कि गश्ती स्कारबोरो शोल से लगभग 40 समुद्री मील (74 किलोमीटर) की दूरी पर आयोजित की गई थी, जो उत्तर-पश्चिमी फिलीपीन से दूर बीजिंग और मनीला के बीच विवाद वाला मछली पकड़ने का क्षेत्र है। दोनों अधिकारियों ने नाम नहीं जाहिर करने की शर्त पर बात की क्योंकि उनके पास इस तरह के विवरणों पर सार्वजनिक रूप से चर्चा करने का अधिकार नहीं है।

दक्षिण कोरिया की सत्तारूढ़ पार्टी के प्रमुख ने यून की शक्तियों को निलंबित करने का समर्थन किया

भाषा। सियोल (दक्षिण कोरिया)

दक्षिण कोरिया की सत्तारूढ़ पार्टी पीपुल पावर पार्टी (पीपीपी) के प्रमुख ने मार्शल लॉ लागू करने के लिए शुक्रवार को राष्ट्रपति यून सुक एओल की संवैधानिक शक्तियों को निलंबित करने का समर्थन किया, जिससे यून के खिलाफ महाभियोग की संभावना बढ़ गई है। यून ने इस सप्ताह मार्शल लॉ लागू करने की घोषणा की थी लेकिन सांसदों ने मार्शल लॉ हटाने के पक्ष में मतदान किया जिसके कारण यह सिर्फ छह घंटे तक प्रभावी रहा था। विपक्षी दलों ने यून द्वारा लगाए गए अल्पकालिक मार्शल लॉ को असंवैधानिक, अवैध विद्रोह या तख्तापलट करार दिया और वे शनिवार को यून पर महाभियोग के लिए संसद में मतदान के लिए दबाव बना रहे हैं। हालांकि, महाभियोग प्रस्ताव पारित करने को लेकर आवश्यक दो-तिहाई बहुमत प्राप्त करने के लिए उन्हें सत्तारूढ़ पार्टी के कुछ सदस्यों के समर्थन की आवश्यकता होगी। यून द्वारा रात के समय लागू किए गए मार्शल लॉ के आदेश ने दक्षिण कोरिया की राजनीति में उथल-पुथल मचा दी है तथा जापान एवं अमेरिका सहित पड़ोसी सहयोगी लोकतांत्रिक देशों के बीच इस बात को लेकर चिंता बढ़ गई है, क्योंकि राजनीतिक संकट का सामना कर रहे देश के नेता को पद से हटाया जा सकता है।

भारत का विकास अमेरिकी निवेशकों को अवसर प्रदान करता है: सुब्रमण्यन

वाशिंगटन। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) में भारत के कार्यकारी निदेशक डॉ. के वी सुब्रमण्यन ने बृहस्पतिवार को कहा कि भारत के 2047 तक 55 लाख करोड़ डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने की संभावना है और उसका विकास अमेरिकी निवेशकों के लिए अभूतपूर्व अवसर प्रदान करता है। सुब्रमण्यन ने यह बात अपनी नई पुस्तक इंडिया एट द रेट 100: एनविजनिंग टुमॉरोज इकोनॉमिक पावरहाउस के विमोचन के दौरान कही। उन्होंने यहां अमेरिका भारत रणनीतिक एवं भागीदारी मंच द्वारा आयोजित कार्यक्रम में कहा, अमेरिकी निवेशकों के लिए जो अवसर उपलब्ध हैं, वे वास्तव में अभूतपूर्व हैं....मुझे नहीं लगता कि कोई अन्य अर्थव्यवस्था अगले 20 से 25 साल में इस तरह के लाभ दे पाएगी। शीर्ष अर्थशास्त्री ने कहा कि भारत पर नजर रखने वाले निवेशकों के पास वास्तव में अपने पैसे को दोगुना नहीं बल्कि तिगुना करने का अवसर है। भारत के मुख्य आर्थिक सलाहकार रह चुके सुब्रमण्यन ने कहा, उनके पास अपने पैसे को 15 से 20 गुना बढ़ाने का अवसर है। सुब्रमण्यन ने अपनी पुस्तक में बताया है कि किस प्रकार भारत में 25 साल से भी कम समय में 55 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने की क्षमता है तथा इसके लिए उसे अर्थव्यवस्था में पुरजोर सुधार करना होगा तथा 2014 के बाद क्रियान्वित की गई ठोस नीतियों पर दोगुना जोर देना होगा।

हवाई में दुनिया के सबसे उम्रदराज जंगली पक्षी ने 74 साल की उम्र में अंडा दिया

होनोलूलू (अमेरिका)। दुनिया के सबसे उम्रदराज, ज्ञात जंगली पक्षी ने लगभग 74 साल की उम्र में अंडा दिया है, जो चार साल में उसका पहला अंडा है। अमेरिकी वन्यजीव अधिकारियों ने यह जानकारी दी। अमेरिकी प्रशांत क्षेत्रीय मत्स्य एवं वन्यजीव सेवा ने इस सप्ताह फेसबुक पर एक पोस्ट में कहा कि विजडम नामक लंबे पंखों वाला समुद्री पक्षी लेसन अल्बाट्रॉस हवाई द्वीपसमूह के उत्तर-पश्चिमी किनारे पर स्थित मिडवे एटोल राष्ट्रीय वन्यजीव अभयारण्य में वापस लौटा है और उसने जो अंडा दिया है, उसके बारे में विशेषज्ञों का अनुमान है कि यह उसका 60वां अंडा हो सकता है। विशेषज्ञों ने बताया कि विजडम और उसका नर साथी अकेकामाई 2006 से ही अंडे देने और सेने के लिए प्रशांत महासागर के एटोल पर लौटे थे। लेसन अल्बाट्रॉस प्रजाति के पक्षी हर साल एक अंडा देते हैं। हालांकि, अकेकामाई को कई सालों से नहीं देखा गया है और अधिकारियों का अनुमान है कि पिछले हफ्ते वापस लौटने पर विजडम ने दूसरे नर के साथ मेलजोल बढ़ाना शुरू कर दिया।

फॉक्स नेशन के कार्यक्रम में ट्रंप को पैट्रियॉट ऑफ द ईयर पुरस्कार

भाषा। ग्रीनवेल (अमेरिका)

डोनाल्ड ट्रंप ने जॉर्जिया के पूर्व सीनेटर डेविड पर्ड्यू को चीन का राजदूत नामित किया

वाशिंगटन। अमेरिका के निर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने बृहस्पतिवार को कहा कि उन्होने चीन मे अगले राजदूत के रूप मे जॉर्जिया के पूर्व सीनेटर डेविड पर्ड्यू को नामित किया है। कारोबार क्षेत्र से राजनीति में आए पर्ड्यू को अमेरिका के सबसे शक्तिशाली आर्थिक और सैन्य प्रतिद्वंद्वी चीन में ट्रंप प्रशासन का राजदूत बनाया जाएगा। ट्रंप ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट मे कहा कि पर्ड्यू चीन के साथ हमारे रिश्ते को बेहतर बनाने मे मदद करने के लिए बहुमूल्य विशेषज्ञता रखते है। पर्ड्यू चार साल पहले डेमोक्रेटिक पार्टी के जॉन ओसॉफ से अपनी सीनेट सीट हार गए थे और जॉर्जिया के गवर्नर ब्रायन केम्प के खिलाफ 2022 के प्राइमरी मे असफल रहे थे। जॉर्जिया के गवर्नर के लिए मुकाबले के दौरान पर्ड्यू ने चुनावी धोखाधड़ी के बारे में ट्रंप के झूठ को उजागर किया। हालांकि, गवर्नर के चुनाव मे पर्ड्यू को कामयाबी नही मिली।

अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने वीडियो स्ट्रीमिंग सेवा फॉक्स नेशन द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में पैट्रियॉट ऑफ द ईयर (वर्ष का सबसे बड़ा देशभक्त) पुरस्कार स्वीकार करते हुए कहा कि उन्होंने पिछले दो सप्ताह में अमेरिका के निवर्तमान राष्ट्रपति जो बाइडन के पूरे कार्यकाल में किए गए कार्यों से अधिक काम कर लिया है।चुनाव जीतने के बाद से ट्रंप अधिकतर समय फ्लोरिडा स्थित अपने रिजॉर्ट मार-ए-लागो में ही रहकर अपने आगामी प्रशासन के मंत्रियों के नामों की घोषणा कर रहे हैं लेकिन वह इस वार्षिक पुरस्कार समारोह में भाग लेने के लिए बृहस्पतिवार को न्यूयॉर्क के लॉन्ग आइलैंड गए। ट्रंप ने टिल्स सेंटर फॉर द परफॉर्मिंग आर्ट्स में भीड़ को संबोधित करते हुए कहा, मुझे लगता है कि आपने पिछले दो सप्ताह में पिछले चार वर्षों की तुलना से भी अधिक काम होता देखा है। ट्रंप ने कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो और मेक्सिको की राष्ट्रपति क्लाउडिया शिनबॉम के साथ हुई अपनी बातचीत का भी उल्लेख किया। ट्रंप ने अमेरिका के इन दो शीर्ष व्यापारिक साझेदारों को धमकी दी है कि यदि उन्होंने अवैध रूप से सीमा पार करने की घटनाओं और नशीले पदार्थों के प्रवाह से निपटने के लिए और अधिक कदम नहीं उठाए, तो वे सभी आयातित वस्तुओं पर 25 प्रतिशत शुल्क लगा देंगे। ट्रंप ने ट्रूडो की मार-ए-लागो यात्रा के संदर्भ में कहा, जस्टिन उड़ान भरकर सीधे आए। ट्रंप के इस बयान पर कुछ लोगों ने 51 का नारा लगाया।

रूस अपने हितों की रक्षा के लिए सभी साधनों का उपयोग करेगा : लावरोव

मॉस्को। रूस के शीर्ष राजनयिक ने फॉक्स न्यूज के पूर्व होस्ट (मेजबान) टकर कार्लसन के साथ एक साक्षात्कार में कहा कि रूस अमेरिका के साथ युद्ध नहीं चाहता है, लेकिन अपने हितों की रक्षा के लिए वह सभी साधनों का उपयोग करेगा।सर्गेई लावरोव ने तर्क दिया कि रूस और अमेरिका के बीच आधिकारिक तौर पर युद्ध नहीं चल रहा है, लेकिन अमेरिका द्वारा यूक्रेन को रूसी क्षेत्र पर हमले के लिए लंबी दूरी की अमेरिकी मिसाइलों का उपयोग करने की अनुमति देने से विवाद अत्यधिक बढ़ सकता है। यह स्पष्ट है कि यूक्रेन के सैनिक अमेरिकी सैनिकों की प्रत्यक्ष भागीदारी के बिना लंबी दूरी के आधुनिक हथियारों के साथ वह सब नहीं कर पाएंगे जो वे कर रहे हैं। यह खतरनाक है, इसमें कोई संदेह नहीं है। पश्चिमी देशों की यह धारणा कि रूस की सीमा रेखाओं को बार-बार बदला जा सकता है, एक बहुत गंभीर गलती है। दुनिया में सबसे लंबे समय तक विदेश मंत्री रहने वाले हाल में रूस द्वारा यूक्रेन पर ओरेशनिक नामक एक नई हाइपरसोनिक मध्यम दूरी की बैलिस्टिक मिसाइल से किया गया।

स्टार्क की मुट्ठी में आया भारत, 180 रन पर समेटा

● देसरा टेस्ट : पहली पारी में पारी में एक विकेट पर 86 रन बनाकर ऑस्ट्रेलिया मजबूत

भाषा। एडीलेड

अनुभवी तेज गेंदबाज मिशेल स्टार्क के करियर की सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी से भारत को 180 रन पर ढेर करने के बाद ऑस्ट्रेलिया ने दिन-रात्रि के दूसरे क्रिकेट टेस्ट के पहले दिन शुक्रवार को यहां पहली पारी में एक विकेट पर 86 रन बनाकर अपना पलड़ा भारी रखा।मेजबान टीम अब भारत के पहली पारी के स्कोर से सिर्फ 94 रन से पीछे है जबकि उसके नौ विकेट शेष हैं। ऑस्ट्रेलिया ने सिर्फ उस्मान ख्वाजा (13) का विकेट गंवाया है जिन्हें जसप्रीत बुमराह (13 रन पर एक विकेट) ने स्लिप में कप्तान रोहित शर्मा के हाथों कैच कराया।स्टंप के समय सलामी बल्लेबाज नाथन मैकस्वीनी 38 जबकि मार्नस लाबुशेन 20 रन बनाकर खेल रहे थे। दोनों दूसरे विकेट के लिए 62 रन जोड़ चुके हैं।स्टार्क (48 रन पर छह विकेट) ने इससे पहले गुलाबी गेंद से पहली बार पारी में पांच या इससे अधिक विकेट चटकाए जिससे भारतीय टीम सिर्फ 44.1 ओवर में 180 रन पर ढेर हो गई। उन्हें कप्तान पैट कमिंस (41 रन पर दो विकेट) और स्कॉट बोलैंड (54 रन पर दो विकेट) का अच्छा साथ मिला जिन्होंने दो-दो विकेट चटकाए।भारतीय टीम नितीश कुमार रेड्डी (54 गेंद में 42 रन, तीन छक्के, तीन चौके) की आक्रामक पारी की बदौलत 150 रन के आंकड़े को पार कर पाई। सलामी बल्लेबाज लोकेश राहुल (37) और शुभमन गिल (31) ने अच्छी शुरुआत के बाद विकेट गंवाए। ऑस्ट्रेलिया को ख्वाजा और मैकस्वीनी की जोड़ी ने सतर्क शुरुआत दिलाई। दोनों ने 10 ओवर तक ऑस्ट्रेलिया को झटका नहीं लगने दिया और 22 रन जोड़े। मैकस्वीनी सातवें ओवर में भाग्यशाली रहे जब तीन रन के निजी स्कोर पर बुमराह की गेंद पर उनका कैच छूट गया। बुमराह की गेंद उनके बल्ले का किनारा लेकर स्लिप की ओर जा रही थी लेकिन

विकेटकीपर ऋषभ पंत बीच में कूद गए और गेंद उनके हाथ से लगकर छिटक गई। बुमराह ने उछाल लेती गेंद पर ख्वाजा को स्लिप में रोहित के हाथों कैच कराकर भारत को पहली सफलता दिलाई। मैकस्वीनी और लाबुशेन ने इसके बाद मोर्चा संभाला और दिन का खेल खत्म होने तक ऑस्ट्रेलिया को और झटके नहीं लगने दिए। इस दौरान दोनों बल्लेबाजों ने कुछ आकर्षक शॉट खेले जिसमें मैकस्वीनी के नितीश पर जड़े लगातार दो चौके भी शामिल रहे। ऑस्ट्रेलिया की पारी के दौरान दो बार लाइट टावर की बत्ती गुल हुई लेकिन इसके कारण अधिक विलंब नहीं हुआ। इससे पहले ऑस्ट्रेलिया ने पहले सत्र में 82 रन पर चार विकेट हासिल करने के बाद दूसरे सत्र में 98 रन पर छह विकेट चटकाकर मेहमान टीम की पारी का अंत किया। दूसरे सत्र के अपने दूसरे ही ओवर में बोलैंड ने अंदर आती गेंद पर रोहित (23 गेंद में तीन रन) को पगबाधा किया जो छह साल के बाद मध्यक्रम में खेल रहे थे। पंत (35 गेंद में 21 रन) ने एक बार फिर आक्रामक तेवर दिखाए लेकिन कमिंस की बाउंसर पर लाबुशेन को आसान कैच दे बैठे जिससे भारत का स्कोर छह विकेट पर 109 रन हो गया।

स्कोरबोर्ड

भारत पहली पारी: जायसवाल पगबाधा को स्टार्क 00, राहुल का मैकस्वीनी बो स्टार्क 37, गिल पगबाधा बो बोलैंड 31, कोहली का स्मिथ बो स्टार्क 07,पंत का लाबुशेन बो कमिंस 21, रोहित पगबाधा बो बोलैंड 03,रेड्डी का हेड बो स्टार्क 42, अश्विन पगबाधा बो स्टार्क 22,राणा बो स्टार्क 00, बुमराह का ख्वाजा बो कमिंस 00, सिराज नाबाद 04, **अतिरिक्त:** 13, कुल: 44.1 ओवर मे सभी विकेट खोकर: 180 रन, **विकेट पतन:** 1-0, 2-69, 3-77, 4-81, 5-87, 6-109, 7-141, 8-141, 9-176, गेंदबाजी: स्टार्क 14.1-2-48-6, कमिंस 12-4-41-2, बोलैंड 13-0-54-2, लियोन 1-0-6-0, मार्श 4-0-26-0

ऑस्ट्रेलिया पहली पारी: ख्वाजा का रोहित बो बुमराह 13,मैकस्वीनी खेल रहे है 38, लाबुशेन खेल रहे है 20, **अतिरिक्त:** 15, **कुल:** 33 ओवर में एक विकेट पर: 86 रन, विकेट पतन: 1-24, **गेंदबाजी:** बुमराह 11-4-13-1,सिराज 10-3-29-0, राणा 8-2-18-0, रेड्डी 3-1-12-0, अश्विन 1-1-0-0

ऑफ स्टंप के बाहर कमजोरी का हल ढूंढने में विफलता से कोहली का टेस्ट औसत गिराः मांजरेकर

एडीलेड। भारत के पूर्व बल्लेबाज संजय मांजरेकर का मानना है कि दिग्गज बल्लेबाज विराट कोहली की ऑफ स्टंप के बाहर अपनी कमजोरी को दूर करने का तरीका नहीं तलाशने की जिद के कारण उनका बल्लेबाजी औसत 50 से घटकर 48.13 पर आ गया है। कोहली ने बॉर्डर-गावस्कर श्रृंखला में पर्थ में खेले गए शुरुआती टेस्ट में शतक लगाकर खेल के पारंपरिक प्रारूप में लंबे समय से चले आ रहे शतकों के सूखे को खत्म किया था हालांकि शुक्रवार को यहां शुरू हुए दूसरे टेस्ट में अपनी लय बरकरार नहीं रख सके और सात रन पर आउट हो गए। कोहली बाएं हाथ के तेज गेंदबाज मिचेल स्टार्क की ऑफ स्टंप के बाहर उछाल लेती गेंद पर बल्ला अड़ा कर स्लिप में स्टीव स्मिथ को कैच दे बैठे। कोहली के आउट होने के बाद मांजरेकर ने ट्विटर पर लिखा, विराट का औसत अब 48 के आसपास पहुंचने का एक महत्वपूर्ण कारण ऑफ स्टंप के बाहर की

कमजोरी है। इससे भी बड़ी बात यह है कि वह इससे निपटने के लिए कोई अन्य तरीका न अपनाने की जिद पर अड़े हैं। कुछ साल पहले तक टेस्ट में कोहली का औसत 54-55 के आसपास था लेकिन लंबे समय तक बड़ी पारी खेलने में विफल रहने के कारण 2022 में उनका औसत 50 के नीचे गिर गया था। ऑस्ट्रेलिया दौरे से पहले कोहली ने न्यूजीलैंड के खिलाफ तीन मैचों की घरेलू श्रृंखला में 15.50 की औसत से सिर्फ 93 रन बनाए थे।

ब्रूक का शतक, न्यूजीलैंड के खिलाफ इंग्लैंड का पलड़ा भारी

वेलिंग्टन। हैरी ब्रूक के आठवें टेस्ट शतक से इंग्लैंड ने न्यूजीलैंड के खिलाफ दूसरे क्रिकेट टेस्ट के पहले दिन शुक्रवार को यहां अपना पलड़ा भारी रखा।ब्रूक ने 115 गेंद में 11 चौकों और पांच छक्कों की मदद से 123 रन की पारी खेली। उन्होंने ओली पोप (66) के साथ पांचवें विकेट के लिए 174 रन की साझेदारी भी की जिससे 43 रन पर चार विकेट गंवाने के बावजूद इंग्लैंड की टीम 280 रन बनाने में सफल रही। न्यूजीलैंड ने इसके जवाब में दिन का खेल खत्म होने तक 86 रन तक पांच विकेट गंवा दिए। स्टंप के समय टॉम ब्लंडेल सात रन बनाकर खेल रहे थे जबकि रात्रि प्रहरी विल ओ रोर्के ने अभी खाता नहीं खोला है।न्यूजीलैंड की टीम अब भी 194 रन से पीछे है जबकि उसके पांच विकेट बचे हैं।ब्रूक ने पहले टेस्ट में भी इंग्लैंड की जीत में अहम भूमिका निभाई थी। उन्होंने 171 रन की पारी खेलकर टीम की पहली पारी में बढ़त दिलाई थी जबकि इंग्लैंड 45 रन पर तीन विकेट गंवाकर संकट में था।शुक्रवार को बेसिन रिजर्व में शुरुआती घंटे में न्यूजीलैंड के तेज गेंदबाजों का दबदबा रहा जिससे मेहमान टीम ने 26 रन तक तीन विकेट गंवा दिए।

सिल्वा ने जय की जगह एसीसी अध्यक्ष पद संभाला

दुबई। श्रीलंका के शम्मी सिल्वा ने एशियाई क्रिकेट परिषद (एसीसी) के अध्यक्ष का पद संभाल लिया है। उन्होंने भारत के जय शाह का स्थान लिया है, जो हाल ही मे अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) के अध्यक्ष बने हैं। शाह ने एसीसी अध्यक्ष के रूप मे तीन कार्यकाल के बाद पद खाली कर दिया था। यह एसीसी मे सिल्वा की पहली भूमिका नही होगी। वह पहले इस संस्था की वित्त और विपणन समिति के अध्यक्ष के रूप मे कार्य कर चुके है।सिल्वा ने यहां जारी बयान मे कहा, एशियाई क्रिकेट परिषद का नेतृत्व करना एक बड़ा सम्मान है।

तिजानी नोस्लिन की हैट्रिक से लाजियो ने नेपोली को 3-1 से हराया

रोम। लाजियो ने तिजानी नोस्लिन की हैट्रिक की मदद से सिरी ए मे शीर्ष पर चल रहे नेपोली को 3-1 से हारकर इटैलियन कप फुटबॉल टूर्नामेंट से बाहर कर दिया। नीदरलैंड के फारवर्ड नोस्लिन ने बृहस्पतिवार को स्टेडियो ओलंपिको में 32वें, 41वें और 50वें मिनट मे गोल करके लाजियो को क्वार्टर फाइनल में पहुंचाया। जियोवानी शिमोन ने नेपोली की ओर से मैच का एकमात्र गोल किया।दोनो टीम अब रविवार को सिरी ए मे भिड़ेगी। नेपोली ने लीग में एक अंक की बढ़त बना रखी है और पांचवें स्थान पर मौजूद लाजियो से चार अंक आगे है।

ईपीएल: बोर्नेमाउथ ने टोटेनहैम को हराया

लंदन। टोटेनहैम को बृहस्पतिवार को यहां इंग्लिश प्रीमियर लीग फुटबॉल मे बोर्नेमाउथ के खिलाफ 0-1 की शिकस्त का सामना करना पड़ा।मैच का एकमात्र गोल डीन हुइसेन ने 17वें मिनट में किया।टोटेनहैम इस तरह मैनचेस्टर सिटी और आर्सेनल की सूची मे शामिल हो गया जो मौजूदा सत्र मे बोर्नेमाउथ के खिलाफ शिकस्त झेलनी वाली शीर्ष प्रीमियर लीग टीम है। एक अन्य मैच मे एलेक्स इवोबी के दो गोल की मदद से फुलहम ने ब्राइटन को 3-1 से हराया।

खो-खो विश्व कप से पहले भारत करेगा अभ्यास शिविर

नई दिल्ली। भारत खो-खो विश्व कप के शुरुआती सत्र की तैयारी के लिए प्रशिक्षण शिविर का आयोजन करेगा जिसमे 60 पुरुष और इतनी ही महिला खिलाड़ी टूर्नामेंट मे मेजबान देश का प्रतिनिधित्व करने वाली टीमो मे जगह बनाने के लिए चुनौती पेश करेंगे। भारतीय खो-खो महासंघ (केकेएफआई), भारतीय खेल प्राधिकरण (साइ) और खेल मंत्रालय के सहयोग से 10 दिसंबर से 11 जनवरी तक जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम मे शिविर का आयोजन करेगा।

भारत ने हांगकांग में विश्व पिकलबॉल चैंपियनशिप में छह पदक हासिल किए

नई दिल्ली। भारत ने विश्व पिकलबॉल चैंपियनशिप के हांगकांग चरण मे शानदार प्रदर्शन करते हुए एक स्वर्ण, तीन रजत और दो कांस्य पदक सहित कुल छह पदक हासिल किए।हांगकांग मे 29 नवंबर से एक दिसंबर तक हुई इस प्रतियोगिता मे वंशिक कपाड़िया और वृशाली ठाकरे ने 19 प्लस ओपन मिश्रित युगल वर्ग मे स्वर्ण पदक जीता। कुलदीप महाजन ने भी दक्षिण कोरिया की किम युंग ग्वोन के साथ मिलकर इसी वर्ग मे रजत पदक हासिल किया।वंशिक (19 प्लस ओपन पुरुष एकल) तथा करीना आदित्य द्विपयानी और वृशाली ठाकरे (19 प्लस महिला युगल) ने भी दो रजत पदक जीते।

एडीलेड में भारत-ऑस्ट्रेलिया टेस्ट के लिए पहुंचे रिकॉर्ड दर्शक

एडीलेड। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच दूसरे क्रिकेट टेस्ट के पहले दिन एडीलेड ओवल में 36,225 प्रशंसक पहुंचे जो दोनों टीम के बीच पांच दिवसीय मैच के दौरान स्टेडियम में दर्शकों की मौजूदगी का नया रिकॉर्ड है। क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया (सीए) द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों के अनुसार पिछला रिकॉर्ड 2011-12 की श्रृंखला के दौरान 35,081 दर्शकों का था जिसमें मेजबान टीम ने भारत का 4-0 से सूपड़ा साफ किया था।शुक्रवार को 53,500 दर्शकों की क्षमता वाले मैदान पर दर्शकों की भीड़ उमड़ने का अनुमान था क्योंकि पहले और दूसरे टेस्ट के बीच लंबे अंतराल के बाद भारत और ऑस्ट्रेलिया दोबारा आमने-सामने थे।यह 2020 में इसी स्थान पर 36 रन पर आउट होने के बाद ऑस्ट्रेलिया में भारत का गुलाबी गेंद का पहला टेस्ट है।पर्थ के ऑप्टस स्टेडियम में भी पहले टेस्ट के लिए प्रशंसक रिकॉर्ड संख्या में पहुंचे थे जिसे मेहमान टीम ने रिकॉर्ड 295 रन से जीतकर ऑस्ट्रेलिया की धरती पर अपनी सबसे बड़ी जीत दर्ज की। सीए के अनुसार पर्थ स्टेडियम में शुरुआती दो दिन में पर्थ में किसी भी टेस्ट मैच में उपस्थिति का नया रिकॉर्ड बना। इस दौरान पहले दिन 31,302 और दूसरे दिन 32,368 दर्शक स्टेडियम में पहुंचे। सीए की प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के श्रृंखला के पहले टेस्ट के लिए कुल 96,463 दर्शक मैदान पर पहुंचे जो पर्थ में अब तक दर्ज की गई दूसरी सबसे अधिक कुल दर्शकों उपस्थिति और पर्थ स्टेडियम में दर्शकों की सबसे अधिक उपस्थिति थी। पांच मैच की श्रृंखला के बाकी मुकाबलों के आयोजन स्थल ब्रिसबेन, मेलबर्न और सिडनी में भी बड़ी संख्या में दर्शकों के स्टेडियम में आने की उम्मीद है।

ह्यूज और रेडपैथ की याद में ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ियों ने बांह पर काली पट्टी बांधी

एडीलेड। ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी शुक्रवार को पूर्व क्रिकेटरो फिलिप ह्यूज और इयान रेडपैथ की याद मे भारत के खिलाफ दिन-रात्रि के दूसरे टेस्ट के दौरान बांह पर काली पट्टी बांधकर खेले। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व सलामी बल्लेबाज ह्यूज की 2014 मे शेफील्ड शील्ड मैच के दौरान सिर पर गेंद लगने से मौत हो गई थी। रेडपैथ भी सलामी बल्लेबाज थे। उनका इस महीने की शुरुआत मे निधन हो गया था। क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ने दिन-रात्रि मैच के दौरान ह्यूज की 10वी पुण्यतिथि पर उन्हें श्रद्धांजलि देने का फैसला किया था।खेल शुरू होने से पहले एडीलेड ओवल में ह्यूज के जीवन पर एक वृत्तचित्र भी दिखाया गया। पिछले हफ्ते शेफील्ड शील्ड के मुकाबलो के दौरान भी खिलाड़ी न्यू साउथ वेल्स के खिलाड़ी ह्यूज को श्रद्धाजलि देने के लिए बांह पर काली पट्टी बांधकर खेले थे।ह्यूज ने फरवरी 2009 में जोहानिसबर्ग मे दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पदार्पण करने के बाद ऑस्ट्रेलिया के लिए 26 टेस्ट खेले। उन्होंने 2013 से 2014 के बीच 25 एकदिवसीय मैच और एकमात्र टी20 मैच भी खेला। रेडपैथ का एक दिसंबर को 83 साल की उम्र मे बीमारी के कारण निधन हो गया था। उन्होंने 1964 से 1976 के बीच ऑस्ट्रेलिया के लिए 66 टेस्ट और पांच वनडे मैच खेले।

भारत की पहली क्रिकेट पेंटिंग की होगी नीलामी

नई दिल्ली। भारत मे क्रिकेट मैच से जुड़ी दुर्लभ तैलीय पेंटिंग नीलामी घर एस्टागुरु के आगामी नीलामी का हिस्सा बनने वाली कलाकृतियों में से एक होगी। ब्रिटिश चित्रकार थॉमस डेनियल द्वारा कैनवास पर उकेरी गई इस चित्रकारी को भारत में क्रिकेट से जुड़ी पहली पेंटिंग माना जाता है। एस्टागुरु नीलामी घर ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। समझा जाता है कि डेनियल ने 1792-93 के बीच मे अपनी मद्रास (चेन्नई) यात्रा के दौरान इस चित्रकारी पर काम किया था। भारत में क्रिकेट मैच शीर्षक वाली पेंटिंग आधुनिक भारत के दिग्गज कलाकारो के चित्रकारी के साथ 14-16 दिसंबर को एस्टागुरु की ऐतिहासिक मास्टरपीस नीलामी का हिस्सा होगी। एस्टागुरु नीलामी घर की वरिष्ठ उपाध्यक्ष स्नेहा गौतम ने कहा, थॉमस डेनियल की यह पेंटिंग कला का एक ऐतिहासिक नमूना है जो 18वीं शताब्दी के दौरान भारत के विकसित होते सांस्कृतिक ताने-बाने को दर्शाने के साथ क्रिकेट के प्रति देश में बढ़ती लोकप्रियता का भी जश्न मनाती है। यह खेल आगे चल कर इस देश की पहचान का एक अभिन्न अंग बन गया है।

विश्व शतरंजः लगातार ड्रॉ के बाद गुकेश व लिरेन की नजर बढ़त बनाने पर

भाषा। सिंगापुर

लगातार छह ड्रॉ और कुछ मौके गंवाने के बाद तेजतर्रार चैलेंजर डी गुकेश और गत चैंपियन डिंग लिरेन शनिवार को यहां विश्व शतरंज चैंपियनशिप की 10वीं बाजी में जीत के साथ बढ़त हासिल करने के लिए बेताब होंगे। गुकेश ने जीत के कई मौके गंवाए लेकिन फायदे की स्थिति को जीत में नहीं बदल सके। इस 25 लाख डॉलर इनामी राशि वाली चैंपियनशिप में अब सिर्फ पांच और क्लासिकल बाजियां खेली जानी बाकी हैं और ऐसे में 18 वर्षीय भारतीय खिलाड़ी शुक्रवार को एक दिन के आराम के बाद गतिरोध को तोड़कर महत्वपूर्ण बढ़त हासिल करना चाहेगा। बृहस्पतिवार को लगातार छठी बाजी और मुकाबले की कुल सातवीं बाजी थी जिसमें दोनों खिलाड़ियों ने अंक बांटे। इस ड्रॉ के बाद दोनों खिलाड़ियों के समान 4.5 अंक हैं जो चैंपियनशिप जीतने के लिए जरूरी 7.5 अंक से तीन अंक कम हैं। चीन के 32 वर्षीय लिरेन ने पहली बाजी जीती थी जबकि गुकेश तीसरी बाजी में विजई रहे थे। बाकी सभी बाजियां ड्रॉ रही। अगर इतिहास की बात करें तो अगर आठ बाजियों के बाद स्कोर 4-4 से बराबर हो तो गत चैंपियन मैच जीत जाता है। चेन्नई में जन्में भारतीय ग्रैंडमास्टर को पता है कि उन्हें अपने चीन के प्रतिद्वंद्वी के खिलाफ बेजोड़ खेल दिखाना होगा जिन्हें मुश्किल समय में चतुराई भरी चाल चलने के लिए पहचाना जाता है। विश्व के नंबर एक और पांच बार के विश्व चैंपियन मैग्नस कार्लसन ने बिना किसी संकोच के कहा कि गुकेश के पास अधिक समय नहीं है। कार्लसन ने कहा, मुझे लगता है कि हम आखिरकार उस लम्हे पर पहुंच गए हैं जब गुकेश अब इस मुकाबले में प्रबल दावेदार नहीं है, अब दोनों के पास 50 प्रतिशत मौका है। यदि 14 दौर के बाद भी स्कोर बराबर रहता है तो विजेता का निर्धारण करने के लिए फास्टर टाइम कंट्रोल का सहारा लिया जाएगा और कहा जाता है कि छोटे प्रारूप की बाजियों में लिरेन बेहतर स्थिति में रहते हैं।हाल ही में शतरंज ओलंपियाड में भारत की पहली खिताबी जीत के सूत्रधारों में से एक गुकेश ने बृहस्पतिवार को नौवीं बाजी ड्रॉ होने के बाद कहा था कि वह महत्वपूर्ण क्षणों में अपने प्रदर्शन में सुधार करना चाहेंगे।

अनमोल, सतीश गुवाहाटी मास्टर्स सुपर 100 के सेमीफाइनल में पहुंचे

गुवाहाटी। भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी अनमोल खरब और सतीश कुमार करुणाकरण शुक्रवार को यहां क्रमशः महिला और पुरुष एकल स्पर्धा में जीत के साथ गुवाहाटी मास्टर्स सुपर 100 बैडमिंटन टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में पहुंच गए।अनमोल को क्वार्टर फाइनल में गत चैंपियन थाईलैंड की लालिनरात चाइवान से कड़ी टक्कर मिली। एशियाई टीम चैम्पियनशिप 2024 में स्वर्ण पदक जीतने वाली भारतीय टीम की सदस्य रही अनमोल ने एक घंटे 14 मिनट तक चले मुकाबले में शानदार जज्बा दिखाते हुए 21-13, 22-24, 22-20 से जीत दर्ज की। सत्रह साल की इस खिलाड़ी ने दूसरे गेम में 11-16 और 16-20 से पिछड़ने के बाद शानदार वापसी करते हुए दो मैच प्वाइंट हासिल किए लेकिन उसे भुना नहीं सकी। उन्हें तीसरे गेम में भी लगभग ऐसी ही स्थिति का सामना करना पड़ा लेकिन उन्होंने इस बार मौके को हाथ से जाने नहीं दिया। अंतिम चार में उनका सामना मानसी सिंह से होगा। मानसी ने थाईलैंड की यतावीमिन कातेक्लिएंग 22-20, 21-18 से हराया।पुरुष एकल में तीसरी वरीयता प्राप्त सतीश ने थाईलैंड के सरन जामसिरी को 21-19, 21-13 से हराया। वह अब छठी वरीयता प्राप्त चीन के वांग झेंग जिंग से भिड़ेंगे।

नागल ने ऑस्ट्रेलियाई ओपन में सीधे प्रवेश हासिल किया

मेलबर्न। भारतीय टेनिस स्टार सुमित नागल अगले साल के ऑस्ट्रेलियाई ओपन के मुख्य ड्रॉ में सीधे प्रवेश पाने के बाद ग्रैंड स्लैम में अपनी पांचवीं उपस्थिति के लिए तैयार हैं। विश्व रैंकिंग में 98वीं स्थान पर काबिज नागल शुक्रवार को टेनिस ऑस्ट्रेलिया द्वारा जारी प्रवेश सूची में शामिल हैं। उन्होंने इस प्रतियोगिता के पिछले सत्र में क्वालीफाइंग चरण से मुख्य दौर में जगह बनाने के बाद शुरुआती मुकाबले में कजाकिस्तान के 31वीं वरीयता प्राप्त अलेक्जेंडर बुब्लिक को सीधे सेटों में 6-4, 6-2, 7-6 (5) से शिकस्त दी थी। वह तब 34 साल के बाद ग्रैंड स्लैम के मुख्य ड्रॉ में किसी वरीयता प्राप्त खिलाड़ी को हराने वाले पहले भारतीय खिलाड़ी बने थे। नागल की यात्रा अगले दौर में चीन के वाइल्ड-कार्ड शांग युनचेंग से हार के साथ समाप्त हो गई थी।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया व टाइम्स ऑफ इंडिया के बीच खेला जाएगा पहला मैच

एसबीआई कप मीडिया प्रीमियर लीग 2024.25 शनिवार से

लखनऊ। पिछले संस्करण की विजेता इलेक्ट्रॉनिक मीडिया व टाइम्स ऑफइंडिया के बीच मैच से एसबीआई कप मीडिया प्रीमियर लीग 2024-25 का 7 दिसंबर को गुरू गोविंद सिंह स्पोर्ट्स कॉलेज के क्रिकेट मैदान पर आगाज़ होगा। लखनऊ स्पोर्ट्स जर्नलिस्ट एसोसिएशन-एलएसजेए के तत्वावधान में आयोजित लीग के बारे में आयोजन सचिव दिव्य नौटियाल ने बताया कि लीग का उद्घाटन उत्तर प्रदेश सरकार के सचिव खेल सुहास एलवाई के करकममलों द्वारा सुबह 9: 15 बजे किया जाएगा। लीग का पहला मैच सुबह 9.30 बजे शुरू होगा। वहीं दोपहर 12: 30 बजे से लीग का दूसरा मैच हिंदुस्तान टाइम्स व मान्यता प्राप्त पत्रकार एकादश के बीच इसी मैदान पर दोपहर 12:30 बजे से खेला जाएगा। एलएसजेए सचिव एसएम अरशद ने बताया कि सभी मैच रंगीन ड्रेस और सफेद गेंद से खेले जाएंगे। लीग कम नाकआउट आधार पर आयोजित इस लीग में स्पोर्ट्स कॉलेज मैदान पर 14 दिसंबर तक मैच खेल जाएंगे। इसके बाद फाइनल मुकाबला 15 दिसंबर को केडी सिंह बाबू स्टेडियम में शाम 4 बजे से दूधिया रोशनी में खेला जाएगा। इस लीग में आठ टीमें भाग ले रही है। पूल ए में इलेक्ट्रानिक मीडिया इलेवनए हिंदुस्तान टाइम्सए टाइम्स ऑफइंडियाए मान्यता प्राप्त पत्रकार एकादश और पूल बी में एलएसजेए इलेवनए अमर उजालाए दैनिक जागरण व डीडी.एआईआर इलेवन को जगह दी गई है। दोनों पूल से शीर्ष दो टीमें सेमीफाइनल के लिए क्वालीफाई करेंगी। सेमीफाइनल मुकाबले 13 व 14 दिसंबर को होंगे।

यूपी स्टेट सब जूनियर कराटे चैंपियनशिप 7 दिसंबर स

24 जिलों के 400 खिलाड़ी 78 स्वर्ण पदकों के लिए पेश करेंगे चुनौती

लखनऊ। कराटे एसोसिएशन ऑफ यूपी के तत्वावधान में कराटे एसोसिएशन ऑफ लखनऊ द्वारा यूपी स्टेट सब जूनियर कराटे चैंपियनशिप-2024 का आयोजन 7 से 8 दिसंबर 2024 तक लखनऊ के चौक स्टेडियम में किया जाएगा। इस चैंपियनशिप में मेजबान लखनऊ सहित 24 जिलों के 400 खिलाड़ी दांव पर लगे 78 स्वर्ण पदकों के लिए अपने.अपने वर्गो में चुनौती पेश करेंगे। चौक स्टेडियम के लालजी टंडन बहुउद्देश्यीय हाल में होने वाली चैंपियनशिप की पूर्व संध्या पर शुक्रवार को विभिन्न टीमों में शामिल प्रतिभागी खिलाड़ियों का वजन किया गया। दो दिवसीय इस चैंपियनशिप के बारे में कराटे एसोसिएशन ऑफउत्तर प्रदेश के अध्यक्ष टीपी हवेलिया व महासचिव जसपाल सिंह ने जानकारी देते हुए बताया कि चैंपियनशिप में 78 स्वर्णए 78 रजत व 156 कांस्य पदकों के लिए प्रतिस्पर्धा होगी। इसमें बालक व बालिकाओं में कुमिते के 62 भार वर्ग और काता की 16 श्रेणियों में कुल 78 वर्गो में प्रतिस्पर्धा होगी। चैंपियनशिप वर्ल्ड कराटे फेडरेशन से सर्टिफाइड जज अनूप डेडे की निगरानी में हागी। इसमें मुकाबलों की शुरुआत 7 दिसंबर को सुबह 9 बजे से हो जाएगी। चैंपियनशिप का औपचारिक उद्घाटन 7 दिसंबर 2024 को दोपहर 2रू30 बजे होगा। उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि इंजी योगेश कुमार निदेशक कामर्शियल, मध्यांचल विद्युत वितरण निगम लिमिटेड एवं विशिष्ट अतिथि डा.सैयद रफत जुबैर रिजवी,;कोषाध्यक्ष, उत्तर प्रदेश ओलंपिक एसोसिएशन व डाण्कीर्ति विक्रम सिंह इग्नू लखनऊ सहायक क्षेत्रीय निदेशक इंदिरा गांधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटीए लखनऊद्ध होंगे।

क्विक न्यूज

डुमिनी ने अफ्रीका के बल्लेबाजी कोच पद से इस्तीफा दिया

जोहानिसबर्ग। जेपी डुमिनी ने निजी कारणो का हवाला देते हुए दक्षिण अफ्रीका की सीमित ओवरो की टीम के बल्लेबाजी कोच पद से इस्तीफा दे दिया है। क्रिकेट दक्षिण अफ्रीका (सीएसए) ने शुक्रवार को इसकी घोषणा की।डुमिनी ने पिछले साल मार्च में दक्षिण अफ्रीका के बल्लेबाजी कोच का पद संभाला था। सीएसए ने कहा कि उन्होंने आपसी सहमति के बाद तुरंत प्रभाव से अपना पद छोड़ दिया है।सीएसए ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, दक्षिण अफ्रीकी क्रिकेट के दिग्गज जेपी डुमिनी मार्च 2023 मे अपनी नियुक्ति के बाद से सीमित ओवरो की टीम के कोचिंग स्टाफ के प्रमुख सदस्य रहे है। उनके स्थान पर सीमित ओवरों की टीम के लिए जल्द ही बल्लेबाजी कोच की नियुक्ति की जाएगी। डुमिनी ने 2004 से 2019 के बीच 15 साल के करियर में दक्षिण अफ्रीका के लिए 46 टेस्ट, 199 वनडे और 81 टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच खेले।

झारखंड ने मध्य प्रदेश को हराकर सब-जूनियर महिला हॉकी का खिताब जीता

सिकंदराबाद। हेमरोम लियोनी के गोल की मदद से हॉकी झारखंड ने शुक्रवार को यहां फाइनल मे हॉकी मध्य प्रदेश को 1-0 से हराकर 14वी हॉकी इंडिया सब-जूनियर महिला राष्ट्रीय चैम्पियनशिप का खिताब जीता। मैच का एकमात्र गोल 15वें मिनट में हुआ जब जमुना कुमारी ने बाएं छोर से ड्रिबल करते हुए गेंद लियोनी को दी, जो प्रतियोगिता मे अपना सातवां गोल करने में सफल रही। झारखंड ने इस तरह से अपना अजेय अभियान जारी रखते हुए चैंपियनशिप जीती। तीसरे-चौथे स्थान के लिए खेले गए मैच मे ओडिशा ने मिजोरम को 4-3 से हराया। ओडिशा के लिए प्रियंका मिंज (9वे, 12वें, 12वें) ने तीन और अंजना खाखा (चौथे) ने एक गोल किया। मिजोरम की तरफ से वानलालरिनहलुई (36वें, 52वें मिनट) ने दो जबकि मंगलावमसांग (28वें मिनट) ने एक गोल किया। तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी ने चैंपियन के लिए तीन लाख रुपए, उपविजेता के लिए दो लाख रुपए और कांस्य पदक विजेता के लिए एक लाख रुपए के नकद पुरस्कार की घोषणा की।

आईडब्ल्यूएफ अगले साल जून से भार वर्ग की संख्या कम करने की तैयारी में

मनामा (बहरीन)। अंतरराष्ट्रीय भारोत्तोलन महासंघ (आईडब्ल्यूएफ) ने अपने इनोवेशन कमिशन के प्रस्ताव के बाद अगले साल जून से पुरुष और महिला दोनो श्रेणियो मे भार वर्ग की संख्या 10 से घटाकर आठ करने का फैसला किया है।पुरुष वर्ग मे 55 किग्रा वर्ग को खत्म कर दिया जाएगा और प्रतियोगिताएं 60 किग्रा से शुरू होंगी। साथ ही 70, 80 और 90 किग्रा के दायरे मे आने वाले वर्गो मे भी बदलाव किया जाएगा। पुरुष वर्ग मे प्रस्तावित नए भार वर्ग 60 किग्रा, 65 किग्रा, 71 किग्रा, 79 किग्रा, 88 किग्रा, 98 किग्रा, 110 किग्रा और 110 किग्रा से अधिक है जबकि पहले 55 किग्रा, 61 किग्रा, 67 किग्रा, 73 किग्रा, 81 किग्रा, 89 किग्रा, 96 किग्रा, 102 किग्रा, 109 किग्रा और 109 किग्रा से अधिक भार वर्ग थे। महिला वर्ग मे 45 किग्रा वर्ग को हटा दिया जाएगा और 48 किग्रा का नया वर्ग शुरू किया जाएगा। इसके अलावा 53 किग्रा, 58 किग्रा, 63 किग्रा, 69 किग्रा, 77 किग्रा, 86 किग्रा और 86 किग्रा से अधिक वर्ग होंगे। इसके अलावा 49 किग्रा वर्ग को भी खत्म कर दिया गया है जिसमे भारत की मीराबाई चानू ने 2021 तोक्यो ओलंपिक मे रजत पदक जीता था।

करण सिंह जैसे प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को निजी प्रायोजको और महासंघ से सहयोग की जरूरतः बोपन्ना

मुंबई। भारत के दिग्गज टेनिस खिलाड़ी रोहन बोपन्ना ने शुक्रवार को निजी प्रायोजको और राष्ट्रीय महासंघ से करण सिंह जैसे प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को सहयोग प्रदान करने का आग्रह किया। बोपन्ना अभी टेनिस प्रीमियर लीग (टीपीएल) मे राजस्थान रेंजर्स की तरफ से खेल रहे है जो 154 अंक लेकर अंक तालिका मे तीसरे स्थान पर है और फाइनल मे जगह बनाने की दौड़ मे बना हुआ है।टेनिस प्रीमियर लीग की विज्ञप्ति के अनुसार बोपन्ना ने कहा, मै करण को खेलते हुए देख रहा हूं और मुझे लगता है कि वह बेहद प्रतिभाशाली खिलाड़ी है। हमें इस तरह के प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को आगे बढ़ाने के लिए न सिर्फ निजी प्रायोजको बल्कि राष्ट्रीय महासंघ से भी सहयोग की जरूरत है। यह देखकर बहुत अच्छा लग रहा है कि युवा खिलाड़ियों को बड़े मंच पर खेलने का मौका मिल रहा है।

एशियाई तलवारबाजी परिसंघ के महासचिव बने राजीव

नई दिल्ली। भारतीय ओलंपिक संघ (आईओए) के पूर्व शीर्ष अधिकारी राजीव मेहता को एशियाई तलवारबाजी परिसंघ (एफसीए) का महासचिव चुना गया है। वह इस पद पर काबिज होने वाले देश के पहले प्रशासक है। मेहता को एक दिसंबर को उज्बेकिस्तान के ताशकंद मे संस्था की आम सभा की बैठक के दौरान एफसीए के महासचिव के रूप में चुना गया था।मेहता ने 2014 से 2022 तक आठ वर्षो तक आईओए के महासचिव के रूप मे कार्य किया। वह वर्तमान मे भारतीय तलवारबाजी संघ के भी महासचिव है। मेहता का 2024-28 की अवधि के लिए एफसीए महासचिव के रूप मे चुनाव अंतरराष्ट्रीय संघो मे भारतीय खेल प्रशासको के बढ़ते प्रभाव को उजागर करता है।एफसीए मे महाद्वीप के 46 सदस्य देशो का प्रतिनिधित्व है।

कोपा डेल रे में बड़े क्लब जीते लेकिन चौथे टीयर के क्लब मिनेरा ने एल्वेस को बाहर किया

मैड्रिड। स्पेन के शीर्ष टीयर के क्लब एटलेटिको मैड्रिड, गेटाफे और ओसासुना ने निचली लीग की विरोधी टीम के खिलाफ कड़े मुकाबले मे जीत दर्ज करके कोपा डेल रे फुटबॉल टूर्नामेंट के तीसरे दौर मे जगह बनाई लेकिन डिपोर्टिवो एल्वेस की टीम चौथे टीयर के क्लब डिपोर्टिवा मिनेरा के खिलाफ शिकस्त के साथ प्रतियोगिता से बाहर हो गई।एटलेटिको की टीम 30वें मिनट मे पिछड़ गई जब इवारो मेरेनसियो ने केसेरेनो को बढ़त दिलाई लेकिन दूसरे हाफ मे बेहतर प्रदर्शन करते हुए टीम 3-1 से जीत दर्ज करने मे सफल रही। ओसासुना ने भी तीसरे टीयर के क्लब सेउटा के खिलाफ 0-2 से पिछड़ने के बाद 3-2 से जीत दर्ज की।गेटाफे और चौथे टीयर के क्लब ओरिहुएला का मुकाबला निर्धारित समय मे गोल रहित बराबर रहा। गेटाफे ने पेनल्टी शूटआउट में 3-0 की जीत के साथ अगले दौर मे जगह बनाई जब उसके गोलकीपर जिरी लेटासेक ने मेजबान टीम के तीनो प्रयासो को रोक दिया।

मनप्रीत सिंह के साथ हॉकी इंडिया लीग में खेलने को लेकर उत्साहित हैं आमिर अली

नई दिल्ली। अपने आदर्श मनप्रीत सिंह को खेलते हुए देखने के लिए 10 किलोमीटर से ज्यादा पैदल चलने वाले आमिर अली भारतीय टीम के पूर्व कप्तान के साथ हॉकी इंडिया लीग (एचआईएल) मे एकसाथ खेलने को लेकर रोमांचित है। भारतीय जूनियर टीम के कप्तान आमिर तोक्यो ओलंपिक मे कांस्य पदक जीतने वाली टीम के कप्तान के साथ एचआईएल मे टीम गोनासिका का प्रतिनिधित्व करेंगे।

सीएमवाईके प्रिंटेक लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक शोबोरी गाँगुली द्वारा 100के, मिलाप भवन, 8/ए, बहादुर शाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली-110002, दूरभाष: 011-40110455 से प्रकाशित तथा जागरण प्रकाशन लिमिटेड, डी-210, 211 सेक्टर 63 नोएडा फोन नंबर 01204615800 एक्सटेंशन 142, से मुद्रित। प्रधान संपादक : शोबोरी गाँगुली। पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार के किसी भी विज्ञापन पर प्रतिक्रिया करने से पहले पूरी तरह उसके बारे में दिए गए दावों, शर्तों और तथ्यों की जांच कर लें। पायनियर ग्रुप के मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक या उसका कोई भी कर्मचारी विज्ञापनदाता द्वारा उनके किसी उत्पाद तथा सेवा हेतु किए गए किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन या उत्तरदायित्व नहीं लेता है। ऐसे विज्ञापनों के बाद किसी आर्थिक क्षति के लिए वे जिम्मेदार भी नहीं हैं। मुख्य व्यवसायिक कार्यालय- 201-205 द्वितीय मंज़िल, प्रताप भवन, 5,बहादुर शाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली-110002, दूरभाष:011-693425001